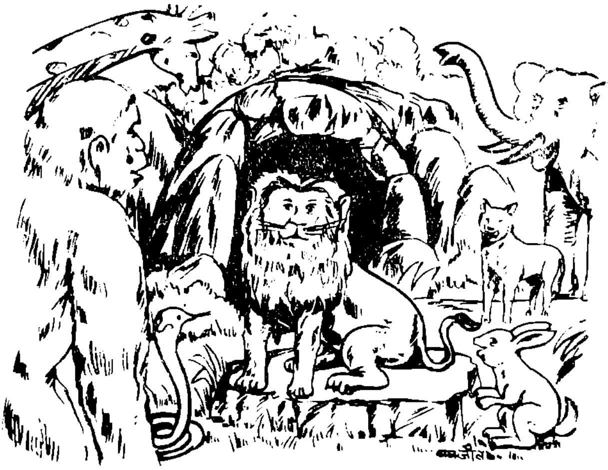
पंचतंत्र

आचार्य विष्णु शर्मा



विश्व के महान् ग्रन्थ 'नीति शास्त्र' का हिन्दी में
पहली बार सम्पूर्ण एवं सरल रूपान्तर

पंच तंत्र

(आचार्य विष्णु शर्मा की संस्कृत रचना)

नरेन्द्र शर्मा

प्रकाशक

नवयुग प्रकाशन

१६ यू० ए०, बैंग्लो रोड, दिल्ली-११०००७

प्रकाशक :
नवयुग प्रकाशन
16 यू० ए० बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

दूरभाष : २२४२४१
२५१६७१५

रूपान्तरकार : नरेन्द्र शर्मा

संस्करण : १९८४

: पच्चीस रुपये

रिषी राज प्रिंटर्स, ३८९७, गली नं० १३
शांति मोहल्ला, गांधी नगर, दिल्ली-३१

पंच तंत्र क्या है ?

आज जब भी कहीं पंच तंत्र की चर्चा होती है तो हमें यह एहसास होता है कि हम एक बहुत बड़े नीति शास्त्र का जिक्र कर रहे हैं। वास्तव में पंच तंत्र का असली नाम 'नीति शास्त्र' ही है। यह मूल रचना संस्कृति भाषा में लिखी गई।

भारतवासियों को यह सुनकर अवश्य ही आश्चर्य होगा कि हमारी यह पुस्तक विदेशी भाषाओं में अनुवाद होने वाली पुस्तकों में बाई-बल के पश्चात् दूसरे नम्बर पर आती है।

इस बात से ही आप यह अन्दाजा लगा सकते हैं कि यह कितनी महान् और विशेष गुणकारी पुस्तक है, जिसे विदेश की बीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया। इसके साथ ही बड़े-बड़े विद्वानों, राजनीतिज्ञों द्वारा इसे केवल पसन्द ही नहीं किया गया बल्कि इसका पूरा-पूरा लाभ उठाया गया।

प्रस्तुत रूपान्तर प्रथम बार हिन्दी भाषा में इतना सरल और विस्तारपूर्वक किया गया है कि इसे हर हिन्दी-प्रेमी बड़े आराम से पढ़-कर समझ सकता है। इस पुस्तक का अधिक से अधिक लाभ हर आदमी तक पहुंच सके। यही सोचकर इस कार्य को किया गया है।

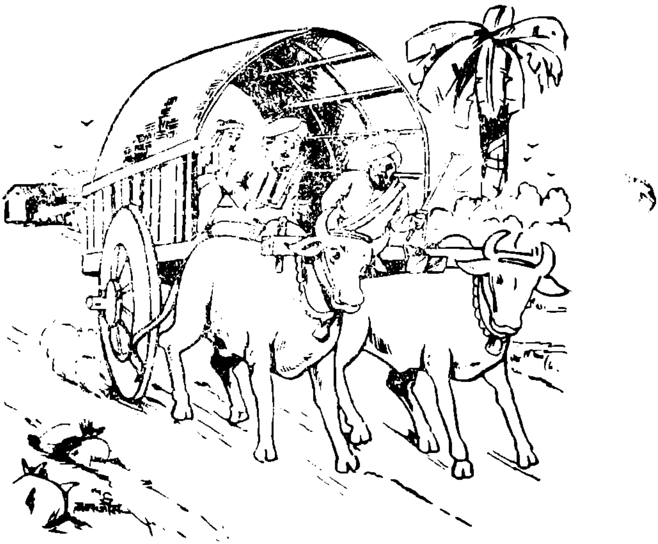
अनुवाद और रूपान्तर दोनों में बहुत अन्तर होता है। मैं अपने पाठकों को इतना बता दूं कि मौलिक रचना से भी कठिन कार्य रूपां-तर है। इसमें असली पुस्तक की नींव पर ही सारा काम करना पड़ता है। इसलिए इस पुस्तक को पढ़ते समय मेरी इन मजबूरियों को अवश्य सामने रखें।

बस इन शब्दों के साथ ही मैं आपसे विदा लूंगा।

अपने पाठकों का

नरेन्द्र शर्मा

विषय-सूची



धोखेबाज मित्र

दक्षिण भारत में एक छोटा-सा नगर था। जिसमें एक व्यापारी वर्धमान रहता था। वर्धमान के पिता वैसे तो उसके लिए काफी धन और अच्छा कारोबार छोड़ गये थे, किन्तु फिर भी उसके दिल में एक लालसा थी कि वह किसी-न-किसी ढंग से अमीर आदमी बन जाए, इतना अमीर कि चारों ओर उसके ही नाम के चर्चे हों। बस यही सोच हर समय उसके दिमाग में घूमती रहती थी।

"धनवान बनूं, अमीर बनूं।"

"धनवान बनने के लिए कौन-कौन से रास्ते हैं।"

सरकारी नौकरी, खेती, विद्या, ब्याज, व्यापार और भिक्षा। यही छः रास्ते थे उसके सामने। अमीर बनने के लिए उसे छः

रास्तों में से एकको चुनना था, उसकी मंजिल केवल एक ही थी।

"अमीर बनना।"

वह रातों को चारपाई पर लेटा-लेटा यही सोचा करता था कि इन छः रास्तों में कौन-सा रास्ता चुन लूं।

सरकारी नौकरी में तो अफसरों को दिन रात [illegible] पड़ेगा। फिर उनकी डांट-डप्ट भी सुननी पड़ेगी। फिर भी क्या भरोसा था कि वह कब तक अमीर बनेगा।

खेती करना और विद्या प्राप्त करना, उसके बस की बात नहीं थी।

ब्याज पर धन देकर सूदखोरी से धन कमाने में [illegible] आदमी घर पर पड़ा-पड़ा सुस्त हो जाता है। उसमें [illegible] का भी डर रहता है।

बस फिर एक ही रास्ता रह जाता है, "व्यापार।"

"हां…हां…व्यापार।"

"यही निर्णय कर लिया था रूपा ने।"

उसने अपने विशेष साथियों को इकट्ठा करके अपनी योजना को विस्तार से बताया और इन सबने यह फैसला कर लिया कि इस छोटे कस्बे में हम किसानों से सस्ता अनाज और [illegible] आदि खरीदकर बड़े शहर में ले जाकर महंगे भाव से बेचेंगे। इस प्रकार हम अमीर बन जाएंगे।

क्योंकि रूपा सेठ पहले से ही गांव में धनी माना हुआ था। उसकी बात सुनते ही सभी साथी खुश हो गये और [illegible] जाने को तैयार भी।

बस फिर क्या था, देखते-ही-देखते सारी तैयारियां पूरी हो गईं। एक मजबूत-सी बैलगाड़ी खरीदी गई। जिसमें गांव वालों से सस्ते दामों पर माल खरीदकर उसमें भर लिया गया। उस गाड़ी को खींचने के लिए दो बढ़िया और शक्तिशाली बैल खरीदे गये।

इस प्रकार से रूपा सेठ अपने साथियों के साथ उस माल से

भरी बैलगाड़ी को लेकर शहर की ओर चल पड़ा।

शहर की दूरी गांव से काफी अधिक थी। फिर बैलगाड़ी पर बोझा भी कुछ अधिक लाद दिया गया था। जिसका फल यह निकला कि घने जंगल में जाकर बैल मूर्छित होकर गिर पड़ा। उसकी एक टांग भी टूट गई। इस प्रकार रूपा और उसके साथी काफी चिंतित हो गये थे। वे करते भी क्या—? चिंता के मारे उनका बुरा हाल हो रहा था। एक ओर तो एक घने जंगल में जंगली जानवरों का डर था, दूसरी ओर चोरों का।

बहुत देर सोचने के पश्चात् रूपा ने अपने दो साथियों को बल की देखभाल के लिए छोड़कर बाकी साथियों को अपने साथ ले, शहर की ओर चल पड़ा। उसने सोचा कि वह मनुष्य बुद्धिमान है जो थोड़े के लिए अधिक नुकसान न होने दें।

मगर रूपा के साथी शायद उससे कहीं अधिक होशियार थे। उन्होंने जैसे ही अपने सेठ को जाते देखा, तो दूसरे दिन ही स्वयं भी वहां से चल पड़े। रूपा सेठ के पास पहुंचकर उन्होंने झूठ बोलते हुए कह दिया कि वह बैल तो उसी रात को मर गया था। हम उसका अंतिम संस्कार उसी जंगल में करके आ रहे हैं।

दूसरी ओर जख्मी बैल जंगल की हरी-हरी घास और ताजा हवा खा-खाकर दिन-प्रतिदिन ठीक होता गया। उस जंगल में दिन रात खाता-पीता मौज मारता, रात को नदी किनारे जाकर सो जाता। इस प्रकार वह कुछ ही दिनों में इतना मोटा-ताजा और सांड़ जैसा हो गया। उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे यह बैल वास्तव में इस जंगल का राजा हो।

कुछ ही दिनों में पिंगलक नामक सिंह जंगली जानवरों के साथ अपनी प्यास बुझाने के लिए उस नदी के पास जाने लगा तो रूपा के इस सांड़ बैल ने जोर से दहाड़ने की आवाज निकाली जिससे सारा जंगल गूंज उठा…

पिंगलक सिंह ने इतनी भयंकर आवाज कभी नहीं सुनी थी।

यह घबराया हुआ नदी के पास से बिना पानी पिये भाग खड़ा हुआ। उसके पीछे-पीछे दूसरे जंगली जानवर भी भाग लिए। वे सब-के-सब जंगल में एक स्थान पर छुप कर बैठ गये।

उसी जंगल में उस सिंह के मंत्री के दो पुत्र करटक व दमनक नाम के रहते थे। जिनको उस सिंह ने अपने पद से हटा दिया था लेकिन फिर भी वे अपने राजा का पूरा आदर करते थे। जैसे ही उन्होंने सिंह को नदी किनारे से प्यासा लौटते देखा तो।

दमनक बोला भाई करटक, हमारा स्वामी तो नदी किनारे से प्यासा लौट आया। अब तो बेचारा बड़ा शर्मिदा हुआ बैठा है। जंगल का राजा होकर वह पानी भी नहीं पी सका।

करटक बोला भाई दमनक, हमें भला इन बातों से क्या लेना है। बड़े लोग यह कह गए हैं कि जो भी दूसरों के काम में बिना मतलब अपनी टांग अड़ाता है, वह बेमौत मरता है। जैसे एक कील उखाड़ने वाले बन्दर की कहानी तुमने सुन रखी होगी।

नहीं भैया मैंने तो उसकी कहानी नहीं सुनी।

नहीं सुनी तो आज सुन लो। मैं तुम्हें उस बन्दर की कहानी सुनाता हूं जो दूसरों के काम में बिना मतलब अपनी टांग फंसाता था और···। अब सुनो—



न राजा बिना सेवक
न सेवक बिना राजा

एक नगर के समीप किसी व्यापारी का नया मकान बन रहा था। वहां पर लकड़ी का काम करने वाले कारीगरों ने दो बड़े-बड़े तख्ते बनाए थे। उन दो तख्तों के बीच में लकड़ी को पकड़ कर काटा जाता था। वहां से बंदरों का एक काफला गुजर रहा था। उनमें से एक बन्दर जो बहुत शरारती था, उन दो तख्तों के बीच में खड़ा हो मजे से झूलने लगा। उसे झूलने में बड़ा आनन्द आ रहा था। एक बार उसने पूरे जोर से छलांग लगाई।

बस !

दोनों लकड़ी के तख्ते पूरी ताकत से उठे और बन्दर जो उन दोनों के बीच में ऐसे जकड़े गए कि निकलने का कोई सवाल ही

नहीं उठता था। बस उसके साथियों ने उसकी अंतिम चीख ही सुनी…।

इस प्रकार वह बन्दर अपनी ही मूर्खता से मर गया। जो दूसरों के काम में अपनी टांग अड़ाता है, भाई उसका यही हाल होता है। इसलिए कहता हूं कि इस सिंह को भूल जाओ और अपनी चिंता करो। हम इस झंझट में क्यों फंसे ?

दमनक उसकी बात से चिढ़कर बोला।

तो क्या आप भोजन भट्टहां हैं, यह ठीक नहीं, मित्रों का भला और शत्रुओं को हानि करने के लिए ही बुद्धिमान जन राजा का सहारा लेते हैं। पेट कौन नहीं भर लेता––? जिनके जीते रहने से अन्य बहुत से लोग भी जीवित रह सकें, उसी को जिंदा रहना चाहिए। अन्यथा क्या पक्षी भी चोंच से अपना पेट नहीं भर लेता? जो प्राणी न अपने पर, न पराए पर, न बधुवर्ग पर, न दुःखी पर दया करता है, उसका इस दुनिया में जीना बेकार है।

माता की जवानी हरणकरने वाले उस पुत्र के उत्पन्न होने का क्या लाभ जो सदैव चोटी पर लहराने वाले झंडे के समान वंश में अग्रणी नहीं होता, नहीं तट पर उपजे उस घास झुंड का भी जन्म सार्थक है, जिसको पकड़कर डूबता प्राणी किनारे आ लगता है. नीचे ऊपर संचरण करते हुए मनुष्य के संताप को दूर करने वाले व्यादलों में कुछ ही भले पुरुष होते हैं।

मनुष्य चाहे कितना ही ताकतवर हो, पर यदि उसकी ताकत प्रकट नहीं है तो लोग उसका अपमान करते हैं, क्योंकि लकड़ी के अन्दर व्याप्त आग को सब लोग लांघ जाते हैं, पर जब यह आग बाहर निकली हुई होती है उसके पास जाने की हिम्मत कोई नहीं करता।

करटक ने अपने भाई की बातों को बड़े धैर्य से सुना और फिर बोला, यह सब ठीक है किन्तु हम लोग सिंह की नगरी में अप्रधान गौण हैं, फिर हमें इस बात से क्या प्रयोजन—? देखो

कहा गया है—

राजा के सामने जो अप्रधान बिगड़े दिमाग वाला बिना पूछे बोलता है, उसकी न केवल अवहेलना ही होती है, साथ ही वह अपमानित भी होता है, इसलिए अपनी बात वहां कहनी चाहिए जहां कुछ फल हो क्योंकि ऐसी जगह बात कहने का ऐसा प्रभाव होता है जैसे सफेद कपड़े पर रंग का।

दमनक ने करटक की बात सुनते ही कहा, नहीं भाई ऐसा न कहो क्योंकि अप्रधान भी यदि राजा को सेवा करे तो प्रधान बन जाता है। जो प्रधान राजा की सेवा न करें वह अप्रधान बन जाता है। इस प्रकार कोई व्यक्ति चाहे अनपढ़ ही क्यों न हो यदि वह राजा के निकट है ता उसी को राजा मानता है, जो नौकर राजा के क्रोध को सहन कर लेते हैं, व नाराज राजा को भी खुश करने में सफल हो जाते हैं। विद्वानों, बुद्धिजीवियों, बहादुरों का सम्मान राजा के सिवा और कोई नही कर सकता। जो मनुष्य अपनी उच्च जाति आदि के अभिमान में डूबा कर राजाओं के पास नहीं जाते। वे असफलता और निराशा के सिवा कुछ भी नहीं पाते। राजा का सहारा लेकर ही बुद्धिमान लोग उचित स्थान पाते हैं, इज्जत पाते हैं, फिर बुद्धिमान लोगों के लिए राजा को वश में करना कौन-सा कठिन है—?

"भाई दमनक आखिर तुम कहना क्या चाहते हो ?"

मैं तुमसे केवल यह कहना चाहता हूं कि आज हमारा मालिक और उसका परिवार डरा हुआ है, उसके पास जाकर भय का कारण जानना, फिर संधि, विरोध, लड़ाई, हमला करना, या चप रहकर मौके की तलाश करना। किसी ताकतवर का सहारा लेना, राजनीति के यह दांव-पेंच हैं मेरे भाई इनमें से कोई भी दाव लगाया जा सकता है।

मगर भाई तुमने यह कैसे जाना कि हमारा मालिक डरा

हुआ है—" करटक ने पूछा।

"मेरे भाई कही हुई बात को तो पशु भी भांप लेते हैं, परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे बिना कही बात को भी चेहरे से जान जाते हैं जैसा कि मनु जी ने कहा है—

आकार, मुख की बनावट, इशारा, चाल-ढाल, बोलचाल, आंख द्वारा मन के अन्दर की बात जानी जा सकती है। इसलिए मैंने यह सब जान लिया है। मैं निडर होकर सिंह के पास जाऊंगा और उसकी पूरी-पूरी सहायत करूंगा।

मगर भाई आपको तो अभी राज-दरबार में जाना ही नहीं आता तो आप सेवा कैसे करेंगे ? करटक बोला।

दमनक ने हंसकर उत्तर दिया, वाह ! मैं क्या राजा की सेवा करना नहीं जानता, पिताजी की गोद में खेलते हुए मैंने घर में आने वाले साधू, संन्यासियों और विद्वानों से जो ज्ञान की बातें सुनी थीं वे सब-की-सब मैंने अपने दिल में बैठा ली थीं उनका सार इस प्रकार है।

इस सुन्दर पृथ्वी को, 'शूर' 'विद्वान' और जो 'सेवा' धर्म जानते हैं, यह तीन प्रकार के मनुष्य ही ढूंढ़ा करते हैं।

सेवा वही है जो स्वामी का हित करने वाली हो, इस प्रकार की सेवा केवल समझ ही ली जाती है। इललिए विद्वानों को चाहिए कि सेवा द्वारा ही राजा को खुश रखकर उसका सहारा लें, किसी दूसरे तरीके से नहीं।

पंडित को चाहिए कि अपने गुणों को न जानने वाले की सेवा न करे। जिस प्रकार बंजर धरती पर हल जोतने और फसल बोने का कोई लाभ नहीं, वैसे ही मंद बुद्धि वाले प्राणी से विद्या एवं गुण की बात करना बेकार है।

गरीब एवं छोटे वर्ग के लोग यदि गुणवान हों तो उनकी सेवा अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि जीवन में कभी-न-कभी ऐसा समय

आ ही जाता है जब ऐसे लोग काम आ ही जाते हैं।

चाहे इंसान भूखा-प्यासा बैठा रहे लेकिन कभी भी विचार-हीन धनवान से सहायता न मांगे।

जिसका सहारा लेकर भूखा नौकर पेट न भर सके, उस राजा को त्याग दें।

राजमाता, राजकुमार, मुख्यमंत्री और राजपाल से भी राजा के समान बर्ताव करें।"

अपने कर्तव्य का पालन करने वाला सेवक सदा राजा को अच्छा लगता है।

अपने मालिक द्वारा दिए गए धन से जो दास खुश होता है और अपने मालिक का धन्यवाद करता है, वह नौकर सदा अपने मालिक की नजरों में अच्छा और गुणवान गिना जाता है।

जो वीर युद्ध के समय आगे-आगे, नगर में पीछे-पीछे और राजमहल के द्वार पर रहता है, वही राजा को अच्छा लगता है।

जो सेवक, जुआ को अपराध, शराब को जहर और पराई औरत को बेकार समझता है, वह राजा का अत्यन्त प्रिय होता है।

जो प्राणी यह जानते हुए भी कि मैं राजा की नजरों में अच्छा हूं और राजा मेरी बात मानते हैं, फिर भी वह विधान और नियमों का उल्लंघन नहीं करता वही बुद्धिमान होता है।

जो पुरुष मालिक की अनुचित बात का बुरा न माने और निडर होकर युद्ध में लड़ता है। परदेस को भी अपना देश मानता है, वह राजा को सदा अच्छा लगता है।

"वाह···वाह···भाई बहुत खूब, यह बातें तो सब ठीक हैं अबआप यह बताओ कि वहां जाकर पहले क्या पूछेंगे ?"

करटक ने हंसते हुए पूछा।

"यह सब बातें बातों से ही निकलती हैं, जैसे अच्छी वर्षा होने पर एक बीज से दूसरा बीज पैदा होता है। किसी के मन में पाप होता है उसकी जबान मीठी होती है, किसी की जबान कड़वी होती है मन मीठा और किसी की बात भी अच्छी होती है और मन भी साफ, इसलिए मैं ऐसी कोई बात नहीं करूंगा जिससे कोई बुरा प्रभाव पड़े।"

करटक कुछ देर सोच में डूबा रहने के पश्चात् बोला, भाई राजा लोग बड़ी कठिनाई से ही काबू आते हैं, क्योंकि वे सदा चापलूसी, खुशामदी और बड़े-बड़े लोगों से घिरे रहते हैं जो उन्हें नीचे वाले लोगों से मिलने ही नहीं देते, उन तक पहुंचना भी कठिन हो जाता है।

हां, भैया! मैं यह बात जानता हूं और साथ में यह भी जानता हूं कि मनुष्य अपनी तीव्र बुद्धि से ही इन सबको जीत सकता है, वह अपना रास्ता स्वयं बनाता है। बुद्धिमान व्यक्ति जब राजा तक पहुंच जाते हैं तो यह पापी, खुशामदी लोग राजा की नजरों से गिर जाते हैं।

यह राज वह बड़ी ही कठिनाई से प्राप्त होता है क्योंकि जरा-सी बुराई पर भी ब्राह्मण के क्रोध का शिकार होकर दंड का भागी बनता है।

दमनक ने कहा यह ठीक है, किन्तु जिसकी जैसी करनी वैसी भरनी। बुद्धिमान पुरुष अपना स्थान स्वयं बनाते हैं, सेवक का अच्छा आचरण यही है कि वे अपने स्वामी की हर आज्ञा का पालन करें, मीठी बोली से तो पत्थर भी पिघल जाते हैं। राजा के क्रोधित होने पर प्यार से उसका मन जीतें, उसकी मनपसंद वस्तुओं से प्यार करे बिना तंत्र-मंत्र के ही बुद्धिमान लोग दूसरे का मन जीत सकते हैं।

करटक ने अपनी हार मानते हुए कहा, ठीक है यदि भाई तुम्हारे यही विचार हैं तो तुम अवश्य यही करो, जो तुमने सोचा है ।

फिर दमनक हंसा और उस शेर की ओर चल दिया ।

शेर (सिंह) जैसे ही दमनक को अपनी ओर आते देखा तो अपने मंत्री से कहा, देखो वह हमारे पुराने मंत्री का पुत्र आ रहा है, इसे आदर से हमारे पास लाओ ।

जैसे ही दमनक जंगल का राजा (शेर) के सामने गया तो उसने अपना सिर झुकाकर प्रणाम किया ।

जंगल का राजा अपने पुराने मंत्री के पुत्र को देखकर बहुत खुश हुआ और अपने पास बैठाकर प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए पूछने लगा ।

कहो मित्र कैसे हो, बहुत दिनों के पश्चात् मिले हो ।

दमनक ! बड़े प्यार से बोला, महाराज ! भले ही आप हमें भूल गए हैं किन्तु हम आपको कैसे भूल सकते हैं, क्योंकि हम आपके पुराने वफादार साथी हैं, आज जब हमने आपको दुःख में घिरे उदास देखा तो हमसे नहीं रहा गया, ऐसे कठिनाई के समय ही इंसान को अपने पराये का पता चलता है। अपने कर्त्तव्य का पालन करना हमारा फर्ज है महाराज, आप तो जानते ही हैं—

यदि कोई राजा अपने सेवकों के गुणों की कद्र नहीं करता तो सेवक उसका साथ नहीं देते। ऐसे ही जब कोई राजा अपने बुद्धिमान सेवक को नीचे फेंकता है तो उसके मन में नफरत पदा हो जाती है, इसमें उस सेवक का कोई दोष नहीं होता, जैसे सोने के गहनों में जड़ा जाने वाला हीरा पीतल में जड़ दिया जाए तो वह हीरा न तो होता है न शोभा देता है किन्तु देखने वाले ही उसे जड़ने वाले से नफरत करते हैं ।

आपने जो मुझसे पूछा कि बहुत दिनों बाद आये हो इसका उत्तर तो यही है कि जहां पर दायें-बायें में कोई अन्तर न समझा पाए, वहां पर बुद्धिमान रुके भी तो कैसे ?

जिस देश में जौहरी न हों वहां पर सागर से निकले मोतियों की कीमत नहीं लग सकती ।

जिनकी बुद्धि कांच को मणि और मणि को कांच समझती है, उनके पास नौकर नाममात्र को भी नहीं ठहरता ।

जहां लाल मणि और वैदूर्य मणि में कोई भेद नहीं समझा जाता वहां रत्नों की दुकानदारी कैसे की जा सकती है ?"

जहां मालिक सब नौकरों से उनकी योग्यता और अयोग्यता आदि का विचार न करके एक-सा बरताव करता है, वहां पर बुद्धिमान सेवकों के दिल टूट जाते हैं ।

न बिना सेवकों के राजा और न राजा बिना सेवक रह सकते हैं, दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं ।

जो राजा प्रजा का मन न जीत सके, जनहित के काम न करे, उसे किरणों के बिना सूर्य ही कहा जा सकता है ।

राजा खुश होकर अपने वफादार बहादुर नौकरों को इनाम ही देता है, वही नौकर समय आने पर राजा के लिए अपनी जान तक नौछावर कर देते हैं ।

जो नौकर भूख, गर्मी, सर्दी आदि से नहीं घबराता वही वफादार हो सकता है ।

दमनक की ज्ञान-भरी बातें सुनकर पिंगलक बोला—

अच्छा ऐसा ही हो ! तुम यदि कुछ करने योग्य हो अथवा नहीं, आखिर हमारे मंत्री के पुत्र हो, इसलिए जो कुछ भी कहना चाहते हो निडर होकर कहो ।

"मैं तो केवल निवेदन ही करना चाहता हूं देव !"

"तो फिर संकोच क्यों ? जो कहना है कहो ।" पिंगलक ने हंसकर कहा ।

देखो मित्र, राजा का जो भी काम हो उसे सबके सामने नहीं गुप्त में कहना चाहिए, क्योंकि गुप्त बात छः कानों में जाने से किसी भी मुसीबत का कारण बन सकती है ।

पिंगलक ने दमनक की बात को बड़े ध्यान से सुना और बात

उसके दिल को लगी, फिर उसने अपनी आंख के इशारे से वहां पर बैठे सब जानवरों को जाने का इशारा किया।

सारे जानवर जैसे ही वहां से गए तो दमनक ने शेर की ओर देखकर कहा।

"हे जंगल के राजा, अब आप बताओ कि जब नदी किनारे पानी पीने गए थे तो वापस क्यों आ गए ?"

शेर ने हंसकर कहा, वैसे ही…।

देखिए महाराज, इस बात को छुपाओ मत, यदि यह कहने योग्य नहीं है तो रहने दो, वैसे इस विषय में कहा गया है।

औरत से, मित्रों से, युवा मित्रों से गुप्त विचार कुछ न कुछ छुपा लेना चाहिए, परन्तु यह उचित है अथवा नहीं ऐसा सोचकर बुद्धिमान को चाहिए कि बड़ों के अनुरोध पर गुप्त से गुप्त बात भी समय आने पर कह डालें।

दमनक की बात सुनकर शेर सोच में पड़ गया, क्योंकि उसकी बात में वजन था फिर वह सच्चा मित्र लग रहा था। मित्रों के बारे में कहा गया है—

सच्चे मित्र, वफादार नौकर, बुद्धिमान स्त्री, दयालु कोमल हृदय मालिक के आगे अपना रोना रोकर आदमी अपने दिल का बोझ हल्का कर लेता है, इसलिए शेर ने अपने मन की बात होंठों पर लाते हुए कहा।

"भद्र, मैं इस जंगल से जाना चाहता हूं।"

"क्यों, जंगल का राजा होकर आप ऐसा क्यों सोच रहे है ?"

मेरे पुराने मित्र, मैं आपसे क्या छुपाऊं, वास्तव में इस जंगल में अद्भुत जन्तु आ गया है, जिसकी गर्ज ही इतनी भयंकर है कि डर के मारे कलेजा हिल जाता है, सोचो उसकी शक्ति कितनी होगी।

दमनक ने हंसकर शेर की ओर देखा फिर बड़े **अन्दाज से** कहने लगा।

महाराज, आप उसकी गर्ज से ही डर गए, यह बात ठीक नहीं है। कहा गया है, जल से बांध टूट जाता है, चौकस न रहने से गुप्त विचार प्रकट हो जाता है, चुगली करने से प्रेम टूट जाता है और दुखी जन कठोर वचनों से अलग हो जाते हैं। अपने पूर्वजनों द्वारा उपार्जित इस वन को छोड़ना आपके लिए ठीक नहीं, यह बात याद रखने योग्य है कि अत्यन्त उग्र और भयंकर शत्रु से मुठभेड़ होने पर भी जिसका धीरज नहीं छूटता वह राजा कभी भी हार का मुंह नहीं देखता। गर्मी के दिनों में तालाब तो

सूख जाते हैं किन्तु सागर कभी नहीं सूखता।

जो मुसीबतों से नहीं डरता, सुख में खुश नहीं होता युद्ध में डरता नहीं, ऐसा वीर पुत्र तो कोई-कोई मां ही पैदा कर सकती है।

ताकत न होने से नम्र, निःसारता होने से लघु एवं मानरहित पुरुष का जन्म लेना जैसे तिनका, जैसे सुन्दर होते हुए भी लाख का गहना बेकार होता है, यह सब समझ कर तालिक को धैर्य रखना चाहिए। इस प्रकार डर कर भागने से तो आपकी बदनामी होगी, पहले मैं भी समझा था कि वहां पर कोई भयंकर जानवर है, पर जब देखा तो धोखा था—

"वह कैसे ?" शेर ने हैरान होकर पूछा।



बुजदिल मत बनो

दमनक ने फिर कहानी आरम्भ की।

एक बार एक गीदड़ उस जंगल में चला गया जहां दो सेनाएं युद्ध कर रही थीं। दोनों सेनाओं के मध्य क्षेत्र में एक नगाड़ा रखा था। गीदड़ ने बड़े अन्दाज से उस नगाड़े को देखा, वह गीदड़ बेचारा कई दिनों से भूखा था, नगाड़े को ऊंचे स्थान पर रखे देखकर वह कुछ देर के लिए रुका।

देखते ही देखते हवा के एक तेज झोंके से नगाड़ा नीचे गिर गया, फिर आस-पास के वृक्षों में लटकी टहनियां हवा से उस नगाड़े पर पड़ने लगीं तो उसमें से आवाजें आने लगीं।

गीदड़ इन आवाजों को सुनकर डर गया। सोचने लगा कि अब क्या होगा। क्या मुझे यहां से भागना होगा?

"नहीं…नहीं।" मैं अपने पूर्वजों के इस जंगल को छोड़कर नहीं जा सकता। भागने से पहले मुझे इस आवाज का रहस्य तो जानना ही होगा।

यही सोचकर वह धीरे-धीरे उस नगाड़े के पास पहुंच गया कितनी देर तक उसे देखने के पश्चात् वह सोचने लगा कि यह

नगाड़ा तो बहुत बड़ा है, इसकी शक्ति भी कुछ कम नहीं, फिर इसका पेट भी बहुत बड़ा है, इसको चीरने से तो बहुत चर्बी और माल खाने को मिलेगा।

"वाह…वाह…अब तो खूब आनन्द आएगा खाने में।"

बस यही सोचकर उस गीदड़ ने नगाड़े का चमड़ा फाड़ दिया और घुस गया उसके अन्दर…वहां क्या था—

"ढोल का पोल।"

गीदड़ वहां पर कुछ भी न पाकर बहुत निराश हुआ। इस नगाड़े को फाड़ने में तो उसके दांत भी टूट गये थे, किन्तु मिला क्या ? कुछ भी नहीं। वह इस नगाड़े से डर रहा था। तो भी कुछ नहीं हुआ, वह स्वयं से कहने लगा। देखो केवल आवाज से ही नहीं डरना चाहिए, इंसान को बुजदिल भी नहीं बनना चाहिए।

शेर ने दमनक की ओर देखकर कहा।

देखो भद्र, मेरे यह सारे साथी इस समय बहुत डरे हुए हैं, यह सब-के-सब भाग जाना चाहते हैं, बताओ मैं अकेला क्या करूं ?"

यह इनका दोष नहीं महाराज, आप तो जानते ही हैं 'जैसा राजा वैसी प्रजा' फिर।

घोड़ा, शस्त्र, शास्त्र, वीणा, वाणी, नर और नारी, यह सब पुरुष विशेष को पाकर योग्य और अयोग्य होते हैं, इसलिए आप तब तक यहीं रहें जब तक मैं पूरी सच्चाई का पता लगाकर वापस न आऊं।

"क्या आप वहां जाने का इरादा रखते हो ?"

जी हां महाराज, अच्छे और वफादार दास का जो कर्त्तव्य है मैं उसे पूरा करूंगा। बड़े लोग यह कह गए हैं कि अपने मालिक का कहना मानने में कभी भी झिझक नहीं होनी चाहिए, चाहे उसे सांप के मुंह में या सागर की गहराई में ही क्यों न जाना पड़े। अपने मालिक के आदेशों को जो भी सेवक यह नहीं सोचता कि

यह कठिन है अथवा सरल, वही महान् होता है।

पिंगलक, दमनक की बातों से बहुत खुश हो गया था। उसने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, यदि यही बात है तो जाओ, भगवान तुम्हें इस काम में सफलता दे।

"धन्यवाद ! मेरे मालिक, भगवान ने चाहा तो मैं सफलता पाकर ही लौटूंगा।" इतना कहकर दमनक वहां से उठकर उस ओर चल दिया जहां से उस बैल की आवाज सुनी गई थी।

दमनक के चले जाने के पश्चात् शेर सोचने लगा कि मैंने यह अच्छा नहीं किया जो उसे अपने सारे भेद बता दिए कहीं यह शत्रु का जासूस न हो, या दोनों पक्षों को पागल बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहा होगा। यह भी हो सकता है कि यह मुझसे पुराना बदला चुकाना चाहता हो, क्योंकि मैंने इसे पद से हटाया था, इस बारे में कहा गया है।

जो लोग राजा के यहां पहले से ऊंचे पद पर होते हुए बड़ी इज्जत मान रखते हैं, यदि उन्हें इस पद से हटा दिया जाय तो वे अच्छे होते हुए भी उस राजा के शत्रु बन जाते हैं। वे अपने अपमान का बदला लेना चाहते हैं, इसलिए मैं उस दमनक को परखने के लिए यहां से जाकर दूसरे स्थान पर रहना शुरू कर देता हूं। यह भी हो सकता है कि दमनक उसे साथ लेकर मुझे मरवा ही डाले। ऐसे ही लोगों के बारे में कहा गया है।

विश्वास न करने वाले कमजोर प्राणी बलवानों से भी नहीं मारे जाते और कभी-कभी बलवान भी विश्वास करने पर कम-जोर के हाथों से मारे जाते हैं।

कसमें खाकर संधि करने वाले शत्रु का भी विश्वास नहीं करना चाहिए, राज्य प्राप्त करने के लिए उद्धत वृत्रासुर कसमों द्वारा ही इन्द्र से मारा गया था।

देवताओं का शत्रु भी बिना विश्वास दिलाए बस में नहीं होता, इसी विश्वास के धोखे से तो इन्द्र ने दिति के गर्भ को नष्ट कर दिया था।

यही सब सोचकर पिंगलक किसी दूसरे स्थान पर जाकर दमनक ने रास्ते को देखते हुए किसी दूसरे स्थान पर जाकर बैठ गया।

× × ×

दमनक जैसे ही बैल के पास पहुंचा वह दिल ही दिल में खुश हो रहा था, क्योंकि उसे अपने पुराने मालिक को खुश करने और अपनी खोई हुई इज्जत प्राप्त करने का एक सुन्दर अवसर मिला था।

बैल से मिल कर वह वापस अपने मालिक के पास जाने लगा तो सोच रहा था कि विद्वानों ने ठीक ही कहा है।

राजा मंत्रियों के कहने पर उस समय तक दयालु और सच्चाई के मार्ग पर नहीं चलता। जब तक वह स्वयं दुःख न उठा ले, दुःख और मुसीबत में फंस कर ही राजा को वास्तविक जीवन का पता चलता है। इसलिए मंत्री लोग दिल से चाहते हैं कि राजा भी कभी-न-कभी दुःख झेले।

"जैसे स्वस्थ प्राणी किसी अच्छे डाक्टर को नहीं चाहता वैसे ही दुःखों और संकटों से बचा हुआ राजा किसी अच्छे मंत्री को नहीं चाहता।"

यही सोचता हुआ दमनक वापस शेर के पास पहुंच गया, शेर भी दूर से ही उसे आते देख रहा था। उसने पहले से ही अपने को आने वाले खतरे का मुकाबला करने के लिए तैयार कर रखा था।

दमनक को अकेले आते देखकर वह समझ गया था कि डर वाली कोई बात नहीं, उसने दमनक से पूछा।

"मित्र तुम उस भयंकर जानवर से मिल आए हो।"

"जी हां।"

"क्या यह सत्य है ?" शेर ने आश्चर्य से पूछा।

महाराज क्या आप यह सोच सकते हैं कि मैं अपने मालिक के सामने झूठ बोलूंगा ? आपको याद नहीं।

जो पुरुष राजा और विद्वानों के आगे झूठ बोलता है वह

कितना ही महान क्यों न हो, वह शीघ्र नष्ट हो जाता है।

पिंगलक (शेर) बोला, यह ठीक है, तुमने उसे देखा होगा छोटों पर बड़े क्रोध नहीं करते इसीलिए उसने तुम्हें कुछ नहीं कहा होगा।

महाराज, हवा कभी भी नीचे झुके तिनकों और धरती पर बिछी हुई घास को कुछ नहीं कहती, सदा बड़े ही बड़ों पर अपनी शक्ति दिखाते हैं।

जैसे मस्त भंवरे जब किसी हाथी के कान के निकट जाकर जब अपना राग अलापते हैं तो वह हाथी कभी भी उस भंवरे पर गुस्सा नहीं करता, क्योंकि बलवान सदा बलवान पर गुस्सा करता है।

ठीक है मेरे मित्र, मैं तुम्हारी बातों से खुश हुआ, अब उस भयंकर जानवर के बारे में भी तो कुछ बताओ जिसकी गर्ज से ही जंगल कांप उठता है।

"जी महाराज, यदि आप कहें तो मैं उस भयंकर जानवर को भी सेवा में लगा दूं।"

पिंगलक ने एक ठंडी सांस भरते हुए कहा।

"क्या यह हो सकता है—?"

महाराज बुद्धि से इस संसार में क्या नहीं हो सकता—? यह बात भी सत्य है कि बुद्धि द्वारा जो काम बन सकता है वह हथियारों से नहीं बनता।

यदि ऐसा तुम कर दिखाओगे दमनक तो मुझे बहुत खुशी होगी, वैसे मैं तुम्हारी बातों से बहुत प्रभावित हुआ हूं। मैं आज से तुम्हें अपना मंत्री बनाता हूं, मेरे सारे काम को तुम ही देखा करोगे।

धन्यवाद महाराज, मैं आपको वचन देता हूं कि मैं आपकी सेवा सच्चे दिल से करूंगा, आप मुझे आशीर्वाद दें कि मैं उस भयंकर जानवर को ले जाकर उसे आपके रास्ते से हटा सकूं।

"जाओ दमनक जाओ मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।"

"दमनक अपने पुराने मालिक और अपने खोये हुए पद को पाकर अत्यन्त खुश हो गया था। वह वहां से सीधा उस बल के पास पहुचा, जाते ही उसने बैल से कहा।

"ओ दुष्ट बैल! इधर आ, मेरा मालिक पिंगलक तुझे बुला रहा है।"

उसकी बात सनते ही बैल ने आश्चर्य से पूछा, "मित्र यह पिंगलक कौन है?"

"अरे, क्या तू मेरे मालिक पिंगलक को नहीं जानता, कमाल है तुझे इस जंगल में रहकर भी नहीं पता कि उस सामने बड़ के पेड़ के नीचे पिंगलक नाम का शेर रहता है।"

बैल उसके मुंह से शेर की बात सुनकर डर-सा गया किन्तु फिर भी अपने आपको संभालता हुआ बोला, "देखो मित्र यदि तुम मुझे अपने मालिक के पास ले जाना चाहते हो तो मेरी रक्षा की सारी जिम्मेदारी तुम पर ही होगी।"

हां···हां मित्र, तुम ठीक ही कहते हो मेरी नीति यही है, क्योंकि,

धरती सागर और पहाड़ का तो अन्त पाया जा सकता है किन्तु राजा के दिल का भेद आज तक किसी ने नहीं पाया, इसलिए तुम उस समय तक यहीं पर ठहरो जब तक मैं अपने मालिक से सारी बात करके वापस न आ जाऊं।

"ठीक है मित्र, मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा," बैल ने हंसकर उत्तर दिया।

दमनक बैल को वहीं छोड़ कर खुशी से छलागें लगाता हुआ फिर शेर के पास पहुंचा। शेर भी अपने मंत्री को आते देखकर खुश था। उसने पूछा।

"कहो मंत्री! क्या खबर लाए हो?"

"महाराज! वह कोई साधारण बैल नहीं है। वह तो भगवान शंकर का वाहन बैल है, स्वयं शंकर जी ने उसे इस जंगल में घास खाने के लिए भेजा है।"

पिंगलक ने हैरानी से कहा, अब मुझे ठीक-ठीक बात पता चल गई कि यह बैल इस जंगल में क्यों आया है। इसके पास देवताओं की शक्ति है। अब यहां के जीव-जन्तु उसके सामने आजादी से नहीं घूम सकते…। मगर मंत्री तुमने उससे क्या कहा ?

मैंने उसे कहा यह जंगल चंडी के वाहन, मेरे राजा पिंगलक नामक शेर के अधिकार में है, इसलिए आप हमारे मेहमान हैं, मेहमान की सेवा करना हमारा सर्वप्रथम धर्म है। इसलिए मैं अपने राजा की ओर से आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हमारे साथ रहें।

"वह क्या बोला ?"

"महाराज ! वह मेरे साथ आने को तैयार हो गया, अब तो मैं केवल आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूं। कहो तो उसे आपके पास ले आऊं ?"

दमनक, तुमने तो हमारे दिल की बात कह दी। मैं बहुत खुश हूं जाओ तुम जल्दी से उसे मेरे पास ले आओ। मुझे तो यह बात बार-बार याद आती है।

जैसे शक्तिशाली खम्भों पर भवन खड़ा किया जाता है वैसे ही बुद्धिमान मंत्री के कन्धों पर राज्य का बोझ डाला जाता है।

दमनक, अपने राजा के मुंह से अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत खुश हुआ और फिर वहां से वापस उस बैल की ओर चल दिया।

बैल दमनक की बात सुनकर बहुत खुश हुआ और शेर का निमन्त्रण पाते ही बोला, जैसे—

सर्दी में आग अमृत, वैसे अपने मित्र का दर्शन अमृत है, दूध का भोजन खीर अमृत और राज सम्मान भी ऐसे ही अमृत है, हम अपने मित्र सिंह के पास चलेंगे।

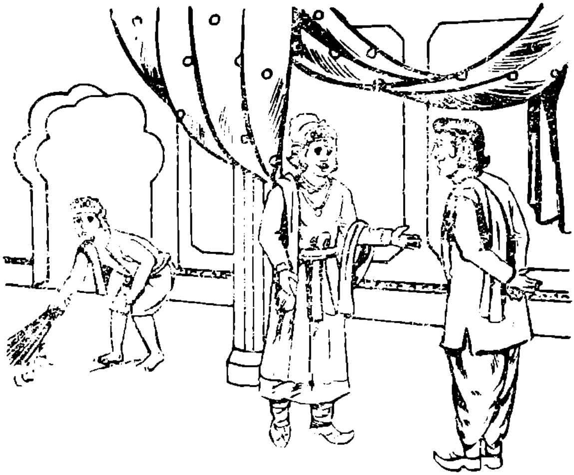
दमनक ने बैल से कहा, देखो मित्र ! मैं तुम्हें वहां पर ले जा रहा हूं। मैंने ही शेर से तुम्हारी मित्रता करवाई है, इसलिए तुम्हें मुझे यह वचन देना होगा कि तुम सदा मेरे मित्र बने रहना। राजा, सदा राजा रहता है, मंत्री मंत्री, किन्तु शिकारी की

नीति से राज्य वैभव मनुष्यों के बस में हो जाता है, एक तो प्रजा को प्रेरित करता है दूसरा यानी शिकारी मृगों की भांति उसे मार देता है।

जो प्राणी गर्व के कारण उत्तम, मद्यम और अद्धम, इन तीनों प्रकार के मनुष्यों का यथायोग्य सत्कार नहीं करता वह राजा से आदर पाकर भी दन्तिल के समान भ्रष्ट हो जाता है।

"यह कैसे भाई ?" बैल ने पूछा।

ऐसे सुनो—



न कोई छोटा, न कोई बड़ा

वर्धमान नगर में एक सेठ दन्तिल रहता था, जो गांव का मुखिया भी था। दन्तिल समाज सेवी और अच्छे स्वभाव का व्यक्ति था। उसे दुखियों एवं गरीबों से बड़ी हमदर्दी थी। यही कारण था कि राजा और जनता दोनों की नजरों में अच्छा माना जाता था।

राजा का हित करने वाला जनता में अच्छा नहीं माना जाता और जनता का पक्षपात करने वाले को राजा लोग अच्छा नहीं मानते। इस प्रकार राजा और प्रजा के बीच में कोई-कोई व्यक्ति ही अपने-आपको दोनों की नजरों में अच्छा सिद्ध कर पाता है।

इस प्रकार कुछ समय बीतने पर दन्तिल का विवाह हुआ, उस खुशी के अवसर पर उसने सभी नगरवासियों और राज-कर्मचारियों को प्यार से निमन्त्रण भेजकर भोजन कराया। विवाह के पश्चात् उसने राजा को परिवार सहित घर में बुला

कर उनको भोज करवाया, उस अवसर पर आए हुए राजगृह की सफाई करने वाले गोरम्भ नामक एक नौकर को अनुचित स्थान पर बैठे होने के कारण उसे धक्का देकर निकाल दिया। तब से नौकर अपमान के कारण लम्बी-लम्बी सांसें लेता हुआ रात में भी नहीं सोया था।

कई रातों तक बेचारा नौकर यही सोचता रहा कि मैं अपने इस अपमान का बदला सेठ और राजा से कैसे चुकाऊं। इस शरीर को सुखाने से क्या लाभ, मुझे तो जितनी जल्दी हो सके उनसे बदला लेना होगा, किसी ने ठीक ही कहा है।

जो किसी का कुछ बिगाड़ सकने में असमर्थ हो, वह निर्लज्ज मनुष्य क्यों क्रोध करता है?

क्या उछल-कूद करके कोई चना भाड़ को फोड़ सकता है?

एक रात राजा पलग पर लेटे हुए थे, जब वह गोरम्भ वहां की सफाई कर रहा था, अपने आप बोलने लगा।

'अरे उस दन्तिल की यह मजाल कि वह रानी का आलिंगन करे।"

राजा जो उस समय पलंग पर लेटा हुआ था। गोरम्भ के मुंह से यह शब्द सुनकर उठ कर बैठ गया और गोरम्भ से पूछने लगा।

"अरे गोरम्भ! क्या जो कुछ तू कह रहा है, यह ठीक है?"

राजन्! वास्तव में यह बात है कि रात-भर मैं भजन करता रहा जिसके कारण नींद पूरी नहीं हुई, अब सफाई करते-करते मेरी आंख लग गई, मुझे नहीं पता कि नींद में ही मैं क्या कुछ कह गया।

राजा ने नौकरों की बात सुनी जरूर लेकिन उसे संदेह हुआ, उसे यह पता था कि यह ही एक नौकर है जो खुलेआम मेरे महलों में आता-जाता है। इसी प्रकार दन्तिल भी आ जाता है। इसने जो रानी का आलिंगन करने की बात कही है, यह किसी हद तक ठीक हो सकती है यह बात झूठ नहीं हो सकती।

प्राणी दिन में जो चाहता (सोचता) देखता अथवा करता , वही नींद में बड़बड़ाया करता है और भी अच्छी बुरी बात जो मनुष्य के दिल में रहती है, वह नींद या नशे की हालत में अपने आप ही बाहर आ जाती है।

और रह गई स्त्रियों की बात, इनके दिल की गहराई में झांकना बड़ा कठिन है।

"लकड़ी से आग की।"

"नदियों से सागर की।"

"पुरुषों से स्त्रियों की।"

"कभी भी तृप्ति नहीं होती।"

जो मूर्ख पुरुष यह समझता है कि यह मेरी स्त्री मुझसे प्रेम करती है, वह उसके फंदे में सदा पक्षी की भांति फंसा रहता है।

जो औरतों के थोड़े बहुत कैसे ही वचनों या छोटे-बड़े कैसे ही कार्यों को मानता है, वह लोक में उन कार्यों द्वारा लघुता को प्राप्त होता है।

औरतों की जो भी सेवा करता है और पास में रहता है, प्यार से बोलता है, उसी को वह चाहने लगती है।

पुरुषों के द्वारा न चाहे जाने पर परिवार वालों के भय से, मर्यादा में न रहने वाली औरतें भी सदा सती धर्म में स्थिर रहती हैं।

औरतों के लिए कोई भी अगम्य नहीं, न ही इनकी आयु का विचार होता है, चाहे कोई विशेष सुन्दर हो चाहे मामूली यह तो पुरुष मात्र का भोग करती है।

औरतों का प्रेमी साड़ी के समान भोग्य प्रिय हो जाता है।

यही सब बातें सोचकर राजा शंका के सागर में डूब गया था यह उदास रहने लगा, यहां तक की उसने राज-दरबार के कामों में भी रुचि लेना छोड़ दिया था।

दन्तिल ने एकदम राजा को उदास देखकर, वह सोचने लगा

कि यह ठीक ही कहा जाता है।

धन पाकर कौन गर्व नहीं करता ? किस विषयों के दुःख समाप्त हुए ? धरती पर औरतों द्वारा किसका दिल नहीं तोड़ा गया ? राजा का प्यारा कौन है ? क्रूर काल की नजर किस पर नहीं पड़ी (कोई नहीं)।

कौवे में शुद्धता, जुए में सत्यता, सर्प में क्षमा, औरतों में विषय शांति, नपुंसक में धीरता, शराबी में चिन्ता अथवा अच्छे विचार और राजा मित्र किसने देखा या सुना है। (किसी ने नहीं)।

मैंने आज तक इस राजा या इसके सम्बन्धी का अपमान नहीं किया, फिर यह मुझसे इस प्रकार क्यों रूठा रहता है। मेरे पास क्यों नहीं आता-जाता। मुझे कभी नहीं बुलवाता। इस प्रकार बहुत दुःखी होकर दन्तिल एक दिन राज दरबार की ओर चल पड़ा।

द्वारपाल के पास खड़े दन्तिल को देखकर गोरम्भ हंसकर द्वारपाल से कहने लगा।

द्वारपाल जी ! राजा जी के कृपापात्र दन्तिल जी आपके पास खड़े हैं, यह जिसे चाहें जेल भिजवा दें, जिसे चाहें भरी महफिल से धक्के देकर बाहर निकलवा दें, जरा इनसे बचकर रहना कहीं आप भी न निकलवा दिए जाओ।

गोरम्भ के मुंह से यह शब्द सुनकर दन्तिल ने सोचा कि कहीं यह सब बदमाशी इसी गोरम्भ की ही न हो ? किसी ने ठीक ही कहा है।

चाहे कोई मूर्ख और छोटा ही क्यों न हो, वह यदि राजा की सेवा करता है तो वह छोटा होते हुए भी बड़ा माना जाएगा। चाहे कोई बुजदिल क्यों न हो यदि वह राजा का सेवक है तो उसे किसी से भी नीचा नहीं देखना पड़ता।

दन्तिल सब बात समझ गया था, मन-ही-मन पश्चाताप करते हुए वह घर आया फिर उसने गोरम्भ को अपने घर बुला-

कर उसे कुछ वस्त्र और रुपये इनाम के रूप में देकर कहा।

हे मित्र, मैंने उस दिन तुम्हें जान-बूझकर धक्का दिया था, क्योंकि तुम ब्राह्मणों से पहले स्थान पर बैठ गए थे इसलिए मजबूर होकर मुझे ऐसा करना पड़ा, किन्तु फिर भी मैं आपसे क्षमा चाहूंगा, आज से हम दोनों मित्र हैं, हममें कोई छोटा-बड़ा नहीं है। बस तुम मेरे प्रिय मित्र राजा की ओर देखो—

"गोरम्भ, इस बात से काफी खुश हुआ, क्योंकि विजय उसकी हुई थी।" उसके जाने के पश्चात् दन्तिल सोचने लगा।

तराजू की डंडी और दुष्ट की एक ही चेष्टा होती है, जो जरा से में ऊपर हो जाती है जरा से में नीचे चली जाती है।

उधर गोरम्भ दन्तिल से धन, वस्त्र और प्यार पाकर खुशी से फूला नहीं समा रहा था, अब उसे अपनी भूल पर रोना आ रहा था, उसने निर्णय कर लिया था कि मैं अब इन दोनों मित्रों के बीच से नफरत की दीवार गिरा दूंगा।

"बस फिर क्या था।"

दूसरी सुबह जैसे ही राजा गोरम्भ राजा के महल में झाड़ू लगाने गया तो अपने-आप ही कहने लगा।

"वाह रे ! इस राजा की मूर्खता, जो मल त्याग करते समय ककड़ी खाता है।"

राजा ने जैसे ही यह शब्द सुने तो, हैरानी से उठते हुए अपने नौकर की ओर देखकर बोला।

"अरे ओ, तू यह क्या बक रहा है ? क्या तूने मुझे कभी भी ऐसा करते देखा है ?"

"गोरम्भ हाथ जोड़ते हुए कहा। महाराज, मैं रात-भर भजन-कीर्तन करता रहा था, बस झाड़ू लगाते-लगाते आंख लग गई। बस नींद में ही सब कुछ बक गया, मुझे माफ कर देना।"

राजा, गोरम्भ की बात सुनकर, उस दिन की भी बात सोचने लगा। क्योंकि उसे पता था कि मैंने तो आज तक कभी ककड़ी खाई ही नहीं, तो फिर इसने कैसे यह बात कह दी। इसी प्रकार

इसने नींद में वही रानी वाली झूठी बात कही होगी ।

राजा सारी बात समझ गया, वह अपनी भूल पर पश्चाताप करने लगा, उसके सारे वहम दूर हो गए थे । उसने दूसरे ही दिन दन्तिल को अपने पास बुलाकर उसे प्यार से अपने गले से लगा लिया । इस प्रकार दोनों मित्र फिर से मिल गए थे ।

दमनक की बात सुनकर बैल बोला, ठीक है मित्र जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूंगा ।

"उसकी बात सुनते ही दमनक उसे लेकर शेर के पास आ गया ।"

देखो महाराज ! यह संजीवक है । मैं इसे आपके पास ले आया हूं, इससे अधिक मेरी वफादारी का सबूत और क्या हो सकता है ।

संजीवक (बैल) बड़े आदर से शेर को प्रणाम करके उसके निकट जाकर बैठ गया ।

पिंगलक ने भी उसे प्यार से उत्तर दिया और फिर पूछा, अरे भाई ! "तुम इस वन में कैसे आ गए ?"

बैल बेचारा सीधा-सादा था, उसने आरम्भ से लेकर अब तक की सारी कहानी शेर को सुना दी कि उसके मालिक ने उसे किस प्रकार धक्का देकर इस जंगल में छोड़ दिया था ।

संजीवक की सारी कहानी सुनकर शेर को उसके साथ बड़ी हमदर्दी हो गई, उसने कहा ।

देखो मित्र, तुम आज से मेरे साथी ही नहीं भाई हो, आज से तुम अकेले नहीं बल्कि मेरे साथ ही रहोगे, क्योंकि यह जंगल मांस खोर जानवरों के लिए भी सुरक्षित नहीं, तुम तो फिर भी घास खाने वाले हो ।

बैल शेर की बात सुनकर बहुत खुश हो गया था—उसे पहली बार सच्चा मित्र मिला था खुशी के मारे उसकी आंखों से आंसू निकल आए थे, उस समय उसे अपना स्वार्थी मालिक भी याद आ रहा था, जो उसका पांव तोड़कर जंगल में फेंक गया था कितने लम्बे समय तक वह अकेले जंगल में घूमता रहा था ।

अकेले समय काटना बड़ा कठिन है, जिसका कोई मित्र न हो वह बेचारा क्या करे ?

इस प्रकार से बैल अपने नये मित्रों को पाकर अत्यन्त खुश हुआ। सबसे अधिक खुशी की बात तो यह थी कि जंगल के राजा शेर के साथ उसकी दोस्ती हो गयी थी, अब तो वह चिन्ता मुक्त इस जंगल में रहने लगा था। उसे सबसे अधिक प्यार करटक और दमनक से था, क्योंकि इन दोनों के कारण तो वह शेर तक पहुंच पाया था। यही कारण था कि इन तीनों की मित्रता दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही थी और जानवरों से दूर रहकर यह तीनों मित्र घंटों तक आपस में बातें करते रहते।

दूसरी ओर जंगल का राजा शेर था। उसने भी धीरे-धीरे बैल से इतना प्यार बढ़ा लिया था कि उसे एक मिनट के लिए उस संजीवक से दूर रहना कठिन होने लगा, किन्तु शेर और बैल की मित्रता करटक और दमनक के लिए भारी पड़ने लगी थी, वे दोनों नहीं चाहते थे कि उनका मित्र बैल हर समय शेर के साथ घूमता रहे, आखिर सबसे पहले तो वह उनका ही मित्र था, फिर वे दोनों राजा के बिना भी तो जंगल में शिकार को नहीं जा सकते थे, कहा गया है कि···

यदि अच्छा और प्रभावशाली राजा भी फलहीन हो तो लोग उसे छोड़कर उसी प्रकार दूसरी जगह चले जाते हैं जिस प्रकार सूखे वृक्ष में पंछी उसे छोड़कर चले जाते हैं।

वेतन न मिलने पर बड़े-बड़े वफादार नौकर भी उसे राजा को छोड़कर चले जाते हैं जो उनसे हार्दिक प्यार करता हो।

जो राजा ठीक समय पर अपने नौकरों को वेतन देता हो, उसकी घृणा, डांट डपट को भी नौकर भूल जाते हैं।

इस प्रकार से न केवल नौकर और मालिक बल्कि सारा संसार ही एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है, इस लड़ी में, स्वामी, दास एक पर माला बनी हुई है।

देश पर राजा, बीमार पर डाक्टर, ग्राहक पर दूकानदार,

मूर्खों पर पण्डित, आलसी जनों पर चोर, कामिओं पर वेश्याएं और सब लोगों पर कारीगर सामादि से सज्जित पाशों से दिन-रात दृष्टि जमाए रखते हैं। जिस प्रकार पानी से पैदा होने वाले पदार्थ बादलों की प्रतीक्षा करते रहते हैं, वे सब एक-दूसरे की शक्ति से जीते हैं अथवा ठीक ही कहा जाता है, सर्पी दुष्टों और दूसरों का धन हरण करने वालों के अभिप्राय सिद्ध नहीं होते, इसी-लिए यह जगत वर्तमान हैं, अन्यथा कभी का नष्ट हो गया होता।

आम आदमी की तो बात ही क्या कहें, भगवान शंकर के घर में ही उन्हीं का सेवक भूखा, सर्प, उनके पुत्र गणेश के वाहन को ही खाना चाहता है, मोर को भी पार्वती जी का वाहन शेर खाना चाहता है, जब भगवान शंकर के घर में ही यह हाल है कि वे एक-दूसरे को खा जाना चाहते हैं तो फिर संसार के बाकी स्थानों पर ऐसा क्यों नहीं होगा।

तब मालिक की दया से वंचित, भूख और प्यास से व्याकुल वे दोनों करटक और दमनक, आपस में बैठकर सलाह करने लगे।

दमनक ने अपने मित्र से कहा, भाई अब यह शेर बैल की दोस्ती में सब कुछ भूल गया है, धीरे-धीरे इसके सभी साथी इसे छोड़कर चले गए हैं, आखिर कब तक कोई भूखा मरेगा ? जब राजा को प्रजा का ख्याल न हो तो प्रजा भी कहां तक साथ देगी, अब तो हमें भी सोचना पड़ेगा कि हम क्या करें ?

भाई, यदि हमारा मालिक हमारा कहना नहीं मानता तो हमें उससे कहना ही चाहिए ताकि लोग हमें दोषी न कहें, इसके लिए ही कहा गया है।

राजा चाहे न सुनता हो तो भी उसे मंत्रियों द्वारा उसे सम-झाना चाहिए, जैसे कि अपने दोष से बचने के लिए, विदुर ने अम्बिका पुत्र धृतराष्ट्र को समझाया था और मदोन्मत्त राजा और हाथी कुमार्ग में जाने पर उनके समीपस्थ महामन्त्री और महा-वत ही निन्दित होते हैं।

और घासाहारी बैल को जो तुम मालिक के पास ले गए हो

तो तुमने अपन हाथों में अंगार खींच लिया है।

"भाई मैं यह मानता हूं कि यह सारा दोष मेरा ही है। इसमें मालिक का कोई दोष नहीं है।" दमनक ने कहा।

लेकिन सोचने की बात तो यह है कि इस स्थिति में हम दोनों को क्या करना चाहिए।

करटक भाई तुम चिन्ता मत करो, ऐसे अवसर पर भी मेरी बुद्धि काम करेगी, इसी बुद्धि ने बैल को शेर तक पहुंचाया था, अब यही शेर से बैल को अलग कर देगी। लोग कहते हैं कि धनुष से निकला तीर एक ही व्यक्ति को मारता है और नहीं भी मारता लेकिन बुद्धिमान की बुद्धि राजा सहित सारे राज्य को नष्ट कर देती है, सो मैं अपनी नई चाल से इन दोनों को एक-दूसरे से अलग कर दूंगा।

भाई दमनक। एक बात याद रखना, यदि तुम्हारी इस चाल का शेर और बैल दोनों में से किसी को पता चल गया तो समझ लो हमारी जान की खैर नहीं।

ऐसी बात मत कहो मित्र! मुसीबत के समय तो बड़े-बड़े लोगों की बुद्धि काम करने लगती है, अब तो हम दोनों ही अकेले पड़ गए हैं, यदि हमने हिम्मत से काम न लिया तो वैसे भी हमारा क्या जीना है वैसे तो याद रखो।

उद्योगी को ही सदा लक्ष्मी मिलती है, भाग्य का सहारा तो केवल बुजदिल लोग लेते हैं। यत्न करने पर भी यदि कार्य सिद्ध न हो तो कोई दोष नहीं। कहा गया है।

जो काम तरीके से हो सकता है, वह शक्ति से नहीं, कौवी ने सोने की लड़ी द्वारा काला सांप मार दिया।

"वह कैसे भया!"

सुनो मैं तुम्हें सुनाता हूं।



शत्रु को तरकीब से मारो

किसी स्थान पर एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। उसमें एक कौवा और कौवी रहते थे। दोनों पति-पत्नि में बड़ा प्रेम था। इस प्रकार ही उनका जीवन व्यतीत हो रहा था। जब भी वे अण्डे देते थे तो एक काला सांप वृक्ष की जड़ में से निकल कर उनके अण्डों को खा जाता था।

दोनों पति-पत्नी सांप के हाथों बहुत ही दुःखी हो गये थे। दोनों का मन बहुत उदास रहता था। आखिर औलाद का दुःख किसे नहीं होता। कौवे का एक मित्र पास वाले वन में रहता था। वह मित्र था गीदड़। उसने अपने इस गीदड़ मित्र के पास जाकर अपना सारा दुःख सुनाते हुए कहा।

गीदड़ ने बड़े धैर्य से अपने मित्र की दुःखभरी कहानी सुनी। उसे पता था, जिसका खेत नदी के किनारे हो, जिस गांव के किनारे

सांप रहता हो, उसके निवासियों को हर समय डर ही रहता है।

फिर भी तुम मेरे मित्र हो। मैं तुम्हें निराश और उदास नहीं होने दूंगा। मैं गीदड़ हूं, मेरा दिमाग शैतान के दिमाग से कम नहीं। देखो मैं उसे बिना किसी उपाय के ही मार डालूंगा।

क्योंकि शत्रु जिस प्रकार तीव्र बुद्धि से मारा जा सकता है, वैसे शस्त्रों से नहीं। छोटे शरीर वाला यदि कोई दांव-पेच जानता है तो वह बड़े शरीर वाले शक्तिशाली को भी हरा सकता है। जैसे छोटी-बड़ी मछलियों को खाने वाला बगुला अत्यन्त लालच के कारण एक छोटे केकड़े की पकड़ से मारा गया।

"वह कैसे···?" कौवा-कौवी दोनों एक साथ बोल पड़े थे।

गीदड़ बोला, सुनो—

चालाक बगुला

एक जंगल में अनेक प्रकार के जल-जन्तुओं से भरा तालाब था। वहां पर रहने वाला एक बगुला बूढ़ा होने के कारण मछलियों को मारने में भी असमर्थ हो गया। वह बेचारा तालाब के किनारे बैठा रो रहा था। उसे इस प्रकार रोते देखकर एक केकड़े को बहुत दुःख हुआ। उसके आंसू देखकर उसे दया आ गई। वह बगुले के पास जाकर बोला—

"मामा जी ! आज तुम भोजन क्यों नहीं करते, इस प्रकार रो क्यों रहे हो ?"

बगुला बोला, "तुम ठीक कह रहे हो बेटे, मैं वास्तव में ही दुःखी हूं ! लेकिन मेरे दुःख का कारण यह नहीं जो तुम समझ रहे हो।"

"और क्या कारण है ?"

"मैं तो केवल उपवास कर रहा हूं। क्योंकि मैंने बहुत ही पाप किये हैं, इसलिए अपने इन पापों का पश्चाताप कर रहा हूं। इसीलिए मैं पास आई हुई मछली को भी नहीं खाता।"

"मैं आपके इस पश्चाताप का कारण नहीं समझा।" कड़ाके बोला।

"बेटे, मैं इस तालाब के किनारे ही पैदा हुआ। यहीं पर पल कर जवान हुआ, यहीं पर बूढ़ा हुआ, इसलिए मुझे यहां की हर चीज से प्यार है। अब जब मैंने यह सुना कि बारह वर्ष तक बारिश नहीं होगी तो···।"

"किससे सुना है आपने···?"

"एक ज्योतिषी के मुंह से, उसने कहा कि शनिवार और रोहिणी शकट को भेदकर, भौम (मंगल) और शुक्र के पास जाएगा और वारह मिहिर ने कहा है—

यदि शनि-ग्रह रोहिणी के शकट का इस लोक में भेद न करे तो बारह वर्ष तक बादल धरती पर नहीं बरसते और भी···।

प्रजा सत्य शकट (रोहिणी नक्षत्र) के भेदे जाने पर मानों धरती यह पाप करके, भस्म और अस्थि के टुकड़ों से परिपूर्ण कापालिक का सा व्रत धारण करती है, और...।

यदि शनि, मंगल अथवा चांद, रोहिणी शकट का भेद न करे तो मैं क्या कहूं। यह तो सब जानते हैं कि इससे सारा संसार नाश हो जाता है। रोहिणी शकट के मध्य में चांद के स्थित होने पर शरणहीन होकर कहीं भी जाएं, उन्हें शरण नहीं मिल पाती और न ही कुछ खाने-पीने को मिलता है। बस इसी कारण वे लोग बच्चों का मांस खाने वाले बन जाते हैं और सूर्य के तेज से खौलते हुए पानी को मजबूर होकर पीते हैं।

और यह तालाब जिसमें पहले ही थोड़ा-सा पानी है, शीघ्र ही सूख जाएगा। इसके सूख जाने पर जिनके साथ मैं सदा से ही रहा हूं वह जल के न होने से सूख जाएंगे। मैं यह दुःख सहन नहीं कर पाऊंगा। इसीलिए मैंने उपवास किया है और रो रहा हूं। इस समय थोड़े पानी वाले सभी तालाबों के जन्तु बड़े-बड़े तालाबों की ओर ले जाए जा रहे हैं। अब कुछ ही दिनों में यहां पर सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

केकड़ा उस बगुले से यह विनाश की कहानी सुनकर सब जन्तुओं के पास जाकर आने वाले विनाश की कहानी सुनाने

लगा। उस कहानी को सुनते ही डर के मारे कांपते हुए मछलियां, कछुवे उस बगुले के पास आकर पूछने लगे—

"मामा ! क्या इस मौत से बचने का कोई रास्ता भी है ?"

बगुला बोला ! इस तालाब के पास ही एक बड़ा तालाब है जो २४ वर्ष तक वर्षा न होने पर भी सूखता नहीं है। सोचो जो कोई मेरी पीठ पर चढ़ जाए मैं उसे उस तालाब में छोड़ सकता हूं।

बगुले की बात सुनकर जन्तु बोल उठे—

माम ! मुझे वहां ले चलो···हर कोई चाहता था कि पहले मैं वहां पर जाऊं।

बस फिर यया था, बगुले की चाल सफल हो गई थी। वह बारी-बारी कुछ जन्तुओं को अपनी पीठ पर लादता और एक चट्टान पर ले जाकर खा लेता।

इस प्रकार वह रोजाना ही इन जन्तुओं को खाने लगा और वहां से आकर दूसरे जन्तुओं को झूठ-मूठ की कहानी घढ़कर सुना देता। इस प्रकार बूढ़े बगुले ने चालाकी, झूठ, हेरा-फेरी से अपना धंधा जमा लिया। बेचारे जीव-जन्तुओं को क्या पता था कि धीरे-धीरे उनके साथी उस बगुले के पेट में जा रहे हैं।

केकड़ा बेचारा रोज ही बगुले से कहता कि मुझे भी उस तालाब में छोड़ आओ मगर हर बार ही बगुला उसे छोड़ जाता और मछलियों को ले जाता।

एक दिन केकड़े ने बगुले से पूछ ही लिया—

मामा जी ! आप मुझसे सबसे अधिक प्यार करते थे लेकिन इस भयंकर मौत से बचाने के लिए आप मुझे यहाँ से निकालकर क्यों नहीं ले जाते।

बगुला केकड़े की बात सुनकर सोचने लगा कि कहीं इस केकड़े को मेरी चालाकी का पता न लग जाए। फिर रोज-रोज मछलियां खाकर भी वह तंग आ गया था। केकड़े को खाने से जरा मुंह का स्वाद भी बदल जाएगा। यही सोचकर उस बगुले

ने केकड़े से कहा—

"चलो बेटा आज तुम ही मेरे साथ चलो, आज तुम्हें भी किनारे लगाकर आता हूं।"

बस उस केकड़े को अपनी पीठ पर लाद कर बगुला ले चला उस पहाड़ी की ओर। केकड़े बेचारे को क्या पता था कि उसके साथ ऐसा धोखा हो रहा है। देखते-ही-देखते उस केकड़े को उस पहाड़ी पर जा पटका।

"मामा जी ! अभी वह तालाब कितनी दूर है, मेरे बोझ से आप थक गये होंगे।"

"बगुला हंसा।" उसे पता था यह मंद बुद्धि जल-जन्तु अब इस पहाड़ी पर मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अब इससे डरने की क्या जरूरत है। उसने अपनी शेखी बघारते हुए कहा—

बेटा ! उस तालाब को अब भूल जा। उस तालाब की कहानी तो मैंने तुम लोगों को पागल बनाने के लिए घढ़ी थी। मैं तो अपना शिकार करता हूं। सीधे ढंग से शिकार तो मुझे मिलता नहीं था, मैंने अपनी तेज बुद्धि से यह रास्ता निकाल लिया।

केकड़ा बड़ा होशियार था। उसे बगुले की चालाकी का पता चल गया।

वह जोर से चीखा, मेरे मामा ·····। यह कहते हुआ वह बगुले के गले से लिपट गया। साथ ही उसने अपने दोनों दांत बगुले की गर्दन पर जोर से गाढ़ दिये।

"हाय ! मैं मरा···।" बगुले के गले से अन्तिम चीख निकली। इसके पश्चात उसकी आवाज सदा के लिए बंद हो गई। उसकी कटी गर्दन को लेकर केकड़ा वापस उसी तालाब में अपने साथियों के पास आया। उसके साथियों ने उसे इस प्रकार वापस आते देखकर पूछा—

"भाई ! तुम वापस क्यों आ गये। फिर उस मित्र को कहां छोड़ा जो हम सब की जान बचा रहा था।

केकड़े ने हंसकर कहा अरे मूर्खों ! वह बगुला तो सबसे बड़ा

झूठा और धोखेबाज निकला। वह तो हमारे एक-एसाक थी को धोखे से यहां से ले जाकर उस पहाड़ी पर बैठकर खा जाता था। आज मैंने उसकी यह चालाकी पकड़ ली और साथ ही उसे सदा के लिए शांत कर दिया। यदि आज मैं उसे ठिकाने न लगाता तो वह एक-एक करके सबको खा जाता। यदि तुम्हें विश्वास नहीं तो देखो उस धोखेबाज की गर्दन, जिसे काटकर मैं साथ ले आया हूं।

जल-जन्तु अपने साथी की तीव्र बुद्धि से शत्रु को मारने से बहुत खुश हुए।

कौवा उस केकड़े की कहानी सुनकर खुश हुआ और साथ ही बोला—भाई अब मुझे यह भी बताओ कि मैं उस साँप को कैसे समाप्त करूं।

गीदड़ बोला, तुम लोग किसी राजा की राजधानी में जाओ वहां से एक सोने का हार चोरी करके लाओ और उसे सांप के बिल पर रख दो। जैसे ही सांप अपने बिल से बाहर निकलेगा तो यह हार उसके गले में फंस जायेगा। बस इसी तरीके से इस सांप को मारा जा सकता है।

कौवा-कौवी गीदड़ की बात सुनते ही वहां से उड़ गये। उड़ते-उड़ते वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे, जहाँ पर एक रानी नदी में स्नान कर रही थी। बस फिर क्या था। कौवी ने अपने पति की ओर इशारा किया।

उस समय कौवी ने अपना दांव मारा और उस हार को ले उड़ी। रानी ने जैसे ही अपने मोतियों के हार को इस प्रकार जाते देखा तो उसने शोर मचा दिया।

रानी का शोर सुनते ही नौकरों की पूरी सेना उस कौवे-कौवी के पीछे-पीछे भाग खड़ी हुई।

कौवी उड़ने में बड़ी तेज थी, उसने जाते ही उस हार को सांप के बिल पर गिरा दिया।

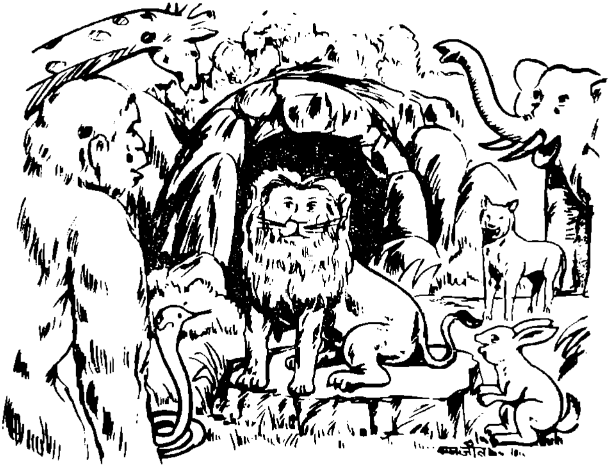
जब तक रानी के नौकर वहां तक पहुंचते, तब तक वह काला

सांप भी बिल से बाहर निकल आया था। जैसे ही रानी के नौकरों ने काले सांप को उस हार के बीच में देखा तो सब के सब उस पर टूट पड़े। देखते-ही देखते सांप मारा गया। रानी के नौकर अपना हार लेकर चले गये।

कौवा-कौवी अपने इस भयंकर शत्रु के मारे जाने पर बहुत खुश हो गये। इससे साफ पता चलता है—बलवान से बुद्धिमान बड़ा होता है। बुद्धिमान में बल कहो, देखा जंगल में खरगोश ने मदोन्मत सिंह मार दिया।

"कैसे मारा ?" करटक ने पूछा।

सुनो—



बुद्धिमान बलवान

किसी जंगल में एक शेर रहता था, वह नित्य ही हिरण, मोर खरगोश इत्यादि जानवरों को मारकर खा जाता, बेचारे जानवर शेर के आतंक से बड़े दुःखी हो गये थे। इस दमन से तंग आकर एक दिन जंगल के जानवरों मोर, हिरण, भैंसे, खरगोश आदि ने मिलकर यह निर्णय किया कि वे सब-के-सब शेर के पास जाएंगे और उससे सारी बात तय करेंगे।

इस प्रकार सभी जानवर इकट्ठे होकर शेर के पास पहुंच गए और कहा—

हे जंगल के राजा! आप हमारे साथ यह समझौता कर लें कि आप हम सबको एक साथ तंग नहीं करेंगे, हम आपके भोजन के लिए नित्य एक जानवर को यहीं पर बैठे बैठे भेज दिया करेंगे, इससे आपको भी कष्ट नहीं होगा और हमें भी पता चल जाएगा कि हमारा जीवन कितना बाकी है। इसके लिए कहा भी गया

है—

बुद्धि और ढंग से जोती हुई कठोर और बंजर धरती भी बहुत उपजाऊ होती है। जैसे पत्थर के रगड़ने से आग पैदा होती है।

प्रजा का पालन करना ही प्रशंसा के योग्य है और स्वर्ग रूपी कोष को बढ़ाने वाला है और प्रजा को पीड़ा देना धर्म नाश, पाप व निन्दा के लिए होता है।

गोपाल रूपी राजा को प्रजारूपी गौ से धनरूपी दूध धीरे-धीरे पीना चाहिए। वह भी तब जब उसका अच्छी तरह से पालन-पोषण करें।

जो राजा मोहवश बकरी की तरह प्रजा को एक ही बार में मार देता है, वह एक ही बार तृप्त हो सकता है दोबारा नहीं।

फल का इच्छुक राजा प्रजा का यत्नपूर्वक दान-मान आदि रूपी जल से इस प्रकार पालन करे जैसे माली आंकुरों को निरन्त सींच-सींचकर उनका पालन-पोषण करता है।

नृपरूपी दीप प्रजा से धनरूपी तेल लेता हुआ भी अपने आंतरिक्ष गुणों के कारण किसी की निन्दा का लक्ष्य नहीं बनता।

जैसे गाय पहले पाली-पोसी जाती है और फिर समय पर दोही जाती है उसी प्रकार प्रजा का पालन-पोषण करते हुए राजा उससे यथा समय उचित कर ले। सींची बेल समय पर फूल फल देती है।

जैसे छोटा बीजांकुर ठीक ढंग से रक्षा किया हुआ समय आने पर फल देता है उसी प्रकार रक्षा की हुई प्रजा।

सोना, अन्न, रत्न, नाना प्रकार की सवारियां और भी जो कुछ राजा के पास होता है, वह सब प्रजा से ही मिला होता है।

प्रजा पर अनुग्रह करने वाला राजा ही वृद्धि को प्राप्त होता है और प्रजा का नाश करने, स्वयं भी नाश हो जाता है।

उन सबकी बातें सुनकर शेर बोला—वाह! आप लोग भी ठीक ही कहते हैं, परन्तु यदि मेरे यहां बैठे-बैठे एक जानवर नहीं

आएगा तो मैं सबको ही खा जाऊंगा।

नहीं महाराज! ऐसा नहीं होगा, आप हम पर विश्वास रखिए, हम अपने वचन का पालन करेंगे। यह कहकर सभी जानवर वहां से आ गए और अपने वचन के अनुसार रोजाना ही एक जानवर शेर के पास उसके भोजन के रूप में चला जाता।

एक बार जब छोटे खरगोस की बारी आई तो वह बेचारा भाग्य का मारा सोचता जा रहा था कि किसी प्रकार उसकी जान बच सके, यही सोचते-सोचते वह धीरे-धीरे चला जा रहा था। रास्ते में उसने एक पुराना कुआं देखा, उस कुएं में जैसे ही उसने झांककर देखा तो उसे अपनी ही छाया नजर आई।

"बस बन गया काम।" खरगोश के उदास चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई - वह धीरे-धीरे शेर की ओर जाने लगा।

उधर शेर जी महाराज क्रोध से पागल हुए अपने भोजन की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि समय के हिसाब से उसका भोजन काफी लेट हो गया था।

जैसे ही शेर ने खरगोश को आते देखा तो वह क्रोध से भर उठा बोला।

क्यों ओ परिन्दे! एक तो तू पहले ही जरा-सा है, दूसरे तू इतना लेट आया, याद रख आज तेरी वजह से मैं सारे जानवरों को खा जाऊंगा।

खरगोश शेर के क्रोध को देखकर डर गया था, मगर फिर भी बड़े धैर्य से बोला।

हे जंगल के राजा! मैं अपनी भूल को स्वीकार करते हुए आपसे यही कहूंगा कि मैं निर्दोष हूं। मैंने और मेरे साथियों ने यह जान लिया था कि मेरे अकेले को खाने से आपका पेट नहीं भरेगा, इसीलिए हम वहां से पांच खरगोश इकट्ठे चले थे। पर वाह रे नसीब! अभी हम रास्ते में ही थे कि एक गुफा में से जंगल का राजा शेर निकल आया। उसने निकलते ही कहा।

"अरे ओ, खरगोश के बच्चों! इधर आओ।"

हम उस शेर की आवाज सुनकर डर गए। फिर भी मैंने आगे बढ़कर कहा।

"देखो महाराज, हम अपने राजा के पास जा रहा हूं, आप हमें रोकने का कष्ट न करें।"

"कौन राजा, कैसा राजा, अरे इस जंगल के तो असली राजा हम हैं, हमारे होते हुए दूसरा कोई राजा नहीं बन सकता, यदि कोई तुम्हारा राजा है तो चार खरगोशों को मेरे पास छोड़ जाओ और तुम अकेले जाकर उस राजा को हमारे पास ले आओ, आज हम निर्णय करके ही रहेंगे कि कौन इस जंगल का राजा है। बस मैं वहां से भाग आया। अब आप ही बतलाओ कि हम क्या करें ?"

यह सुनते ही शेर को और भी क्रोध आ गया, उसने खरगोश की ओर देखकर कहा, मेरे मित्र चलो आज हम उसे देखते हैं। भला मेरे होते हुए दूसरा कोई राजा कैसे बन सकता है। आज मैं उसके मांस से अपना भोजन करूंगा। इसलिए कहा गया है कि--

"लड़ाई के तीन फल हैं १. भूमि २. स्त्री ३. धन आदि। इन तीनों में से एक भी प्राप्त न होता हो तो कभी भी लड़ाई न करें।

जहां भारी लाभ न हो और जहां हार दिखती हो, बुद्धिमान लोग वहां पर युद्ध नहीं करते।

खरगोश ने कहा, महाराज ! यह सत्य है। अपनी भूमि पर और ऐश्वर्य के कारण से ही वहादुर लोग युद्ध करते हैं, किन्तु वह किले के सहारे में है। किले से निकल कर ही उसने हमें रोका था। किले के अन्दर रहने वाले शत्रु को बड़ी कठिनाई से जीता जा सकता है।

राजा जिस कार्य को एक किले के सहारे से सिद्ध करता है, वह न तो हथियारों से और न लाखों घोड़ों से सिद्ध होता है, किले के अन्दर से लड़ने वाला, अकेले ही सैकड़ों से युद्ध करता है, इसीलिए नीति शास्त्र में विद्वान किले की प्रशंसा करते हैं, उसे बहुत महत्व देते हुए इस प्रकार से कहते हैं।

प्राचीन काल में हिरण्य कश्यप के डर के कारण गुरु (बृहस्पति) की आज्ञा से विश्वकर्मा के प्रभाव से इन्द्र ने किला बनवाया था। उसने यह वर दिया था कि जिसके पास किला होगा वही इस पृथ्वी पर विजयी होगा। तभी से हजारों किले बन गए।

जैसे दांतों के बिना सांप, मस्ती के बिना हाथी, सबके वश में आ जाते हैं, उसी प्रकार किले के बिना राजा को सभी जीत सकते हैं।

खरगोश की बात सुन शेर गर्जकर बोला, "मेरे भाई तू मुझे जल्दी से उस शेर को दिखा, ताकि मैं उसे ठिकाने लगा सकूं। कहा गया है कि जो व्यक्ति, शत्रु और रोग को पैदा होते ही शांत नहीं करता। वे महाबली होते हुए भी उस रोग या शत्रु से मारा जा सकता है। और भी—कल्याण के इच्छुक को उठते हुए शत्रु की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि शिष्ट पुरुषों ने बढ़ते हुए रोग और शत्रु को एक-सा ही समझा है।

अपनी ताकत, इज्जत, मर्यादा और उत्साह को देखकर जो राजा युद्ध के लिए जाता है, वह अकेले ही परशुराम की भांति बहुतों को मारता है।

महाराज ! मैं आपकी सब बातों को मानता हूं किन्तु यह बात याद रखें कि वह बड़ा बलवान है, मैंने उसे निकट से देखा है उसकी ताकत जाने बिना आपको उसके पास नहीं जाना चाहिए।

जो जोश में अंधा होकर अपनी और दूसरे की ताकत देखे बिना युद्ध के लिए निकल पड़ता है, वह पतंगे की भांति जलकर नाश हो जाता है।

जो स्वयं बलवान होते हुए भी अपने से अधिक ताकत वाले शत्रु को मारने निकलता है, वह नीचा देखता हुआ ऐसे वापस आता है जैसे टूटे दांत वाला हाथी।

"ओ पागल खरगोश ! तुझे इन बातों से क्या लेना ? मैं जंगल का राजा हूं मैं किसी चीज से नहीं डरता। चल तू मेरे को उसका

किला दिखा, फिर कोई और बात करेंगे समझे—।"

खरगोश की चाल सफल हो गई थी, वह शेर को साथ लेकर कुएं के पास पहुंचा जिसे पहले से देख आया था, वहीं पर रुककर खरगोश बोला।

"देखो महाराज, यह रहा उस शेर का किला, आप उसे देखो और लड़ो।"

शेर ने कुएं में जैसे ही झांककर देखा तो उसे पानी में वैसा ही शेर नजर आया। वास्तव में यह उसी की छाया थी।

शेर को सामने देखकर, शेर क्रोध से गर्ज उठा।

उसकी गर्ज कुएं से टकराकर फिर उसके ही कानों में पड़ी तो उसने समझा कि नीचे का शेर गर्ज रहा है। शेर का क्रोध और भी बढ़ गया क्रोध में अंधे होकर उसने शेर को मारने के लिए उस कुएं में ही छलांग लगा दी।

पास खड़ा खरगोश खुशी से नाचते हुए बोला।

वाह रे मेरे शेर…तू भी भूखा मरा…!

खुशी से नाचता हुआ खरगोश अपने दूसरे साथियों के पास पहुंचा, उसने जाते ही उन्हें शेर के मरने की खबर सुनाई सब लोग खरगोश की बुद्धि पर बहुत खुश हुए, उन्हें नई आजादी मिल गई थी।

इसीलिए तो कहता हूं जिसकी बुद्धि उसी का बल—"भाई यदि आप कहें तो मैं भी अपनी बुद्धि को वहां जाकर आजमाऊं? इससे उन दोनों की मित्रता को तोड़ दूं।"

आवश्य जाओ! मेरे मित्र, सफलता तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। करटक ने कहा।

दमनक यहां से चल पड़ा, उसके जाते ही पिंगलक को अकेले बैठा देखा, बस मौका अच्छा था, उसने जाते ही उसे प्रणाम किया और उसके चरणों में बैठ गया।

"क्या बात है दमनक! बहुत दिनों के पश्चात् नजर आ रहे हो।"

महाराज! ऐसा लगता है आपको हमसे कोई लगाव नहीं रहा। मगर जब मैंने यह देखा कि हमारे राज्य की हालत खराब हो रही है, तब मुझसे नहीं रहा गया, मैं सीधा आपके पास चला आया।

नहीं मित्र मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकता, तुमने तो मुझे एक ऐसा मित्र लाकर दिया जिसने हमारा जीवन ही बदल दिया, ऐसा शक्तिशाली मित्र पाकर तो हम बिल्कुल ही चिन्ता मुक्त हो गए हैं।

दमनक ने मौका ताड़ा और झट से बोला, महाराज! आपकी सब बातें ठीक होते हुए भी गलत हैं, क्योंकि आप तो यह भूल ही गए कि आपका यह मित्र घास खाने वाला है। यदि किसी मांस खाने वाले शत्रु ने आप पर हमला कर दिया तो यह उसका मुकाबला नहीं कर सकेगा। इस प्रकार आप धोखे में ही मारे जाएंगे, इससे तो अच्छा है आप पहले इसे दांव लगाकर मार डालें।

दमनक! प्रतिज्ञा भंग से डरने वाले को चाहिए कि सभा में जिसको पहले गुणी बताया हो, उसे फिर दोषी न कहो, तुम्हारे कहने से तो मैंने इसे मित्र बनाया है। अब मैं स्वयं ही इसे कैसे मार सकता हूं। इसके विरुद्ध कोई इल्जाम नहीं है। कहा गया है—

जिस वृक्ष को अपने ही हाथों से लगाया गया हो, उसे स्वयं काटना बड़ा कठिन ही नहीं पाप भी है।

पहले या तो किसी से प्रेम करना ही नहीं चाहिए, यदि प्रेम कर लिया तो उसे प्रतिदिन बढ़ाना चाहिए। जो लोग प्रेम से दूर भागते हैं उन्हें लज्जित होना पड़ता है। इससे तो प्रेम करना ही नहीं चाहिए। धरती के नीचे बनी बिल्डिंग का गिरने का डर नहीं होता।

जो उपकारी के साथ अच्छा व्यवहार करता है, उसके अच्छेपन की क्या प्रशंसा जो उपकार करने वाले से सज्जनता का-सा बर्ताव करता है, वह सज्जनों द्वारा साधू कहा जाता है। इसलिए यदि यह मेरे विरुद्ध द्रोह भी करता है तो भी मुझे उसके विरुद्ध

कुछ नहीं कहना चाहिए।

नहीं महाराज ! यह राजनीति के विरुद्ध है, द्राह करने वाले को कभी क्षमा नहीं करना चाहिए, इसके लिए कहा गया है—

समान धन वालों को, बराबर शक्ति वाले को, भेद जानने वाले को, अपना धंधा जानने वाले को और आधा राज्य लेने वाले को जो नहीं मारता वह स्वयं मारा जाता है।

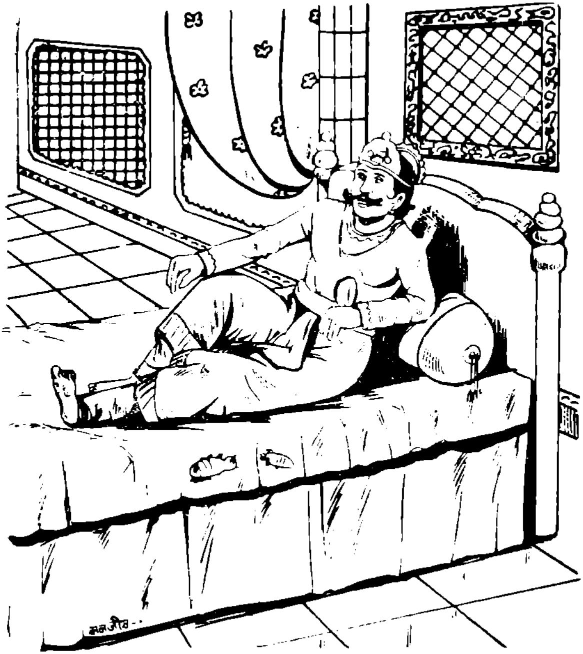
दूसरे इसकी मित्रता के कारण, आपने सारा कर्त्तव्य छोड़ दिया। आपके कर्त्तव्य छोड़ने से विशेष साथी भी उदास हो गए। फिर यह बैल घास खाता है, आप स्वयं मांस खाते हैं आपकी सारी प्रजा भी मांस खाती है। यह तो हिंसा और अहिंसा का युद्ध आरम्भ हो गया है। शायद आपको पता नहीं कि इस बैल के आने से आपकी प्रजा को मांस मिलना बन्द हो गया है। इससे यह सब लोग धीरे-धीरे आपको छोड़कर चले जाएंगे, फिर आप नष्ट ही हैं, इस बैल के साथ रहकरआपशिकारकरना भी भूल जाएंगे। इसके लिए कहा गया है राजा जिस पर अधिक कृपा करता है, वह चाहे कुलीन है या अकुलीन वह मनुष्य ऐश्वर्य का भागी होता है, आप किस गुण विशेष के कारण उस बैल को अपने साथ रखते हैं ? महाराज यदि आप यह सोचते हैं कि यह भारी शरीर वाला है, इसके द्वारा शत्रुओं को मारा जा सकता है, तो इससे यह कार्य भी सिद्ध न होगा, क्योंकि यह घास चरने वाला है आपके सारे शत्रु मांसाहारी हैं, इससे कोई शत्रु मारा नहीं जाएगा। इसलिए जितना जल्दी हो सके इसे दोष लगाकर मार दीजिए।

शेर बोला, देखो मित्र ! प्रतिज्ञा भंग करने वाले को चाहिए कि सभा में पहले जिसको गुणवान बताया हो, उसको फिर दोषी न कहो, तुम्हारे कहने से ही इसे मैंने अपना साथी बनाया है, तो अब तुम ही बताओ कि मैं इसे कैसे मारूं ? यह बैल हमारा मित्र है इसके विरुद्ध कोई भी दोष नहीं है।

महाराज ! एक बात याद रखो, जिसके स्वभाव का ज्ञान न हो उसे सहारा मत दो, खटमल के दोष पर धीरे-धीरे सरकने वाली जूं मारी गई थी।

"वह कैसे ?" शेर बोला।

सुनो महाराज, उस जूं की कहानी।



अनजान से बचो

एक राजा के सोने के कमरे में एक सफेद जूं रहती थी। एक तो राजा के सुन्दर महल, दूसरे राजा का मजेदार खून, जूं को भला और क्या चाहिए था। महलों में रहने वालों का तो जीवन वैसे ही सुखी होता है।

किसी प्रकार से उस कमरे में एक खटमल घुस आया। जूं ने जैसे ही खटमल को राजा के पलंग में घुसते देखकर कहा—

अरे भाई! तुम राजा के बिस्तर में कैसे घुस आए? कहीं राजा को पता चल गया तो हम दोनों की खैर नहीं, इसलिए

तुम यहां से शीघ्र चले जाओ।

खटमल बड़ा चालाक था। उसने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा, हे बहन ! देख लोग घर आए शत्रु के साथ भी ऐसा व्यवहार नहीं करते। कहा भी गया है।

आइये विराजिये, यह आसन है, दम लीजिए, बहुत दिनों से आये कहां रहे ? कहो कुशल से रहे। ऐसे शब्दों से घर आए मेहमान का स्वागत करते हैं। विद्वानों द्वारा गृहस्थियों का यह सर्वदाता छोटा धर्म कहा गया है।

और मैंने आज तक अनेक प्रकार के छोटे-बड़े इन्सानों का खून पीया है, जिसमें खट्टा, मीठा, कड़वा सभी प्रकार के खून थे। किन्तु आज तक मैंने किसी राजा का खून नहीं पीकर देखा। यदि तुम कहो तो मैं कुछ दिनों के लिए तुम्हारा मेहमान बन कर राजा के खून का आनन्द ले लूं।

खटमल की मीठी-मीठी बातों में जूं आ गई थी। उसने कहा, देखो भाई मैं इस राजा का खून बड़े ही विचित्र ढंग से और प्यार से चूसती हूं। जब राजा सो जाता है तो मैं इतने प्यार से खून चूसती हूं कि इसे बिल्कुल पता नहीं चलता। इसलिए तुम्हें भी इतनी ही होशियारी से यह काम करना होगा।

मेरी बहन ! तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। मैं राजा का खून उसी समय चूसना आरम्भ करूंगा, जब तुम उसका खून पी लोगी।

वह दोनों यह बातें कर ही रहे थे कि इतने में राजा भी अपने कमरे में आ गया। जैसे ही राजा पलंग पर बैठा तो खटमल के मुंह में पानी भर आया और उसने झट से राजा को काट खाया और उसका खून चूसने लगा। किसी ने ठीक कहा है—

उपदेश से स्वभाव नहीं बदलता। पानी को जितना मर्जी गर्म कर लो वह फिर से ठंडा हो जाएगा।

चाहे आग ठंडी हो जाए और शीतल किरणों वाला चांद जलने वाला बन जाए, तो भी मनुष्य का स्वभाव नहीं बदला

जा सकता।

उधर जैसे ही राजा को खटमल ने काटा तो वह तड़प कर उस पलंग से उठ खड़ा हुआ और चीख कर बोला, इस पलंग में जूं अथवा खटमल जरूर हैं जिन्होंने मुझे काटा है।

राजा के नौकर उसकी बात सुनकर भागे हुए आए और पलंग पर से बिस्तर उठा कर देखने लगे। चूंकि खटमल बड़ा होशियार था। वह झट से किसी लकड़ी की दरार में घुस गया। जूं बेचारी कपड़े की सीवन में चिपकी हुई थी, जो झट से उन नौकरों को नजर आ गई।

बस फिर क्या था। नौकरों ने जूं को हाथ में लेते हुए उसे मसल कर सदा के लिए समाप्त कर दिया। जूं बेचारी तो मर गई चालाक खटमल बच गया।

इसलिए तो आपसे कहता हूं महाराज, आप अपनी बिरादरी के लोगों पर विश्वास करो। बाहर के लोगों से बचो। बाहर के लोगों से ही आदमी धोखे में मारा जाता है। जैसा कि आपने सुना होगा कि राजा कमुद्रम।

मैंने नहीं सुना मित्र, तुम ही बता दो उस राजा की कहानी, शेर बोला।



धोखा एक बार

किसी जंगल में चंडख नामक एक शृंगाल रहता था। एक बार भूख के कारण एक नगर में घुस गया। बस फिर क्या था नगर के कुत्ते उसे देखते ही भौंकने लगे। कुत्ते उसके पीछे-पीछे थे वह बेचारा आगे-आगे भाग रहा था।

भागते-भागते वह एक धोबी के घर में घुस गया। धोबी के घर में एक नीले रंग का भरा हुआ टब रखा हुआ था। क्योंकि

श्रृंगाल कुत्तों के हमले के डर से अन्धा-धुन्ध भागा आ रहा था। इसलिए वह सीधा ही उस नीले रंग के पानी से भरे टब में जा गिरा।

जैसे ही वह उस रंग वाले पानी से निकला तो उसका रंग बदला हुआ था। वह एक नीले रंग का विचित्र जानवर लग रहा था। कुत्तों ने देखा कि यह तो श्रृंगाल नहीं है तो वे उसे छोड़-कर चले गए। कुत्तों के जाने के पश्चात् वह गीदड़ (श्रृंगाल) फिर वापस जंगल की ओर भाग गया। नीला रंग कभी भी अपना रंग नहीं छोड़ता। कहा गया है—

बज्र लेप का, मूर्ख का, औरतों का, केकड़े का, मछलियों का, शराब पीने वाले का और नीले रंग की एक ही पकड़ है। जिसे एक बार पकड़ लिया उसे फिर कभी नहीं छोड़ते।

जैसे ही गीदड़ जंगल में घुसा तो शेर, चीते, भेड़िये आदि ने उसे देखकर कहा—

अरे ! यह विचित्र जानवर इस जंगल में कहां से आ गया ? वे सब के सब उसे देखकर डर गये। डर के मारे वे इधर-उधर भागने लगे। भागते-भागते यही कह रहे थे कि इस भयंकर जानवर से बचो…बचो…बचो…। सारे जंगल में भगदड़ मच गई थी। इस अवसर के लिए तो कहा गया है—

यदि अपना कल्याण चाहो तो मनुष्य जिसके हाव-भाव का कुल और प्राक्रम आदि का पता न हो उस पर विश्वास न करे।

भागते हुए जानवरों को देखकर गीदड़ ने भी अपना दांव मारने की सोची और वह बोला—

ओ भाईयों ! तुम क्यों भाग रहे हो। मैं तुम्हारा शत्रु नहीं हूं। मुझे तो स्वयं भगवान ने भेजा है। भगवान जी ने मुझसे कहा था कि बेटा तुम उस जंगल में जाओ क्योंकि वहां के जानवरों का कोई राजा नहीं, इसलिए तुम वहां के राजा हो। तभी तो मेरा रंग तुम सबसे अलग है। यह रंग मुझे भगवान ने दिया है, मैं तीनों लोकों का राजा कमुद्रम हूं।

गीदड़ की इस आवाज पर सभी जानवर रुक गए और गीदड़ के आगे झुकते हुए कहने लगे—

महाराज ! आपका जो हुक्म हो हमें दीजिए। हम सब आपके दास हैं, प्रजा हैं।

गीदड़ ऐसे अवसर पर पीछे रहने वाला नहीं था उसे तो पहली बार यह राजगद्दी मिली थी। उसने उसी समय अपना दरबार लगाया और शेर को अपना मंत्री, बाघ को सेनापति का पद, हाथियों को पानी लाने का काम, चीते को द्वारपाल बनाकर गीदड़ों से तो बात तक न की। उन्हें धक्के देकर बाहर निकालते हुए कहा—तुम लोग यहां से चले जाओ, हमारे दरबार में बुजदिलों का कोई काम नहीं।

इस प्रकार से गीदड़ जी महाराज राजा बनकर उस जंगल में राज करने लगे। शेर जैसे बहादुर भी उनको सुबह उठकर नमस्कार करते। दिल ही दिल में गीहड़ जी बहुत खुश थे। बड़े आनन्द से शेर के मारे हुए शिकार को खाते और मोटे होते जा रहे थे।

एक बार पास के जंगल के गीदड़ों ने इस जंगल पर हमला बोल दिया। चारों ग्रोर से हवा···हवा हो···हवा हो की आवाजें आने लगीं। चारों ओर हा···हा···कार मच गई। छोटे-बड़े जानवर डर के मारे भागने लगे।

"महाराज हम पर हमला हो गया।"

"हम पर हमला हो गया।"

"चलिए आप लड़ने के लिए, नहीं तो बाहर से आया शत्रु हम सबको खा जाएगा।"

सब जानवरों ने जैसे ही गीदड़ महाराज से कहा तो बस फिर क्या था। गीदड़ जी महाराज तो कांपने लगे···डर के मारे उनका बुरा हाल हो गया। उन्होंने कहा चलो यहां से भाग चलो।

गीदड़ की इस बात को सुनकर, शेर, चीता, भेड़िये सब समझ गए थे कि यह तो नकली राजा है। यह तो गीदड़ है। हम

तो आज तक धोखे में रहे। बस फिर क्या था, ढोल का पोल खुल गया। सब लोगों ने मिलकर उस धोखेबाज गीदड़ की खूब पिटाई की।

दमनक के मुंह से यह कहानी सुनकर शेर बोला, इस बात का क्या सबूत है कि वह मुझसे नफरत करता है ?

महाराज ! आज उसने मेरे सामने कहा है कि मैं कल सुबह तक पिंगलक को मार दूंगा, यही सबूत है। अब सुबह को आप देखना कि वह लाल मुंह किये होंठ फड़फड़ाता हुआ, इधर-उधर सब ओर देखता हुआ। यदि क्रूर नज़रों से आपकी ओर देखेगा तो आप समझ जाइएगा कि वह आपकी हत्या करने के लिए तैयार है।

बस इतना कहकर दमनक वहां से उठा और सीधा संजीवक बैल के पास चला गया।

बैल ने अपने मित्र को अचानक ही आते देखा तो बहुत खुश हुआ और उसका स्वागत करने के लिए बाहर आया। दोनों मित्र गले मिले। बैल ने बड़े प्यार से उसे अपने पास बैठा कर पूछा—

कहो मित्र ! खुश तो हो। उतने दिनों से कहां थे। सच पूछो तो मैं तुम्हारे बगैर उदास हो गया था।

दमनक बोला, अरे भाई नौकरों का हाल क्या पूछना। जो लोग राजा के नौकर होते हैं, उनकी सम्पत्ति दूसरों के अधीन, मन सदा अशांत, अपने जीवन का भी विश्वास नहीं रहता। सेवा द्वारा भी जो धन एकत्र करने की इच्छा से सेवकों ने जो किया उसे देखो कि शरीर की जो स्वतन्त्रता है उसको भी मूर्खों ने खो दिया। पहले तो पैदा होना ही अत्यन्त दुःखकर है, फिर गरीबी, उस पर नौकरी करके जीवन चलाना। हाय ! दुःखों का यह कैसा सिलसिला है। महाभारत में जिंदा भी पांच मरे कहे गये हैं : (१) दरिद्र, (२) रोगी, (३) मूर्ख, (४) प्रवासी, (५) नौकरी करने वाला।

भाई नौकर, काम अधिक होने के कारण शांति से न कभी

भोजन करता है, न अच्छे प्रकार सोता है, न जागता है और न बेधड़क बात करता है। क्या नौकर की भी कोई जिन्दगी है? जिन्होंने सेवा (नौकरी) की कुत्ते की वृत्ति कहा है, उन्होंने बकवास की है। क्योंकि कुत्ता तो आजाद विचारधारा रखता है, जबकि नौकर मालिक की आज्ञा से सारे काम करता है। धरती पर सोना, ब्रह्मचर्य का पालन करना। दुबले और थोड़ा भोजन करना, नौकर तो संन्यासी के समान होता है। अन्तर केवल इतना ही है कि नौकर पापी पेट के लिए, संन्यासी धर्म के लिए यह सब कुछ करता है। यदि धर्म से पृथक् न होता, तो दंड-धूप आदि जो कष्ट सेवक, धन के लिए सहता है वह थोड़ा ही होता। उस मजेदार सुन्दर लड्डू का क्या, जो सेवा करने से मिलता है।

"आखिर आप कहना क्या चाहते हैं मित्र?" बैल ने उससे पूछा।

देखो मित्र! मंत्रियों को मन्त्र भेद करना उचित नहीं। क्योंकि मन्त्री होकर जो राजा के विचार को दूसरों से कह देता है, वह राजा के काम तो बिगाड़ ही देता है, स्वयं भी दुःख पाता है। जिस मंत्री ने राजा का विचार प्रकट कर दिया, मानो उसने सबको बिना शस्त्र के मार दिया। यह नारद ने कहा है तो भी मैंने तुम्हारे सामने यह बात कही है। क्योंकि तुम मेरे ही कहने पर इस राजा के पास विश्वास करके आए थे। बड़ों का कहना है—

जिसके विश्वास से कोई मारा उसको उसकी हत्या ही मारती है। (यह मनु का वचन है)।

यह शेर पापी है। इसका मन खोटा है। इसने आज मुझे अकेले में ले जाकर कहा है कि मैं कल सुबह ही इस बैल को मार कर अपने साथी जानवरों की भूख मिटाऊंगा। तब मैंने उससे कहा, मालिक जो मित्रद्रोह के द्वारा मारा जाए वह ठीक नहीं। कहा गया है—

ब्रह्म हत्या करके प्रायश्चित द्वारा शुद्ध हो जाता है पर मित्र-

द्रोही, कभी भी, कैसे भी, शुद्ध नहीं होता।

मेरी बात पर उसने गुस्से से कहा, ओ दुष्ट ! बैल घास चरने वाला है और हम मांसाहारी हैं। इसलिए हमारा उसका स्वभाविक बैर है। उसे मारने के लिए तो मैंने यह रास्ता निकाला था। उसे मारना पाप है। इसीलिए कहा है—

जो अन्य उपायों से न मारा जाये तो उस दुश्मन को अपनी कन्या देकर भी मार देना चाहिए। इस प्रकार मारने में कोई दोष नहीं है।

सो मैं उसका निश्चय जानकर ही तुम्हारे पास आया हूं। अब मेरे पर विश्वासघात का दोष नहीं रहा। मैंने तो गुप्त बात भी तुम्हें बता दी। अब तुम जो कुछ भी उचित समझो करो, मेरा काम पूरा हो गया।

बैल बेचारा सोच में पड़ गया और बोला, यह ठीक है कि—

"स्त्रियां बड़ी कठिनाई से पहचानी जाती हैं।"

"राजा लोग अधिकतर प्यार से वंचित होते हैं।"

"धन कंजूस के पास जाता है।"

"बादल सदा पहाड़ों और किलों पर बरसते हैं।"

जंगल अच्छा, भिक्षा अच्छी, मजदूरी भी अच्छी, रोगी रहना भी अच्छा, पर नौकरी करके धन इकट्ठा करना नहीं अच्छा।

इसलिए मैंने ठीक नहीं किया जो इस शेर के साथ दोस्ती कर ली। कहा भी गया है कि जिन दो का मन बराबर हो, वंश बराबर हो, उन्हीं के आपस में मित्रता और विवाह ठीक है। मृग मृगी के साथ, कौवा कौवी के साथ, घोड़ा घोड़ी के साथ और बुद्धिमान बुद्धिमान के साथ रहते हैं। अब मैं जाकर उसे मनाने का प्रयत्न भी करूं तो यह सब बेकार होगा। कहा गया है, जो किसी उद्देश्य को लेकर क्रोध करता है, वह उसके प्राप्त होने पर ही शांत होता है। जो बिना किसी बात के ही क्रोध करे उस मनुष्य को तो मनाना बहुत ही कठिन हो जाता है। इसी प्रकार राजाओं की सेवा समुद्र की सेवा के समान शंक जन्म ही होती है।

इस लोक में सेवक लोग मालिक को दूसरे सेवकों पर खुशी सहन नहीं करते। जैसे सौतें दूसरी पत्नी पर अच्छे कार्यों के कारण पति की खुशी नहीं सहती।

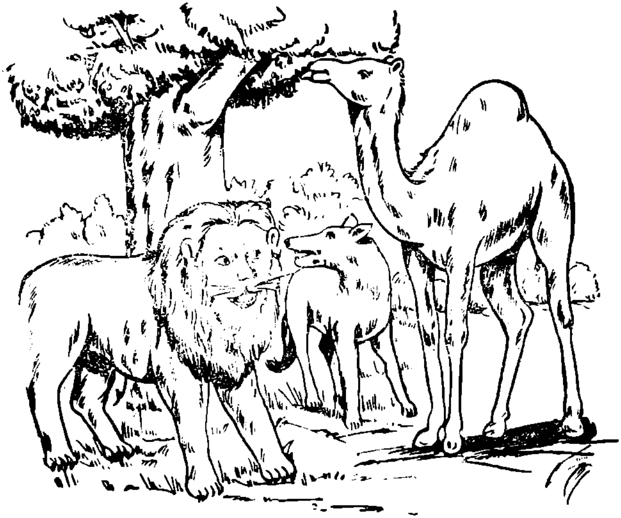
और ऐसा होता है कि गुणवानों के पास होने पर गुणहीनों पर खुशी नहीं होती।

अधिक गुणवान पात्रों के द्वारा साधारण गुण-जनों के गुण उपेक्षित हो जाते है। जैसे सर्प के निकलने पर रात्रि के दीप का प्रकाश नहीं रहता।

दमनक मन-ही-मन में बहुत खुश था। उसका तीर ठीक निशाने पर बैठा था। उसने बैल को प्यार से कहा—

देखो भाई ! चिन्ता मत करो, हिम्मत से काम लो। डर वाली कोई बात नहीं। समय आने पर आदमी अपने आपको बदल लेता है। शत्रु चाहे कितना भी ताकतवर क्यों न हो, तरीके से उसे मारा जा सकता है।

दमनक बैल से यह कहानी सुनने लगा।



विरोधी की चाल

किसी जंगल में एक शेर रहता था। वहीं पर बाघ, कौवा और गीदड़ उसके साथी थे। एक बार यह सब के सब जंगल में जा रहे थे तो शेर ने एक ऊंट की ओर देखकर कहा—

"अरे! यह कितना सुन्दर जानवरहै। इससे जाकर पूछो कि यह जंगली है अथवा मैदानी।"

कौवा झट से बोला, "हे महाराज! यह ऊंट मैदानी है। इसका मांस बड़ा मजेदार होता है। इसे मार कर खा लीजिए।"

"मैं घर आए को नहीं मारता।" शेर ने कहा इसके लिए तो कहा गया है—

भय न मानता हुआ यदि कोई शत्रु भी अपने पास आ जाये, उसे जो मारे उस पर ब्राह्मण की हत्या का पाप लगता है। इसलिए उसे सम्मान से मेरे पास ले आओ ताकि मैं उसके यहां

आने का कारण पूछ सकूं।

शेरके कहने परवे लोग ऊंट को बड़े प्यार से समझा-बुझाकर उसके पास ले आये। उसके आते ही शेर ने पूछा—

"क्यों भाई! तुम इस जंगल में कैसे आ गये?"

"मित्र! मैं अपने साथियों से बिछड़ कर रास्ता भूल गया था।" ऊंट ने बड़े धैर्य से उत्तर दिया।

शेर उसकी बात से बहुत खुश हुआ। उसने ऊंट से कहा, देखो भाई, अब तुम नगर में मत जाओ, हम लोगों के साथ आज ही से रहो। यहीं पर हरी-हरी घास खाकर जीवन का भरपूर आनन्द लो, हम तुम्हारे साथ हैं।

शेर और उसके साथियों की बातों से ऊंट का दिल बहुत खुश हुआ। उसने दिल ही दिल में यह निर्णय कर लिया किअब उस मालिक के पास नहीं जाएगा, जो दिन-रात बोझा उसकी पीठ पर लाद कर स्वयं आनन्द लेता है। अब तो वह आज ही से इस जंगल में ही रहेगा। बस कुछ ही दिनों में आजाद वातावरण में रहने और मनपसंद खाने से, ऊंटतो खूब मोटा-ताजा हो गया।

कुछ ही दिनों में उस शेर का एक जंगली हाथी से युद्ध हुआ। उस युद्ध में शेर को काफी चोटें आयी थीं। उसके सारे शरीर में दर्द होने लगा। यहां तक कि वह एक कदम भी चलने से मजबूर था, तब तो वह भूख से व्याकुल जंगल में लेटा अत्यन्त दुःख पाने लगा।

तब शेर ने कहा, भाई कहीं से कोई शिकार ढूंढ़ों जिससे मैं अपना पेट तो भर सकूं।

शेर की बात सुनकर कौवा, गीदड़, बाघ इधर-उधर घूमने लगे, पर शेर के बिना वे किसका शिकार कर सकते थे। घूम-घाम कर वापस आ गए। फिर एक स्थान पर बैठकर सोचने लगे कि आखिर शेर के लिए खाना कहां से लाएं।

गीदड़ ने कौवे से कहा—भाई, मेरे विचार में तो ऐसे संकट में हमें इस ऊंट को ही अपने राजा का शिकार बना देना चाहिए।

आखिर यह यहां पर मुफ्त का खा-खाकर ही तो पल रहा है।

बात तो ठीक है भाई, पर तुझे यह पता होना चाहिए कि हमारे राजा ने इसे अपना मेहमान बनाया है और मित्र भी, वह कैसे इसे खाएंगे। कौवा गीदड़ की बात सुनकर बोला।

गीदड़ ने हंसते हुए कौवे के कान में कहा, यार तुम इस बात की चिन्ता मत करो। मैं मालिक के सामने इस ढंग की बात करूंगा कि वह स्वयं ही कहेंगे कि यह ऊंट मेरा शिकार बने। तुम लोग यहीं पर ठहरो, मैं अभी मालिक से बात करके आ रहा हूं।

यह कहकर गीदड़ अन्दर मालिक के पास गया और जाते ही हाथ जोड़ कर बोला, महाराज हमने सारा जंगल छान मारा मगर हमें कहीं कोई शिकार नहीं मिला। अब हम में हिम्मत नहीं और आप बहुत भूखे हैं इसलिए हमने सोचा है कि क्यों न इस ऊंट को काट कर आपका शिकार बना दिया जाए।

गीदड़ की बात पर शेर को बहुत क्रोध आया। उसने गीदड़ को डांटते हुए कहा, यह कैसे हो सकता है। ऊंट हमारा मेहमान है। यदि तुमने दोबारा यह बात कही तो मुझसे बुरा कोई न होगा। गोदान, पृथ्वीदान और अन्नदान से भी बढ़कर अभय-दान है।

गीदड़ ने शेर की बात सुनकर कहा, महाराज! यहां पर आपकी जान का प्रश्न है। राजा से कीमती जान प्रजा की नहीं होती। हां यदि आप उसे जबरन शिकार बनाएं तब ही तो पाप है। यदि वह स्वयं को आपके हवाले कर दे तो यह पाप नहीं।

जो तुम लोगों को अच्छा लगे वही करो, मैं इस समय कुछ नहीं कह सकता। शेर ने उत्तर दिया।

गीदड़ ने बाहर आकर उन लोगों से कहा। ऊंट भी वहां आ गया था।

देखो मित्रों! हमारा राजा मर रहा है। इस समय हमें उनके प्राणों की रक्षा करनी है। क्योंकि यही कहा गया है कि—

जिस सेवक के देखते-देखते स्वामी दुःख भोगे, वह सीधा नर्क

में जाता है।

तभी आंखों में आंसू भरे सब के सब शेर के पास जाकर बैठ गये।

"क्यों भाई कुछ खाने को मिला ?" शेर ने पूछा।

कौवा बोला, मालिक ! हम तो थक गए, हार गये···पर कहीं कुछ नहीं मिला। इसलिए आज आप मुझे खाकर ही अपना पेट भर लें। इससे मुझे स्वर्ग मिलेगा। क्योंकि यह कहा गया है कि जो स्वामी के लिए खुशी से जान देता है, उसे मुक्ति प्राप्त होती है।

कौवे की बात सुनते ही गीदड़ बोला, नहीं भाई कौवे ! तुम तो बहुत छोटे हो। तुम्हें खाने से मालिक का पेट नहीं भरेगा, इसलिए मालिक मुझे ही खाकर अपना पेट भर लें, इससे मुझे भी मुक्ति मिलेगी।

गीदड़ के पश्चात् बाघ बोला, नहीं भाई तुम लोगों को मेरे होते हुए यह काम नहीं करना चाहिए। मैं अपने राजा के लिए अपना सारा शरीर देने को तैयार हूं, इससे मालिक की भूख भी पूरी तरह मिट जाएगी।

अब की बार ऊंट ने भी अपने आपको पीछे न हटाया और उसे भी एहसास हुआ कि मुझे अपने भूखे मरते मालिक को बचाना चाहिए। उस सीधे-सादे जानवर को क्या पता था कि यह सब चालाक गीदड़ की चाल है। ऊंट भोलेपन में ही बोला—

भाइयों, यदि तुम लोग मालिक के लिए अपनी जान दे सकते हो तो क्या मैं आपसे पीछे रह सकता हूं। इसलिए मेरे मालिक, तुम मुझे खाकर अपना पेट भर लो।

ऊंट के इतना कहते ही गीदड़ और बाघ उस पर टूट पड़े और देखते-ही-देखते उसे चीर-फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े करके आनन्द से स्वयं भी खाने लगे और साथ ही शेर के आगे भी डाल दिया।

सो मेरे भाई मुझे [illegible] चल गया है कि जिस राजा का

परिवार दुःखी है, उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए।

जिस राजा के मन्त्री ईमानदार न हों उससे प्रजा कभी खुश नहीं रहती।

जैसे गिधों से घिरे हंस से व्यवहार होता है। राजा गिध के समान और मन्त्री लोग हंस के समान होते हैं, ऐसे राजा की सेवा की जा सकती है पर अन्यथा नहीं।

अवश्य ही किसी दुर्जन ने मुझसे इसे क्रुद्ध कर दिया है, तभी ऐसा कहता है। कहा भी है—

कोमल जल की निरन्तर रगड़ से पत्थर भी पिघल जाते हैं, फिर मनुष्यों के कोमल हृदय भेद-नीति कुशलों द्वारा कान भरते रहने से कैसे दृढ़ रह सकते हैं।

बैल ने दमनक की ओर देखकर पूछा, मित्र मैं आपकी सत्य बातों पर विश्वास करता हूं, किन्तु अब यह तो बताओ कि मैं क्या करूं ?

तुम किसी और स्थान पर चले जाओ, ऐसे पापी राजा की सेवा करना बेकार है। यदि कोई गुरु भी पथ-भ्रष्ट हो जाए तो उसे छोड़ देना चाहिए।

मगर मेरे भाई, शेर मेरा शत्रु तो नहीं है। यदि वह मुझसे नाराज है तो मैं जाकर उसे मना लूंगा।

"नहीं, वह घमंडी शेर मानने वाला नहीं है।"

"नहीं मानेगा तो मैं उससे युद्ध करने के लिए तैयार हूं।"

दमनक समझ गया कि बैल हार मानने वाला नहीं। यदि इसने लड़ना आरम्भ किया तो यह शेर को अपने सींघों से मार भी सकता है। कहीं ऐसा न हो मेरा मालिक मारा जाए। उसने सोचा कि किसी तरह से इसे यहां से भागने के लिए मजबूर करूं।

इसलिए उसने अन्तिम प्रयास करते हुए कहा—

देखो भाई ! मालिक और नौकर में युद्ध कभी नहीं होना चाहिए। तभी उसने फिर कहा—

मेरे भाई ! लड़ने में दोनों पक्षों को नुकसान होगा । फिर शत्रु को अपने से कभी कमजोर न समझो । यह जरूरी नहीं कि जीत आप ही की हो ।

"मगर मैं यहां से भागना नहीं चाहता मित्र ।"

भागोगे नहीं तो फिर वही हाल होगा, जो सागर के किनारे वाले टिट्टिभ का हुआ था ।

लो सुनो मैं तुम्हें उस टिट्टिभ की कहानी सुनाता हूं ।

शत्रु को कभी कमजोर न जानो

सागर के किनारे एक टिट्टिभ का जोड़ा रहता था । इन दोनों पति-पत्नी का जीवन बड़े आनन्द से व्यतीत हो रहा था । एक बार जब टिट्टिभ की पत्नी को बच्चा पैदा होने वाला था तो उसने अपने पति से कहा कि हमें कोई ऐसा सुरक्षित स्थान ढूंढ़ना चाहिए जहां पर हम लोग अपने अण्डे दे सकें ।

उसके पति ने कहा, भाग्यवान यह सागर तट बड़ा ही सुन्दर है । हम क्यों न यहीं पर रहें । तुम यहीं पर अण्डे दे दो, यहीं पर हमारे बच्चे होंगे ।

नहीं पतिदेव, आप यह भूल कर रहे हैं । आपको पता नहीं कि पूर्णिमा की रात को समुद्र बढ़ता है, उस समय यह हाथियों को भी अपने साथ बहा कर ले जाता है ।

टिट्टिभ ने हंसकर कहा, यह तुमने ठीक कहा, पर समुद्र की क्या ताकत है, जो हमारे अण्डों को बहा ले जाए । क्या तुमने नहीं सुना कि आकाशचारियों को रोकने वाले धूम्ररहित आग में कौन घुस सकता है ? (कोई नहीं) संसार में ऐसा कौन पागल है जो यह कहे कि यदि तुममें शक्ति है तो मेरे प्राण ले लो । इसलिए निडर होकर यहीं अण्डे दे । तुमने सुना नहीं है कि—

जो हार के डर से अपने स्थान को छोड़ देता है, उस मनुष्य

से माता यदि पुत्रवती है तो बंध्या किससे कहा जाए ?

समुद्र जी इनकी बातें सुन रहा था। उसने सोचा कि यह पक्षी तो बड़ा अभिमानी है, इसीलिए यह रात को सोते समय पांव ऊपर को करके सोता है कि कहीं रात को आकाश टूट कर नीचे आ गिरे तो मैं उसे अपने पांव पर ही रोक लूं। संसार में मन-माना गर्व किसे नहीं होता, इसलिए मैं देखता हूं कि इसकी बात में कितनी ताकत है।

यह सोचकर समुद्र शांत बैठा रहा और उस समय की प्रतीक्ष करता रहा, जब यह टिट्टिभ अण्डे दे।

वह समय आ गया। टिट्टिभ ने अण्डे दिये।

समुद्र जो इसी समय की प्रतीक्षा में था, टिट्टिभ के जाते ही ज्वार-भाटा ले आया और देखते-ही-देखते अण्डे उस पानी में बह गए।

जब टिट्टिभी और उसका पति रात को वापस लौटे तो वहां पर अण्डों का नाम तक नहीं था। टिट्टिभी रोते हुए बोली, जो किसी की अच्छी बात को नहीं मानता, उसका यही बुरा अन्त होता है। वह काठ से गिरे कछुए के भांति नष्ट होता है।

"वह कैसे ?" टिट्टिभ ने पूछा।

वह ऐसे सुनो—

शुभ चिंतकों की बात मानो

किसी तालाब में कछुआ रहता था। वहीं पर उसके दो मित्र बगुले रहते थे। वह बगुले रोजाना ही उसके पास आकर देवी-देवताओं की कथाएं सुनाते और शाम को उड़कर अपने घोंसले में चले जाते।

कुछ समय के पश्चात् जब एक वर्ष वर्षा न हुई तो वह तालाब सूख गया। तब बगुले ने कहा, मित्र अब तो इस तालाब में पानी

नाम मात्र ही रह गया है, अब तुम्हारा क्या होगा ?

कछुआ बेचारा चिन्ता के सागर में डूब गया। बगुले की ओर निराशा से देखता हुआ बोला, भाइयों, आप ही मेरे बारे में सोचो तुम्हारे सिवा हमारा कोई भी तो मित्र नहीं। वैसे तो कहा गया है कि—

संकट काल में धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। जैसे सागर में नाव डूबने पर भी मांझी पार होने की आशा रखता है। और मनु ने भी कहा है कि—

बुद्धिमान पुरुष मुसीबत आने पर मित्र और बन्धु से सदा सहायता की आशा करते हैं। इसलिए आप मुझे यहां से निकाल कर किसी ऐसे तालाब तक ले चलो जिसमें बहुत-सा पानी हो।

"लेकिन तुम जाओगे कैसे ?" बगुले ने पूछा।

तुम लोग एक छोटी-सी लकड़ी ले आओ। उस लकड़ी को तुम दोनों पकड़े रखना और उड़ते रहना। मैं उसे पकड़ कर लटक जाऊंगा, हां ध्यान रखना कि तुम दोनों मुंह न खोलना।

बगुले ! कछुए की बात मानकर एक लकड़ी ढूंढ़ लाए। उस लकड़ी को उन्होंने अपनी दोनों चोंचों में दबा लिया। बीच में कछुआ लटक गया और बगुले उड़ने लगे।

उड़ते-उड़ते रास्ते में कछुए ने एक नगर देखा, यहां के वासी उन्हें देखकर कहने लगे।

देखो ! देखो, कोई गोल चीज बगुले उठाए लिए जा रहे हैं।

उनकी बात सुनते ही कछुआ झट बोल उठा, अरे यह कैसा शोर है।

बस कछुआ अभी अपनी चोंच आधी ही खोल सका था कि लकड़ी से उसका मुंह हटा तो वह धड़ाम से नीचे धरती पर गिरा और वहीं पर मर गया। इसलिए तो कहा गया है। भविष्य को सोचकर काम करने वाला और समय के अनुसार तत्काल निर्णय करने वाला, दोनों मजे में रहते हैं, भाग्य के सहारे जीने वाले कभी सुख नहीं पाते।

"यह कैसे ?" टिट्टिभ झट से बोला।

वह ऐसे—

बलवान शत्रु से बचो

किसी तलाब में तीन मच्छ रहते थे। एक बार कुछ धोबी उस तलाब के पास राह चलते रुक गये, उन्होंने तलाव में झांक-कर देखा तो उनके मुंह में पानी भर आया।

वाह इस तालाब में तो बहुत मछलियां हैं, हमने तो आज तक तालाब में से मछलियां पकड़ी ही नहीं थीं। उस समय शाम हो चुकी थी उन्होंने कहा, चलो कल सुबह आकर इस तालाब में से मछलियां पकड़ेंगे।

उनकी बातों को एक मच्छ ने सुन लिया था। इसने झट से सारी मछलियों को इकट्ठा किया और उन सबको उन मछली पकड़ने वालों की कहानी सुनाई।

"मुसीबत···मौत···को सिर मड़लाते देखकर सबके सब चिंतित हो गये थे, सभी बैठे सोच रहे थे कि इस मौत से कैसे बचा जाए ?"

बहुत सोच-समझ के पश्चात् यह निर्णय किया गया कि इस तालाब को छोड़कर साथ ही किसी दूसरे तालाब में चले जाना चाहिए ऐसे अवसर पर कहा गया है।

शत्रु बलवान हो तो भाग जाना चाहिए या फिर किसी किले का सहारा लेना चाहिए, इसके सिवा और कोई रस्ता नहीं।

जिनका अन्य स्थान पर भी सुख से समय बीत सके वे विद्वान् लोग जाने के कष्ट और स्थान से जुदाई के दुःख को नहीं सोचते।

दूसरे मच्छ ने अपने साथी की बात सुनकर कहा।

भाई आप ठीक कहते हैं, मेरा भी यह विचार है कि हमें यथाशीघ्र इस स्थान से निकल जाना चाहिए। किसी विद्वान ने

कहा है—

अत्यन्त मोही, नपुंसक लोग ही परदेस के नाम से डरते हैं वे कौवे की भांति बुजदिल और हिरण की भांति अपने देश में ही भूखे मरते हैं। जो स्वदेश में भूखा मरे वह मनुष्य क्या ? जो खारे कुएं का पानी इसलिए पीता है कि यह मेरे बाप दादा का बना हुआ है। उसे पागल कहा जाएगा।

सब लोगों ने मिलकर इस तालाब को छोड़ने का निर्णय कर लिए और साथ वाले किसी तालाब में चले गए। सुबह उठते ही जब मछुए बड़े आनन्द से झूमते हुए जाल लेकर उस तालाब में इन मछलियों को पकड़ने आए तो उनके हाथ केवल निराशा ही लगी।

टिट्टिभ बोला, "अरी भाग्यवान, क्या तुम मुझे इतना ही बुजदिल समझती हो ?" मैं इस पापी समुद्र को अपनी चोंच से सुखा दूंगा। मैं बुजदिल मच्छ नहीं जो डरकर भाग जाऊंगा।

वाह ! भला तुम्हारी समुद्र से क्या लड़ाई। इससे क्रोध करना ठीक नहीं। कहा भी गया है।

असमर्थों का क्रोध उनको ही नुकसान पहुंचाता है।

जैसे अत्यन्त गर्म बर्तन पास वाले को ही जलाता है।

अपने शत्रु की शक्ति को न समझकर, जो उत्साह के साथ युद्ध करने जाते हैं। आग में जलते पतंगे की भांति स्वयं नष्ट हो जाते हैं।

टिट्टिभ बोला, नहीं···नहीं···प्रिय ऐसा मत कहो जिनमें उत्साह होता है। बड़े-बड़े कठिन कार्य भी कर जाते हैं। कहा गया है कि क्रोधी पुरुष सदा डरकर शत्रु के सामने जाता है जैसे राहू चन्द्रमा को देखकर भी उसके पास जाता है। भारी शरीर वाले हाथी पर भी शेर पांव रख देता है। निकलते सूर्य की किरणें भी ऊंचे पहाड़ों पर पड़ती हैं, घने अंधेरे छोटे से द्वीप के हाथों भाग जाते हैं। छोटे से बम से भारी पहाड़ भी गिरा दिए जाते हैं। जिसमें तेज हो वह बलवान है। मोटे भारी का क्या

विश्वास। तो मैं इस चोंच से इसके सारे पानी को सुखा दूंगा।

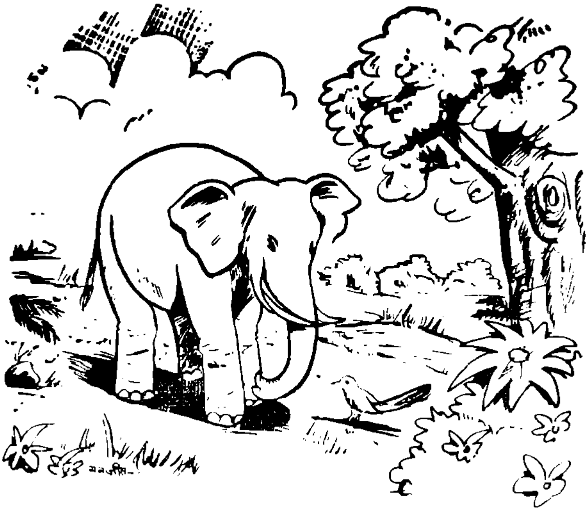
टिट्टिभी बोली। हे स्वामी! जिसमें हर रोज गंगा और सैकड़ों नदियों को लेकर पहुंचती हैं। उस हजारों नदियों से भरे समुद्र को भला तुम एक चोंच से कैसे सुखा दोगे।

मेरी भोली पत्नी यह बात याद रखो कि परिश्रम करने से ही कार्य सिद्ध होता है, मेरी चोंच छोटी है रात-दिन बहुत बड़े हैं। फिर भी क्या समुद्र नहीं सूखेगा। बिना हिम्मत के कुछ नहीं मिलता।

नाथ! यदि तुमने यह निर्णय कर लिया है तो अपने साथ दूसरे लोगों को भी मिला लो। संगठन में ही शक्ति है। बहुत से तिनकों को इकट्ठा करके रस्सी बनाई जाती है जिसमें हाथी बांधा जा सकता है। इस प्रकार मक्ख और मेंढकों के विरोध करने से हाथी भी मारा गया था।

"वह कैसे?" टिट्टिभी ने पूछा।

सुनो यह कहानी।



एकता की जीत

किसी जंगल में गौरैये का जोड़ा रहता था। समय आने पर उन लोगों ने अपने घौंसले में अंडे दिए, दूसरे दिन धूप से दुःखी एक हाथी उस वृक्ष के नीचे आ गया। अपनी ताकत के नशे में आकर उसने उस वृक्ष की वह शाख तोड़ डाली जिस पर गौरैये के जोड़े का घौंसला था।

बस फिर क्या था जैसे ही वह शाख टूटकर गिरी उसके साथ ही गौरैये के अंडे टूट गये। अपने अंडों को टूटें देखकर वे दोनों बेचारे रोने लगे। उन्हें रोते देखकर उनका मित्र। कठफोरवा पक्षी उनके पास आया और बोला।

अरे मित्रों रोने से क्या लाभ, कहा गया है कि पंडित और बुद्धिमान, मरे हुएऔर बीते हुए समय को नहीं सोचते, बुद्धिमान

और मूर्ख में यही अन्तर है।

हम तुम्हारी सब बातें मानते हैं। पर इस समय तो हमें इस पापी को मारने का रास्ता बताओ। जिसने हमारा सब कुछ नष्ट कर दिया है। चटकी ने कहा।

मित्रो आप ठीक कहते हो। सच्चा मित्र वही है जो दुःख में काम आए। अच्छे दिनों में तो हर आदमी मित्र बन जाता है। बुरे समय में कोई पास नहीं ठहरता। खैर तुम चिन्ता मत करो मेरी एक मक्खी मित्र है। मैं उसे अभी बुलाकर लाता हूं। वह हमारे दुःख के समय में अवश्य काम आएगी। मैं अभी उसी के पास जा रहा हूं।

इतना कहते ही वह उस मक्खी के पास गया और जाते ही बोला। बहन मेरी एक चटकी मित्र है। जिसका सारा घर एक हाथी ने नष्ट कर दिया, उसके अंडे फोड़ दिए उसे मारने में मेरी कुछ मदद करो।

मक्खी बोली ! भैया तुम चिन्ता मत करो। मित्र के सदा मित्र ही काम आता है। इस काम के लिए मुझे भी एक मित्र के पास जाना होगा। एक मेंढक मेरा बड़ा पुराना मित्र है। वह अवश्य ही हमारे काम आएगा। उसकी बुद्धि भी बहुत तेज है।

अब यह तीनों मिलकर उस मेंढक के पास पहुंचे, उन्होंने उसे सारा हाल सुनाया। उसने कहा कि क्रुद्ध हुये हुए बहुतों के आगे वो बेचारा हाथी है क्या ? सुनो मेरी तरकीब।

दोपहर के समय मक्खी जाकर उसके कान के आगे वीणा बजाएगी। जिससे वह हाथी मस्त होकर आंखें बन्द कर लेगा। तब कठफोरवा उसकी आंखें फोड़ देगा। जब उसे प्यास लगेगी तो मैं अपनी आवाज एक गहरे गढ़े में से निकालूंगा। क्योंकि वह अंधा होगा। इसलिए मेरी आवाज सुनकर ही पानी का स्थान समझेगा और अपनी प्यास बुझाने के लिए उस गढ़े की ओर आएगा। जब अंधा हाथी उस गढ़े में गिर जाएगा। बस वहां गिरा हाथी दुबारा नहीं निकल पाएगा।

इस प्रकार से इन तीनों ने मिलकर तेज बुद्धि से ही उस हाथी को मार डाला था। अब मैं भी अपनी बुद्धि से ही इस समुद्र को सुखाऊंगा। इसी काम के लिए उसने अपने मित्रों बक, सार, मोर आदि को बुलाकर कहा।

भाइयो, इस समुद्र ने मेरे अंडे नाश करके मुझे अपमानित किया है। सो इसे सुखाने का उपाय सोचो।

तीनों ने बहुत सोच के पश्चात् कहा कि भाई यह काम हमसे नहीं हो सकेगा। भला इतने बड़े समुद्र को हम कैसे सुखा सकते हैं, इसीलिए कहा गया है।

निर्बल भी जो मद से मोहित बलवान शत्रु से भिड़ता है वह युद्ध से ऐसे लौटता है जैसे टूटे दांत वाला हाथी। सो हमें अपने राजा गरुड़ से सब हाल कहना चाहिए। संभव है वह अपनी जाति का अपमान सुनकर क्रुद्ध होकर बदला लेने को सोचे, विद्वान ने कहा है।

"मन मिले मित्र।"
"गुणवान नौकर।"
"आज्ञाकारी स्त्री।"
"बलवान स्वामी।"

इन सबसे अपना दुःख कहकर मनुष्य सुखी होता है।

बस फिर क्या था। सब के सब पक्षी गरुड़ के पास पहुंचे और रोते-रोते अपना हाल सुनाया और साथ ही यह भी कहा कि सागर एक दिन सब पक्षियों को नष्ट कर देगा, क्योंकि लोग एक को बुरा कर्म करते देखकर स्वयं भी बुरा काम करने लगते हैं, बुरे काम के लिए बहुत जल्द नकल करते हैं। अच्छा काम करना बहुत कठिन है। राजा को चाहिए कि चोर, डाकुओं, लुटेरों से प्रजा की रक्षा करें।

इनके दुःखों को सुनकर गरुड़ सोचने लगा। फिर उसने सोचकर कहा कि मैं आज समुद्र से कहूंगा। पहले उसने विष्णु जी के दूत से आकर कहा, भगवान विष्णु से आप जाकर यह कहो कि वे

अत्याचारी सागर को सजा दें, जिसने मेरे मित्र टिट्टिभ के अंडे हर लिए हैं। यदि वे उसे सजा नहीं देंगे तो मैं भी आज से उनकी सवारी का कार्य नहीं करूंगा स्वयं भगवान, वे भी अपने वाहन सेवक की बातें सुन ली थीं। वह वहीं प्रकट हो गए।

गरुड़ ने स्वयं भगवान को आते देखकर अपना सिर झुकाकर नमस्कार किया और बोला, देखो भगवान आपके सेवक समुद्र ने मेरे मित्र के अंडे हर कर मेरा अपमान किया है। मैंने आपके डर से देर की है नहीं तो मैं उसे अभी सुखा देता, क्योंकि स्वामी के डर से तो कुत्ता भी नहीं मारा जाता, बड़ों ने कहा है। जिस काम से मालिक को दुःख पहुंचे या उसका छोटापन जाहिर हो। ऐसे काम मरने तक भी अच्छे नौकरों को नहीं करना चाहिए।

यह सुनकर विष्णु भगवान ने खुश होकर कहा। तुमने ठीक कहा है और कहा गया भी है। नौकर द्वारा किए गए पाप का दंड मालिक को मिलता है। इससे जो भी लज्जा होती है वह भी मालिक को ही होती है। इसलिए आप टिट्टिभ के अंडे समुद्र से वापस लाकर दें फिर हम इन्द्रलोक चलेंगे। इतना कहते ही भगवान ने अग्निबाण चढ़ाकर समुद्र को झिड़कते हुए कहा। हे पापी ! टिट्टिभ के अंडे दे। नहीं तो मैं तुझे भून दूंगा।

भगवान का क्रोध देखकर समुद्र डर गया। उसने झट से टिट्टिभ के अंडे वापस कर दिए। इस प्रकार टिट्टिभ की विजय हुई और विशाल सागर हार गया। तभी तो कहा गया है कि शत्रु का बल बिना जाने—इत्यादि। सो पुरुष को कभी हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए।

यह सुनकर उस बैल ने उस दमनक से फिर पूछा।

"ऐ मित्र ! मैं यह कैसे जानूं कि वह पापी है ? अब तक तो वह मुझसे निरन्तर प्रेम ही करता रहा है। अब मैं उससे कैसे बचाव करूं।"

देखो मित्र ! शत्रु को पहचानने के लिए तुम जब कभी उसके पास जाओ तो देखना कि यदि उसकी आंखें लाल हैं तो समझो

उसे क्रोध आ रहा है। वह तुम्हारा शत्रु है। यदि उसकी आंखें लाल न हो तो समझ लेना वह तुम्हारा मित्र है। अब मुझे आज्ञा दो कि मैं यहां से चलूं, हां इस बात का ध्यान रखना कि हम दोनों की बात का किसी को पता न चले, यदि तुम अपना बचाव करना चाहो तो शाम तक इस जंगल से भागने का प्रयत्न करना, क्योंकि कुल के लिए एक को, ग्राम के लिए कुल को और अपने लिए धरती को छोड़ देना चाहिए। अपने से ताकतवर शत्रु द्वारा हमला करने पर या तो देश छोड़ दो। या फिर उसकी अधीनता कबूल कर लो। यही नीति है। इतना कहकर दमनक करटक के पास चला गया।

करटक उसे देखते ही बोला, "क्यों भाई, क्या नया रंग लगाकर आ रहे हो?"

"अरे भाई! मैंने नीति रूपी बीज तो बो दिया है।"

"कैसा बीज बोया है, जरा मुझे भी तो बताओ।"

"मैंने झूठी बातों से एक दूसरे के विरुद्ध भड़का दिया है। अब तुम उन्हें कभी भी एक साथ बैठे मित्रता की बातें करते नहीं सुनोगे।"

अरे भाई! यह तुमने अच्छा नहीं किया, जो दोनों मित्रों से खुशियां छीनकर उन्हें नफरत की आग में धकेल दिया है, कहा गया है जो प्राणी अपने दुःख को न पहचानने वाले, सुखी प्राणी को दुःखी करता है वह मनुष्य कभी भी सुख नहीं पा सकता।

दमनक...करटक के चेहरे की ओर देखकर बोला। तुम नीति शास्त्र को नहीं जानते भाई! सुनो।

जो शत्रु और रोग को बढ़ने से पहले नहीं मारता वह स्वयं इनके बढ़ने से मारा जाता है।

मंत्री पद को हरण करने, वे जो शत्रु पैदा होते हैं, उन्हें और उनके मित्रों, साथियों को भी साथ ही मार देना अच्छा होता है।

भैया मैं ही उसे शेर के पास ले गया था। उसने सबसे पहले मुझे ही मंत्री पद से हटवा दिया। ऐसे शत्रु को छोड़ना मूर्खता

नहीं तो और क्या है ?

इसलिए अब मैंने उसे मारने का यत्न किया। सदा याद रखो। शत्रु, शत्रु होता है यदि वह मित्र बना भी चाहे तो उसमें भी उसकी कोई चाल होती है। यदि वह बैल मरा न भी तो भी वह इस जंगल, देश को छोड़ कर भाग जाएगा। इसके मरने या भागने से हमें तीन लाभ होंगे।

१. शत्रु से हमारा रास्ता साफ होगा।

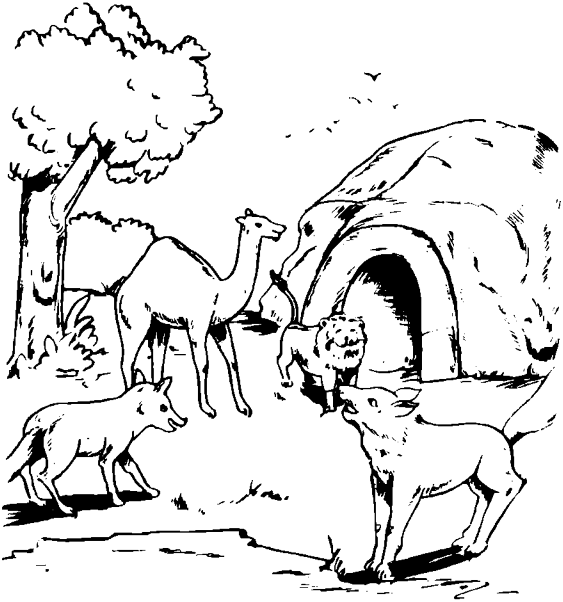
२. हमें पहले की भांति शेर से अच्छा भोजन मिलेगा।

३. मंत्री पद फिर से हमारे पास आ जाएगा।

तुमने उस चतुरक की कहानी नहीं सुनी जिसने अपनी बुद्धि से कितना बड़ा काम किया था।

"कैसा काम ?" करटक बोला।

लो सुनो—



बुद्धिमान ही महान

किसी जंगल में एक भयंकर शेर रहता था । चतुरक और त्रयमुख नामक शृंगाल, एक भेड़िया, एक गीदड़ उसके ही सेवक थे ।

एक दिन एक ऊंटनी उस जंगल में अपने काफिले से बिछड़कर भटकती हुई आ निकली, उसके बच्चा पैदा होने वाला था उस शेर ने ऊंटनी का पेट फाड़कर उसके बच्चे को जीवित ही निकाल लिया और ऊंटनी को खाकर खूब आनन्द लेने लगा । बच्चे को उसने अपने घर में रख लिया था ।

इस प्रकार यह चारों मित्र बनकर उस जंगल में रहने लगे

थे। ऊंट का बच्चा शेर के साथ ही पलकर जवान हुआ था। इसलिए उससे उसका प्रेम भी बहुत था। शेर ने उसका नाम शंकुकर्ण रखा था।

एक बार शेर का किसी मस्त हाथी के साथ युद्ध हुआ। हाथी ने उसे इतना घायल कर दिया था कि वह चल भी नहीं सकता था। तब भूख से दुखी होकर उसने तड़पते हुए कहा कि मेरे खाने के लिए कोई शिकार लेकर आओ। जिससे मैं यहीं बैठे-बैठे मार कर उससे अपना और तुम्हारा पेट भर सकूं।

तीनों ही शेर के लिए शिकार ढूंढ़ने निकले। वे सारा दिन जंगल में घूमते रहे किन्तु उन्हें कोई भी शिकार न मिला। उधर शेर भूखा था। उसके लिए भोजन बहुत जरूरी था। निराश होकर चतुरक ने सोचा, क्यों न इस शंकुकर्ण को ही मार दिया जाए, इससे मालिक की भूख तो मिट जाएगी। हो सकता है ऐसा करने से मालिक नाराज भी हो जाए। पर बुद्धि से काम लेकर मालिक की नाराजगी से भी बचा जा सकता है।

यह विचार कर चतुरक ने शंकुकर्ण से कहा। भाई देखो भूख के मारे हमारा मालिक भूखा मर रहा है। शिकार का कहीं से भी प्रबन्ध नहीं हो सका, इसलिए मालिक के लिए ही तुमसे कुछ कहना चाहूंगा।

"कहो भाई, जल्दी कहो।"

देखो मित्र, बड़ों ने कहा कि भूखे मरते मालिक को बचाने के लिए अपना शरीर भी उसको अर्पण कर दो, इससे तुम्हारा शरीर दुगना हो जाएगा।

"अरे भाई यदि ऐसी बात है तो मैं हाजिर हूं। मालिक से चलकर कहो कि वह मेरा शिकार करके अपना पेट भर ले आखिर उसने ही तो मुझे पाला है।

ऊंट के बच्चे की बात सुन चतुरक बहुत खुश हुआ और वह तीनों इकट्ठे होकर शेर के पास पहुंचे और कहा देखो मालिक कोई शिकार तो हमें मिला नहीं इसलिए यह ऊंट का बच्चा खुशी

से आपको भूख मिटाने के लिए तैयार हो गया है।

"भूखा शेर बोला ठीक है यदि इसकी यही इच्छा है तो इसे मार डालो।" बस फिर क्या था। देखते-ही-देखते उस ऊंट को फाड़ डाला गया। शेर ने चतुरक से कहा, देखो भाई मैं जरा नदी में मुंह-हाथ साफ करके आता हूं। तब तक तुम इसका ध्यान रखना।

शेर के जाने के पश्चात सामने पड़े शिकार को देखकर दोनों के दिल में पापपैदा हुआ क्योंकि भूख तो इन्हें पहले ही लग रही थी। शेर जा चुका था। चतुरक ने भेड़िये से कहा।

"भाई, पहले इसे तुम खा लो, मैं मालिक का ध्यानदेता हूं।"

भेड़िया तो पहले से ही भूखा था। गीदड़ का इशारा पाते ही वह शिकार को खाने ही लगा था कि गीदड़ झट से बोल उठा।

"अरे…अरे…शेर आ गया है।"

भेड़िये बेचारे के मुंह से मांस का टुकड़ा निकल कर गिर पड़ा। वह डर के मारे दूर हट कर खड़ा हो गया।

इस बीच शेर भी आ गया था। उसने जैसे ही अपने शिकार पर दांत गड़े हुए देखे तो क्रोध के मारे बोला।

मेरा शिकार किसने जूठा किया है। अब पहले मैं उसी को खाऊंगा।

शेर को गुस्से से देख दोनों डर गये थे। गीदड़ ने भेड़िये से कहा, "अरे बोल यार क्या अब मुझे भी मरवाएगा।"

भेड़िया समझ गया कि अब तो मेरी मौत आ चुकी है अब शेर मुझे नहीं छोड़ेगा। ठीक उसी समय एक ऊंटों का काफला जंगल से गुजर रहा था। उस काफले के सरदार ने ऊंट के गले में बहुत बड़ा घंटा बंधा हुआ था जिसकी आवाज सारे जंगल में गूंज रही थी।

शेर ने घबरा कर कहा, "अरे यह कैसी आवाज है। कौन आ रहा है इस जंगल में ?" जाओ जरा देखकर आओ।

'शेर की आवाज सुनकर चतुरक उस जंगल की ओर चला

जहां से घंटा बजने की आवाज आ रही थी। थोड़ी ही देर में चतुरक उन ऊंटों को देख वापस आकर बोला।

मालिक ! यह तो गजब हो गया। मुझे तो ऐसा जान पड़ा है स्वयं धर्मराज इस जंगल में हमसे युद्ध करने आ रहे हैं। शायद धर्मराज को इस बात पर क्रोध आ गया है कि आपने इस ऊंट के बच्चे को बेगुनाह मारा है। तभी तो इस ऊंट के मां-बाप और दादा भी धर्मराज के साथ आ रहे हैं।

शेर तो पहले से ही घायल था। उसने दूर से आते ऊंटों को देखा। समझ गया कि धर्मराज आ गए हैं। अब उसे जीवित नहीं छोड़ेंगे। डर के मारे शेर उस शिकार को वहीं पर छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

चतुरक की चल सफल रही थी। शेर भाग गया। अब उनका रास्ता साफ था। दोनों ने मिलकर उस शिकार को खूब पेट भरकर खाया।

× × ×

दूसरी ओर जैसे ही दमनक बैल के पास से गया था तब से ही वह बेचारा सोचने लगा था कि यह मैंने क्या भूल की जो घासाहारी होते हुए भी मांसाहारी शेर से मित्रता कर ली, अब मेरा क्या बनेगा ?

मैं कहां जाऊं ? क्या मुझे उस दमनक के पास जाकर ही कोई रास्ता पूछना पड़ेगा ? किसी ने ठीक ही कहा है कि आग से जले अंग का इलाज आग से ही होता है। अब यदि मैं यहां से कहीं और भी जाऊंगा तो कोई दूसरा मांसाहारी जानवर मुझे मारकर खा जाएगा। इसलिए कहीं और जाकर मरने से अच्छा है कि इसी मित्र शेर के हाथों ही मरा जाए। किसी ने कहा है कि बड़ों के हाथों मरने से भी प्रशंसा होती है।

यह सोचकर बैल बेचारा धीरे-धीरे उस शेर के पास जाने लगा।

वह शेर के पास जाकर बिना प्रणाम किए ही एक ओर बैठ

गया।

शेर को तो पहले ही दमनक सब कुछ बता चुका था। बैल के बारे में पूरी नफरत और घृणा उसने शेर के मन में भर दी थी। शेर की नजरों में अब वह उसका शत्रु था और शत्रु को सामने देखकर शेर उस पर टूट पड़ा था।

"बैल के मन में वही घृणा थी जो शेर के मन में।"

बस फिर क्या था, दोनों में जमकर युद्ध होने लगा। शेर ने अपने पंजे बैल के शरीर में गाढ़ दिये।

बैल ने अपना लम्बा सींग शेर के पेट में घौंप दिया। दोनों के शरीर से खून निकल रहा था।

दमनक और करकट वहां पहुंच गए थे। करकट ने दो मित्रों को इस प्रकार लड़ते देखकर कहा। अरे यार दमनक तूने इन दोनों को लड़वाकर अच्छा नहीं किया। अच्छा मंत्री तो वही होता है जो प्यार से अपना कार्य करे। यदि स्वामी ही मार डाले गए तो तू मंत्री किसका बनेगा ? सामादि की जो चार नीतियां हैं, उनमें दंड नीति का प्रयोग तो सबसे आखिर में करना चाहिए। यदि मीठा देने से शत्रु मर जाए तो जहर देने की क्या जरूरत है। तुम चाहो तो अब भी इन दोनों में संधि करवा सकते हो।

"नहीं···मैं यहीं नहीं करूंगा।" मेरी भलाई इन दोनों की लड़ाई में है, दमनक बोला।

मैं समझता हूं भाई। इसमें तो बुरा कोई दोष नहीं। यह दोष तो केवल उस मालिक का जिसने तुम पर विश्वास किया मगर याद रखना मालिक के साथ धोखा करने वाले लोग कभी-न-कभी ऐसी मुसीबत में फंसते हैं कि वहां से कभी निकल नहीं पाते। किन्तु मूर्ख को उपदेश देने से क्या लाभ ?

"सूखी लकड़ी की आग बुझती नहीं।"

"पत्थर का छुरा काम नहीं करता।" और

सूचीमुख की भांति आपात्र चेले को उपदेश नहीं दिया

जाता।

"यह कैसे भाई ?" जरा मुझे भी तो बताओ।

लो सुनो—

मूर्ख को शिक्षा मत दो

किसी पहाड़ पर बन्दरों का एक झुंड रहता था। एक बार पहाड़ों पर काफी वर्षा और बर्फ पड़ने के कारण ठण्ड बहुत ही अधिक हो गई। इस ठण्ड से बचने के लिए बन्दरों ने एक ऐसे फल को आग समझकर इकट्ठा कर लिया जिसकी शक्ल आग से मिलती थी। इस आग को सुलगाने के लिए सभी बन्दर फूंक मारने लगे, बाकी के बन्दर उसे आग समझ चारों ओर तापने के लिए बैठ गये। इन बन्दरों को देखकर एक पक्षी बोला—

अरे तुम सब पागल हो गए हो, यह अंगारी नहीं यह तो उससे मिलता-जुलता फल है, इससे भला सर्दी कहां दूर होगी। तुम लोग किसी पहाड़ी गुफा में छुपने की बात सोचो, क्योंकि अभी तो बर्फ और गिरेगी।

बन्दरों का सरदार बोला, "अरे तू हमें क्या बताएगा हम सब समझते हैं। हम सब जानते हैं।"

पक्षी ने एक बार फिर कहा, अरे भैया मैं तुम्हारे ही हित की बात कह रहा हूं, तुम इस भयंकर ठण्ड से बचने के लिए कहीं पर भी छिप जाओ नहीं तो मारे जाओगे।

उस पक्षी की बात सुनकर एक बन्दर को क्रोध आ गया उसने उस पक्षी के पर नोंचकर उसे पत्थर पर दे मारा। यह मिला था उस बेचारे को फल भलाई का और शिक्षा देने का।

मैंने तुम्हें कहा न कि मूर्ख को शिक्षा देने का कोई लाभ नहीं। देखो एक मूर्ख बन्दर ने सुन्दर घर वाले को बेघर कर दिया।

"यह कैसे ?" दमनक बोला। सुनो—

बन्दर की उपेक्षा

एक जंगल में किसी घने वृक्ष पर घौंसला बनाए हुए गौरय' का जोड़ा रहता था। वर्षा के दिनों में एक बार थोड़ा-थोड़ा पानी बरसने लगा, उसी समय एक बन्दर वर्षा में भीगा हुआ, ठण्ड के मारे कांपता हुआ उस वृक्ष के नीचे आकर बैठ गया। उसकी यह हालत देखकर गौरैये की पत्नी ने कहा।

अरे भाई, तुम तो मनुष्य जैसे ही लगते हो फिर इस ठण्ड में क्यों मर रहे हो, कहीं छप्पर छाया का प्रबन्ध करो।

उसकी बात सुनकर बन्दर को क्रोध आ गया वह आंखें लाल करता हुआ बोला। अरी ओ तू मेरी हंसी उड़ा रही है। इसीलिए कहा गया है, कोई खुशी से बात पूछे तो बतानी चाहिए, मूर्ख से कहना तो व्यर्थ होता है।

अभी गौरैयनी कुछ और कहने ही जा रही थी कि बन्दर झट से उस पेड़ पर चढ़ गया और उसके पास जाते ही घौंसले के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

इसीलिए तो मैं कहता हूं भाई किसी को व्यर्थ में अकल मत सिखाओ, सदा बुद्धिमान और भले व्यक्ति को ही अच्छी बात सिखाओ। नहीं तो सुबुद्धि नामक पुत्र के व्यर्थ कार्य से जैसे उसका पिता धुएं से मर गया वही हालत होती है।

"कैसे हालत ?" दमनक ने पूछा।

लो सुनो उनकी भी राम कथा।

चालाकी

किसी शहर में धर्मबुद्धि और पापबुद्धि नाम के दो व्यक्ति रहते थे। एक बार पापबुद्धि वाले व्यक्ति ने सोचा कि मैं तो पागल हूं और गरीब भी हूं, इसलिए मुझे धर्मबुद्धि वाले को अपने साथ लेकर किसी दूसरे देश में जाना चाहिए वहां पर इसी सहारे मैं भी अमीर बन जाऊंगा बस फिर क्या, धन कमाने के पश्चात् मैं इसे भी धक्का दे दूंगा।

यही सोचकर वह धर्मबुद्धि के पास गया। जाते ही उसने कहा, अरे भाई, यहां बैठे-बैठे क्या कर रहे हो, चलो हम लोग यहां से किसी दूसरे देश में चलकर घूमें-फिरें, कारोबार करें धन कमाएं। एक ही स्थान पर बैठे रहने से आदमी कभी बड़ा नहीं बन सकता।

धर्मबुद्धि ने उसकी बातें सुनीं तो वास्तव में ही उसे महसूस हुआ कि यहां पर बैठे-बैठे जीवन बेकार हो रहा है। यदि इन्सान को धन कमाना है, कुछ सीखना है तो उसे परदेस में जाना होगा। यही सोचकर उसने अपने माता-पिता से परदेश जाने की आज्ञा ली। इस प्रकार दोनों मित्र परदेश चले गए।

दोनों मित्र परदेश में जाकर दिन-रात काम करते रहे जिससे उन्होंने काफी धन कमा लिया। जैसे ही उनके पास धन आ गया, इस धन कमाने में सारा ही धर्मबुद्धि का हाथ था।

तो उन्होंने सोचा चलो अब घर वापस जाया जाए। यही सोचकर दोनों वापस चल पड़े।

जैसे ही वे लोग अपने शहर के बाहर पहुंचे तो पापबुद्धि ने कहा, अरे भाई ! यह सारा धन घर ले जाना ठीक नहीं है।

क्योंकि धन को देखते ही रिश्तेदार, मित्र आदि उधार मांगने लगते हैं। इसलिए हम थोड़ा सा धन अपने साथ ले चलते हैं बाकी का धन इस जंगल में गढ़ा खोदकर उसमें दबा देते हैं। जब हमें जरूरत पड़ेगी आकर निकाल लेंगे। बड़ों ने कहा है कि—

बुद्धिमान को चाहिए कि थोड़ा-सा धन भी किसी दूसरे को न दिखाए। इससे उसके मन में पाप आ जाता है। जैसे मांस जल में मछलियों द्वारा, पृथ्वी पर कुत्तों द्वारा, आकाश में पक्षियों द्वारा खाया जाता है, वैसे धन वाला व्यक्ति भी इसे किसी-न-किसी प्रकार से खा ही जाता है।

धर्मबुद्धि के मन को पापबुद्धि की बात लग गयी, उसने कहा, हां यार बात तो तुम ठीक ही कहते हो, चलो इस धन को यहीं पर दबा दें।

इस प्रकार इन दोनों मित्रों ने मिलकर जंगल में एक गढ़ा खोदा और उसमें धन दबाकर स्वयं अपने शहर आ गये।

कुछ ही दिनों पश्चात्।

पापबुद्धि ने सोचा कि क्यों न यह सारा धन मैं ही मार दूं? धर्मबुद्धि से चोरी…बस फिर क्या था पापबुद्धि इस शुभ काम में देरी कहां करता। उसने एक रात में उस जंगल में जा उस गढ़े से सारा धन निकालकर उसे वैसे का वैसा ही बन्द कर दिया।

दूसरे दिन वह धर्मबुद्धि के पास गया और जाकर बोला।

मेरे मित्र, आज हमें यह धन निकालकर बांट लेना चाहिए। क्योंकि मेरे घर वालों को धन की आवश्यकता है।

"भला मुझे क्या एतराज है भाई, चलो चलकर यह शुभ काम कर लेते हैं।" धर्मबुद्धि हंसकर बोला।

इसके पश्चात् दोनों ही उस जंगल में गये और उस गढ़े को खोदा, वहां क्या था—? केवल खाली…धन तो पहले से ही हो।

किन्तु पापबुद्धि तो बड़ा ही होशियार था, उसने झट से

कहा देखो भाई धर्मबुद्धि, यह धन तुम ही निकालकरले गये हो। तुम्हारे बिना इस धन का किसी को पता नहीं था।

धर्मबुद्धि बेचारा निर्दोष था, वह क्रोध से भरा हुआ बोला, नहीं यह झूठ है। मैं चोर नहीं, मैंने तो जीवन में कभी झूठ नहीं बोला, कभी चोरी नहीं की।

इस प्रकार दोनों में झगड़ा बढ़ गया, बात न्याय के लिए किसी जज के पास जाने तक पहुंच गई। फैसले के लिए गवाह की जरूरत पड़ी तो उस वृक्ष की गवाही के लिए चुन गया जिसके नीचे धन दबाया गया था। जज ने यही निर्णय दिया कि सुबह होते ही हम सब उस वृक्ष के पास चलेंगे, वही यह बताएगा कि दोनों में से चोर कौन है।

पापबुद्धि के मन में तो चोर था ही उसने घर आकर अपने पिता से सारी बात बताई, दोनों बाप बेटों ने मिलकर फैसला किया कि पिता उस वृक्ष के पास एक गढ़े में छुपकर बैठ जाएगा जहां उससे पूछा जाएगा कि चोर कौन है, तब झट से बोल देगा धर्मबुद्धि।

बस सुबह उठते ही पंचायत के लोगों के साथ, धर्मबुद्धि और पापबुद्धि दोनों ही चले, पापबुद्धि के पिता तो सबसे पहले वहां पहुंच चुके थे, जाते ही जज ने वृक्ष की ओर देखकर पूछा—

"हे वन देवता, तुम ही बताओ कि इन दोनों में से चोर कौन है पापबुद्धि अथवा धर्मबुद्धि ?"

वृक्ष ने तो क्या बोलना था, पापबुद्धि के पिता ने वृक्ष की जड़ वाले गढ़े में बैठे-बैठे झट कह दिया—

"धर्मबुद्धि चोर है—

धर्मबुद्धि भले ही चोर साबित हो चुका था किन्तु किसी को इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा था, स्वयं धर्मबुद्धि हैरान था कि आखिर यह कहानी क्या है ? फिर उसकी तीव्र बुद्धि ने काम किया।

उसने वृक्ष के चारों ओर सूखी लकड़ियां इकट्ठी करके उनमें आग लगा दी।

जैसे ही आग लगी, पापबुद्धि का पिता आग में झुलसता हुआ उस गढ़े में से बाहर निकला, वह आग में जल रहा था, दर्द के मारे चीखें मार रहा था।

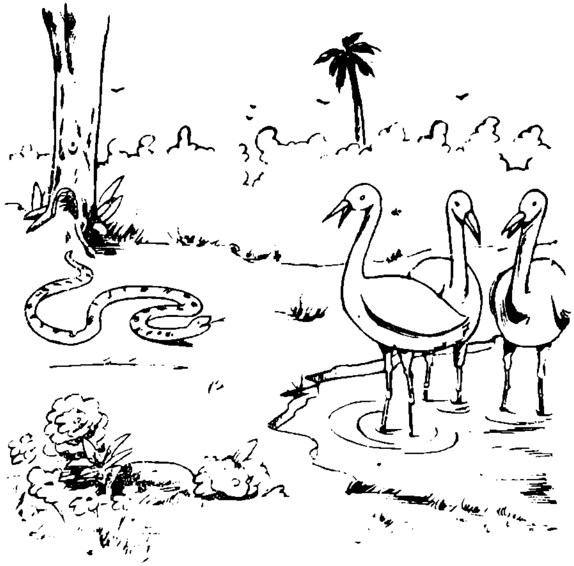
पंचायत के लोग उसे इस हालत में देखकर हैरान रह गये उनकी समझ में कुछ भी तो नहीं आ रहा था।

अन्त में पापबुद्धि के पिता ने तड़पते हुए अपने बेटे की चोरी की सारी बात बता दी और स्वयं उसी समय मर गया।

जज ने पापबुद्धि को दण्ड के रूप में उस वृक्ष पर ही लटका दिया और कहा कि बुद्धिमान को चाहिए कि उपाय सोचे, पर साथ ही बाधा को भी सोचे, क्योंकि मूर्ख वक के देखते-देखते नेवले ने सारे वक मार डाले।

"वह कैसे—?" धर्मबुद्धि ने पूछा।

लो सुनो—



बाधा को पहले सोचो

किसी जंगल में एक बूढ़े वृक्ष के नीचे बहुत सारे बगुले रहते थे, उस वृक्ष की जड़ में एक काला सांप रहता था। यह सांप बगुले के बच्चों को सदा ही खा जाता था। इसी दुःख के मारे एक बगुला तालाब के किनारे आंखें नीचे किए बैठा रो रहा था, उसे रोते देखकर एक केकड़े ने पूछा—

"मामा! क्या बात है आप रो क्यों रहे हैं?"

भांजे, मेरे बच्चों को वृक्ष के नीचे रहने वाला सांप आकर खा जाता है। उससे बचने का कोई उपाय बताओ।

केकड़े ने सोचा, यह बगुला हमारी जाति का दुश्मन है, इसलिए इसको ऐसा उपाय बताऊं कि यह भी परिवार सहित

नष्ट हो जाए। यही सोचकर केकड़े ने उस बगुले से कहा—

देखो मामा, तुम मछली के मांस के टुकड़े सांप के बिल से लेकर नेवले के बिल तक रख आओ, बस उधर से नेवला निकलेगा और आते ही सांप को खा जाएगा, बस तुम्हारा शत्रु अपने आप मर जाएगा।

बगुला केकड़े की बात सुनकर खुशी-खुशी घर लौटा। उसने आते ही वही किया जो केकड़े ने कहा था।

नेवला मछली के मांस को सूंघता हुआ सांप के बिल तक पहुंच गया और वहां पहुंचकर सांप को खा गया। किन्तु उसके साथ ही वह वृक्ष पर चढ़कर उन बगुलों को भी खा गया जो वहां पर बैठे थे।

इस प्रकार बगुले स्वयं भी मर गये, उस बगुले ने पाप की बात तो सोच ली पर उसके परिणाम की गहराई को नहीं समझा। इस प्रकार पापबुद्धि ने चोरी की बात तो सोच ली उसके परिणाम के बारे में नहीं सोचा। उसका परिणाम यही हुआ कि उसके पिता की मृत्यु हो गई। जज ने धर्मबुद्धि को समझाते हुए कहा।

करटक ने कहा जहां पर वजनी लोहे के तराजू को चूहे खा जाते हो, वहां यदि चालाक बाज बालक को ले जाएं तो क्या सन्देह।

"यह कैसे ?"

लो सुनो—

सेर को सवा सेर

किसी नगर में जीर्णधन नाम का एक बनिया रहता था। किसी कारणवश उसे कारोबार में घाटा पड़ गया तो वह दुःखी होकर परदेश जाने की बात सोचने लगा। बाहर जाने के लिए

भी धन की जरूरत थी। उसने अपनी इस जरूरत को पूरा करने के लिए अपने पूर्वजों का तराजू किसी के पास गिरवी रखकर उससे कुछ रुपये उधार ले लिए।

कुछ समय के पश्चात् जैसे ही वह परदेस से धन कमाकर वापस आया तो उसने सबसे पहले अपनी तराजू वापिस लेनी चाही, लेकिन जैसे ही वह उस आदमी के पास पहुंचा और अपनी तराजू वापिस लेने के लिए कहा तो वह बोला—

"भाई उस तराजू को तो चूहे खा गये।"

जीर्णधन ने बड़े धैर्य से कहा, कोई बात नहीं मित्र ऐसा हो जाता है। अब मैं जरा नदी पर नहाने जा रहा हूं, तुम अपने लड़के के हाथ नहाने का सामान नदी पर भेज देना। उस साहूकार ने झट से अपने बेटे को बुलाकर उसे नहाने का सामान नदी पर ले जाने के लिए कहा।

साहूकार का बेटा सामान ले नदी पर चला गया, उस व्यक्ति ने नदी में नहाकर उस साहूकार के लड़के को गुफा में बन्द कर दिया और द्वार को बहुत बड़े पत्थर से ढांप दिया।

जैसे ही वह वापस साहूकार के पास आया तो उसने पूछा, भाई मेरा लड़का कहां है?

"अरे! उसे तो नदी तट से बाज उठाकर ले गया।"

साहूकार चीखकर बोला, झूठे कहीं बाज भी बालक को ले जा सकता है, तू मेरा पुत्र मुझे ला दे नहीं तो मैं जाकर राजा से कहूंगा।

जीर्णधन झट से बोला। यदि लड़के को बाज उड़ाकर नहीं ले जा सकता तो लोहे की तराजू को चूहा कैसे खा सकता है? इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं कि मेरा तराजू मुझे दे दें और अपना लड़का ले लें।

इस प्रकार से दोनों झगड़ा करते हुए राजा के पास पहुंचे साहूकार ने जोर-जोर से चिल्लाकर कहा—

"अनर्थ हो गया, अनर्थ हो गया, इस चोर ने मेरा पुत्र चुरा

लिया, तब राजा ने इन दोनों को बुलाया और जीर्णधन से बोला—

"अरे, भाई तुम इसका बेटा वापिस दे दो।"

महाराज! यह मेरे वश की बात नहीं, उसे तो मेरे देखते-देखते नदी तट से बाज उठाकर ले गया।

राजा ने कहा, यह झूठ है। भला कभी बाज भी बालक को उठा सकता है।

तब जीर्णधन बोला, महाराज मेरी तो सुनिए, यदि एक लोहे की भारी तराजू को चूहे खा सकते हैं तो एक बालक को भी बाज ले जा सकता है।

राजा ने आश्चर्य से पूछा—यह कैसे।

तब जीर्णधन ने सारी कहानी राजा को आरम्भ से लेकर अन्त तक सुना दी।

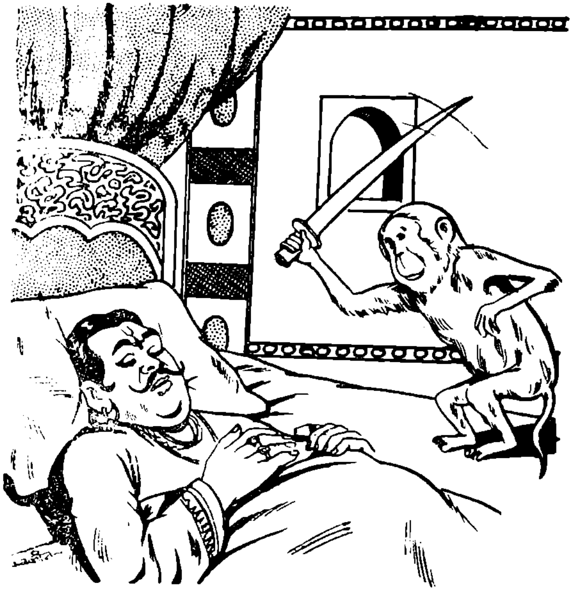
तब राजा ने उन दोनों से कहा—भाई तुम्हारा झगड़ा तो कुछ नहीं, अब तुम उसका तराजू वापस दे दो, वह तुम्हारा पुत्र वापिस दे देगा। न तराजू को चुहे खाते हैं और न ही लड़के को बाज उठाते हैं।

सो मेरे भाई! बैल के प्रति शेर की कृपा दृष्टि को न सहन करते हुए यह सब किया है। तूने हित को भी अहित में बदल दिया है। कहा भी है—

"विद्वान् शत्रु भी अच्छा, किन्तु मूर्ख मित्र अच्छा नहीं। जैसे बानर ने राजा को मार दिया, पर चोर शत्रु ने पण्डितों की रक्षा की।"

दमनक ने पूछा—यह कैसे।

वह बोला—



पागल मित्र से बुद्धिमान शत्रु अच्छा

एक राजा ने बड़े प्यार से एक बन्दर को पाला। राजा और बन्दर में बहुत ही प्यार था। वास्तव में वह बन्दर भी राजा का सच्चा सेवक था। जो राजा के बहुत से काम अपने आप कर दिया करता था। इस राजा और बन्दर की मित्रता आदर्श था।

एक बार दोपहर में राजा जी सो रहे थे, गर्मी से राजा को बचाने के लिए बन्दर पंखा कर रहा था। एक मक्खी बार-बार राजा की छाती पर आ बैठती, बन्दर पंखे से उसे हर बार उड़ा देता, मक्खी उड़ती और फिर वहीं पर आकर बैठ जाती। बन्दर को इस मक्खी पर क्रोध भी आया उसने सामने पास टंगी हुई तलवार को उठाकर उसकी छाती पर बैठी मक्खी पर भरपूर

वार किया, तो···मक्खी तो उड़ गई और राजा जी के शरीर के दो टुकड़े हो गये।

इसलिए जो राजा अधिक समय तक जीना चाहें तो उसे मूर्ख सेवक नहीं रखने चाहिए।

× × ×

एक शहर में एक बहुत बड़ा विद्वान पंडित रहता था। किन्तु किसी कारणवश वह बेचारा चोर बन गया। एक दिन उसने किसी बाहर के देश से आए चार ब्राह्मणों को कुछ कीमती चीजें बेचते देखा तो उसके मुंह में पानी भर आया। वह सोचने लगा कि इन्हें कैसे पाऊं।

वह थोड़ी देर सोचकर उनके पास पहुंचा और ऊंचे-ऊंचे श्लोक बोलने लगा। उसे इस प्रकार श्लोक पढ़ते देख वे ब्राह्मण बड़े खुश हुए और उन्होंने इस ब्राह्मण को अपना नौकर रख लिया। किसी ने ठीक ही कहा है—

"अत्यन्त शर्मीलो स्त्री कुल्टा होती है।"

"खारा पानी ठण्डा होता है।"

"मीठी बातें करने वाला पुरुष धूर्त होता है।"

उन चारों ब्राह्मणों ने उन चीजों को बेचकर और भी कीमती सामान खरीदा। उस ब्राह्मण सेवक ने सोचा कि क्यों न मैं इन चारों को रास्ते में ही जहर देकर मार डालूं और सारा सामान लेकर चलता बनूं। इस प्रकार मैं अमीर बन जाऊंगा।

वे पांचों ब्राह्मण चलते-चलते एक गांव के पास से गुजरे तो वहां पर बैठे नाईयों ने उन्हें देखते ही शोर मचाना आरम्भ कर दिया—

अरे गांव वालो, दौड़ो···दौड़ो···पकड़ो··· यह बहुत बड़े धनी हैं, लाखों रुपये का माल है इनके पास, छीन लो···।

नाईयों की आवाज सुन, गांवों के लोग लाठियां और भाले लिए हुए घरों से निकल आए। आते ही उन्होंने इन पांचों ब्राह्मणों को घेरकर उनकी तलाशी ली, किन्तु आश्चर्य की बात

यह कि उनके पास से तो कुछ भी न निकला। गांव वालों ने उनसे कहा -

देखो ब्राह्मणों, इन नाईयों की बात आज तक झूठी नहीं निकली धन तो तुम्हारे पास जरूर है, इसलिये तुम अपने आप उस धन को निकाल दो नहीं तो हम तुम्हारे शरीर की चमड़ी तक उधेड़कर उसमें से भी धन निकाल लेंगे।

उनकी यह बात सुन जो चोर ब्राह्मण था उसने सोचा कि मैं तो इनका नौकर हूं और पापी भी हूं फिर क्यों न इन ब्राह्मणों के लिए अपने आपको कुर्बान कर दूं, इससे मेरे पुराने पाप भी धुल जाएंगे मौत तो इन्सान की कभी-न-कभी आनी ही है।

यह सोचकर उसने गांव वालों से कहा, अरे भाईयो, तुम सबसे पहले मेरे शरीर अंग काटकर देखो, यदि तुम्हें इसमें से धन मिल गया तो ठीक समझ लेना कि इन चारों की शरीरों में धन होगा, नहीं तो इनको मारने का भी कोई लाभ नहीं होगा।

उस ब्राह्मण की बात सुनते ही उन्होंने उसके शरीर को काट डाला और चमड़ी उधेड़ डाली, किन्तु उसके पास धन था ही नहीं तो निकलता कहां से। जब उसके पास धन न निकला तो गांव वालों ने उन चारों ब्राह्मणों से कहा कि तुम अब जा सकते हो।

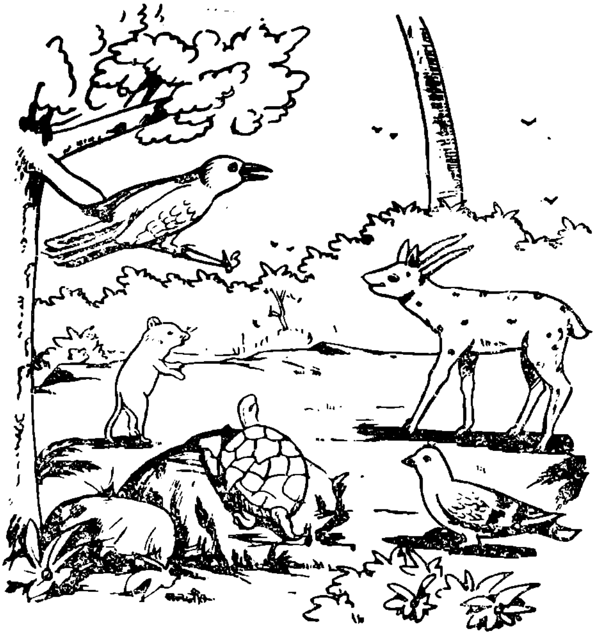
इसीलिए मैं कहता हूं कि पंडित शत्रु भी अच्छा होता है।

अभी करटक और दमनक दोनों यह बातें कर ही रहे थे कि शेर ने अपने मित्र बैल को मार डाला। बैल को मरा देखकर शेर रोने लगा था और कह रहा था कि वास्तव में ही तुम मेरे अच्छे मित्र थे, तुम्हारे जैसा मित्र मुझे इस दुनिया में नहीं मिलेगा। तुम्हें मारकर मैंने वहुत बड़ा पाप किया है।

शेर को इस प्रकार रोते देखकर दमनक ने प्यार से कहा—

महाराज, मां, बाप, पुत्र, पत्नी यदि कोई भी प्राण लेने आवें तो उसे मार देना ही अच्छा होता है, शत्रु को मारने से कोई पाप नहीं होता।

दमनक के समझाने पर शेर ने अपने आंसू पोंछ डाले और साथ ही बैल के स्थान पर दमनक को अपना मन्त्री बना दिया, दमनक की यह चाल सफल हुई।



अब पछताए क्या होत

दक्षिण प्रदेश के एक बड़े नगर के बाहर बरगद का पुराना पेड़ था, उस पेड़ की घनी छाया में आने-जाने वाले मुसाफिर बैठकर विश्राम किया करते थे। उस पेड़ पर एक कौआ रहता था।

एक बार यह कौवा नगर की ओर उड़ा जा रहा था कि रास्ते में एक शिकारी को जाल फैलाए हुए देखा। उसे देखकर कौवे ने सोचा कि यह शिकारी आज अपने बरगद के वृक्ष की ओर चला गया तो न जाने कितने पक्षियों को जाल में फंसाकर ले जाएगा।

यही सोचकर कौआ वहीं से वापस आ गया और आते ही

उसने बरगद पर रहने वाले पक्षियों को तत्काल बुलाया और बोला ।

भाइयो ! यह सामने से जो आदमी आ रहा है, इसके पास जाल है । हमें फांसने के लिए दाना डालेगा । इस दाने को तुम लोग जहर समझना ।

अभी कौवा यह बात कह ही रहा था कि वह शिकारी वृक्ष के नीचे आ गया । उसने आते ही वृक्ष के नीचे चारों ओर दाना बिखेर दिया और अपना जाल फैलाकर दूर आराम से बैठ गया । बरगद पर बैठे सभी पक्षी तो कौवे की बात मानकर अपनी जान बचा कर चुप बैठे तमाशा देख रहे थे । इसी बीच कबूतरों का एक झुंड इधर से आ निकला । बिखरे हुए दाने को देख उनके मुंह में पानी भर आया । वहां पर बैठे दूसरे पक्षियों ने उन्हें मना किया किन्तु वे नहीं माने और उस दाने पर टूट पड़े । बस फिर क्या था, दाना खाने की बजाए वे सब के सब शिकारी के जाल में फंस गए थे । किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है ।

जबान के स्वाद के कारण जल में रहने वाली मछली के समान लालची अज्ञानी लोगों की हत्या होती है ।

"जैसे रावण ने पराई स्त्री को हरण कर अपने पाप को स्वीकार नहीं किया ।"

"श्रीराम ने सोने का हिरण होने की असंभावना क्यों न जानी ?"

"धर्मपुत्र युधिष्ठिर, जुए की चाल में कैसे फंस गए ?"

वास्तव में जब भी इंसान पर कोई मुसीबत आती है तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ।

इधर वह शिकारी उन पक्षियों को जाल में फंसे देखकर अपने स्थान से दौड़ा । उन पक्षियों के सरदार ने कहा, भाइयो तुम डरो मत । मुसीबत में घबराने से काम नहीं चलता । दुःखों में बुद्धि से काम लेना चाहिए । बुद्धिमान लोग दुःख और सुख को समान ही समझते हैं । जैसे सूर्य का रंग सुबह और शाम एक ही जैसा लाल

होता है। इसलिए हमें हिम्मत से काम लेते हुए इस जाल समेत ही उड़ जाना चाहिए। यह पापी शिकारी देखता ही रह जाएगा। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो सब के सब मारे जाएंगे।

बस फिर क्या था।

देखते-ही-देखते कबूतर उस जाल समेत ही वहां से उड़ गये शिकारी बेचारा कुछ देर तो उनके पीछे भागा, इस आशा पर कि शायद यह नीचे गिर जाएं।

किन्तु वह बेचारा हाथ मलता ही रह गया। शिकार तो उसे क्या मिलना था। उसका तो जाल भी साथ गया।

ऊपर कबूतर बेचारे जाल में फंसे उड़े जा रहे थे। उनको इस बात की चिन्ता सता रही थी कि इस जाल की रस्सियों को कौन काटेगा। सहसा कबूतरों के सरदार को अपने पुराने मित्र चूहे की याद आई जो इसी जंगल में वृक्ष के नीचे रहता था। यही सोचकर वे सब के सब उस चूहे के पास पहुंच गए। उस कबूतर ने बिल के पास पहुंचकर चूहे को आवाज देकर कहा।

"अरे भाई! जल्दी से बाहर आओ। हम लोग बड़ी मुसीबत में फंस गए हैं।"

"चूहे ने अन्दर से ही आवाज दी। अरे भाई तुम कौन हो? कहां से आए हो? क्या काम है?" यह सब बताओ।

"मैं कबूतरों का सरदार तुम्हारा पुराना मित्र हूं। तुम जल्दी से बाहर आओ। बहुत जरूरी काम है।"

चूहा अपने मित्र की आवाज सुनकर बाहर निकल आया।

चूहे ने अपने मित्र और उसके साथियों को जाल में फंस देखकर कहा, मित्र! यह क्या?

"भाई जानते हुए क्या पूछते हो। वास्तव में जैसा करें वैसा ही भोगना पड़ता है। अब तो हमें इस जाल से निकालो।"

चूहे ने कबूतर की आवाज सुनकर कहा, जो पक्षी दूर से माल को देख लेता है। वह जाल को भूल जाता है। बुद्धिमान पुरुषों की सुस्ती देखकर तो मेरा यही विचार होता है कि भाग्य बड़ा

बलवान होता है और आकाश में उड़ने वाले पक्षी भी मुसीबत में फंस जाते हैं। गहरे सागर में रहने वाली मछलियां भी मारी जाती हैं। इससे पता चलता है कि क्या पाप है, क्या पुण्य। यह कह कर वह कबूतरों के बन्धन काटते हुए बोला, भाई। देखो पहले मेरे साथियों के बन्धन काटो बाद में मेरा काटना।

चूहे ने कहा, "भाई देखो पहले तुम आजाद हो जाओ फिर इनके बारे में सोचना।"

"भाई देखो यह सब मेरे मित्र हैं और अपने-अपने परिवारों को छोड़कर मेरे साथ आए हैं। मैं इनका सम्मान कैसे करूं ?" कहा है—

जो राजा अपने सेवकों का सम्मान करता है। धन का अभाव होने पर भी वे लोग राजा का साथ नहीं छोड़ते और विश्वास ही सब चीजों की जड़ है। तभी तो हाथी अपने झुंड का राजा कहलाता है और पशुओं का राजा होते हुए भी शेर के पास कोई पशु नहीं जाता। दूसरे यदि मेरा जाल काटते हुए तुम्हारा एक भी दांत टूट गया या फिर पापी शिकारी भी आ गया तो मेरे लिए नर्क में गिरना होगा। कहा भी है—

सदाचारी सेवकों के दुःखी रहते जो राजा आनन्द मनाता है। वह इस जन्म में दुःखी रहता है और मर कर नर्क में जाता है।

मेरे भाई ! मैं राज धर्म को नहीं जानता हूं। मैं तो केवल तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। अब मैं पहले तुम्हारे साथियों के बन्धन काटूंगा फिर तुम्हारे। इस प्रकार आप भारी परिवार वाले होंगे और फले फूलेंगे। इसीलिए कहा है।

जो राजा अपने नौकरों पर सदा दया दृष्टि रखता है और योग्यता अनुसार उन्हें वेतन आदि देता है। वह तीनों लोकों की रक्षा करने की हिम्मत रखता है। यह कह उसने उन सबके बन्धन काट दिए और कबूतर से बोला।

मित्र ! यदि जीवन में कभी मेरी जरूरत पड़े तो आना, यह कहकर चूहा अपने बिल में घुस गया। कबूतर भी अपने साथियों

के साथ उड़ गया। ठीक ही कहा जाता है कि अच्छे मित्र वाले अत्यन्त कठिन कामों को भी पूरा कर लेते हैं। इसलिए अपने अच्छे मित्र बनाने चाहिए।

कौवा कबूतर के बन्धन और सारी कहानी को सुनकर हैरानी से सोचने लगा। इस चूहे की कैसी बुद्धि और किले जैसा रक्षा स्थान है। इसी तरह बन्धन से छुटकार पाने की इन पक्षियों की तरकीब भी कैसी रही। चंचल स्वभाव होने के कारण मैं किसी पर विश्वास नहीं करता, पर फिर भी उस चूहे को मित्र बनाऊंगा। कहा भी है—

सब गुण होते हुए भी बुद्धिमानों को अच्छे मित्र अवश्य बनाने चाहिए जैसे सागर सब कुछ होते हुए भी चांद के निकलने की प्रतीक्षा करता है। यह सोचकर कौवा वृक्ष से उतर कर चूहे के बिल के पास जाकर कबूतर जैसी आवाज निकालकर उसे बुलाने लगा। आओ भाई··बाहर आओ—

उसकी आवाज सुनकर चूहे ने सोचा, शायद और कोई कबूतर बन्धन काटने से रह गया है। जो मुझे फिर से बुला रहा है और बोला।

"भाई तुम कौन हो ?"

"मैं एक कौवा हूं मित्र !"

यह सुनते ही चूहा जल्दी से बिल के नीचे घुसकर बोला, यहां से जल्दी ही किसी और स्थान पर चले जाओ।

मैं तो आपके पास बहुत जरूरी काम से आया हूं। क्या तुम मुझसे मिलोगे ?

नहीं भाई ! मैं आपसे नहीं मिल सकता।

भाई, मैंने तुम्हें कबूतरों के बन्धन काटते देखा। इसलिए मुझे तुमसे प्यार हो गया है। यदि मैं कभी किसी जाल में फंस गया तो मैं भी तुम्हारी सहायता से छूट सकूंगा। इसलिए आओ हम मित्रता कर लें।

चहा बोला, वैसे तुम मेरे शिकारी हो और मैं तुम्हारा शिकार,

भला तुम्हारी और हमारी मित्रता कैसी ? कहा भी है।

जिनमें धन और कुल की समानता हो उन्हीं में विवाह होता है। निर्बल और ताकतवर में नहीं और जो लोग अपने से कम बुद्धि वाले अथवा अधिक बुद्धि वाले लोगों से मित्रता करते हैं वह हंसी का पात्र बनते हैं। इसलिए आप जाइये।

भाई ! मैं आपके द्वार पर बैठा हूं। यदि तुम मुझसे मित्रता नहीं करोगे तो मैं अपनी जान दे दूंगा।

"अरे भाई तुम मेरे शत्रु हो। मैं तुमसे मित्रता कैसे करूं ?"

कौवे ने हंसकर कहा, अरे भैया ! आज तक हमने एक-दूसरे को देखा भी नहीं फिर हमारी दुश्मनी कैसी ?

देखो दुश्मनी दो प्रकार की होती है। १. स्वाभाविक २. किया हुआ। तो तुम हमारे सब शत्रु हो। कहा भी गया है— कृत्रिक शत्रुता एक बार कृत्रिम गुणों से नष्ट भी हो जाती है परन्तु जन्मजात बैर जान लिए बिना नहीं जाता।

"भैया ! दोनों प्रकार की दुश्मनी के लक्षण बताओ।"

भाई ! जो किसी कारण से शत्रुता हो जाए वह तो कृत्रिम होती है। वह इस कारण से दूर हो जाने पर समाप्त हो जाती है, पर स्वाभाविक शत्रुता कभी नहीं जाती। जैसे सांप और नेवले की मांसाहारी और घासाहारी की, आग और पानी की, देव और राक्षसों की, कुत्ते और बिल्ली की, अमीर और गरीब की, सौतों की। सिंह और हाथी की, शिकारी और हिरण की, ब्राह्मण और दुष्ट की। यद्यपि इनमें से किसी ने किसी को समाप्त नहीं किया। पर फिर भी एक-दूसरे को देखकर जलते रहते हैं।

चूहे की बात सुनकर कौवा बोला, भाई यह सब बेकार की बातें हैं। मेरी बात सुनो, किसी कारण से ही मित्रता और किसी कारण से शत्रुता होती है। संसार में बुद्धिमानों से मित्रता करनी चाहिए शत्रुता नहीं। इसलिए तुम मुझसे मित्रता करो मेरे भाई हम दोनों मिलकर रहेंगे।

भैया ! यदि नीति का सार सुनो जो दुष्ट एक ही बार देखे

गए से मित्रता करना चाहता है। वह उसी प्रकार मृत्यु को बुलाता है जैसे खच्चरी गाभिन होकर मर जाती है। यों तो मैं गुणी हूं जो मेरे साथ बैर न करेगा, ऐसा भी नहीं है। कहा गया है—

शस्त्राकार जैमिनी मुनि को हाथी ने मार दिया और छन्द-शास्त्रके प्रणेता पिंगलाचार्य को सागर तट पर मगर खा गया।

प्रिय भाई चूहे ! यह सब तो ठीक है, पर सुनो उपकार से सदाचार लोग, किसी कारणवश, पशु-पक्षियों से भय और लोभ से सूचों में और सज्जनों में दर्शन से ही मित्रता हो जाती है। दोपहर से पहले और बाद को छाया के समान दुष्टों और सज्जनों में मित्रता होती है। दोपहर के पहले की छाया पहले लम्बी फिर छोटी और फिर धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। बाद की छाया धीरे-धीरे बढ़ती जाती है, सो मैं सज्जन हूं और फिर कसम खाकर आपको निर्भय कर दूंगा।

मुझे तुम्हारी कसम का विश्वास नहीं। कहा भी गया है। कसम खाकर संधि करने वाले शत्रु का विश्वास न करो, सुनते हैं सौगंध खाकर भी इन्द्र ने वृत्र को मार डाला और विश्वास दिलाकर अपनी (विमात) के गर्भ को नष्ट कर डाला। अच्छे काम करके मित्रता कर लेना यह चाणक्य नीति है और मित्र संगठन द्वारा बल बढ़ाना यह नीति शुक्राचार्य की है तथा किसी पर विश्वास न करना यह वृहस्पति की नीति है। यह तीन प्रकार की नीति कही गई है महान् पुरुष भी, शत्रु व स्त्री पर विश्वास करके नष्ट होता है।

"चूहे की बातें सुनकर कौवा समझ गया कि वास्तव में ही यह बड़ा ज्ञानी है। इससे मित्रता करके मैं बहुत कुछ सीख सकता हूं, किन्तु इसका संदेह ?"

कुछ देर सोचने के पश्चात् कौवे के दिमाग में एक नई बात आ गई थी। वह झट से बोला। देखो मित्र यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है तो तुम एक मित्र के नाते बिल के अन्दर से ही बातचीत कर लिया करो, इससे तुम्हारा डर जाता रहेगा और

मैं तुम्हारी मित्रता से लाभ उठाता रहूंगा।

कौवे की बात सुनकर चूहे ने सोचा। यह तो बड़ा चतुर और सच्चा प्राणी लगता है। इससे मित्रता करना ठीक ही रहेगा। यह सोचकर वह बोला। देखो तुम कभी मेरे बिल में पांव भी न रखना। कहा गया है। शत्रु पहले धीरे-धीरे सरकता है। फिर जोर से भागता है। जैसे कामी पुरुष स्त्री पर धीरे-धीरे डोरे डालता है।

कौवा खुश हो गया और बोला। देखो भैया मुझे केवल तुम्हारी मित्रता चाहिए। जैसे भी तुम कहोगे वैसे ही मैं करूंगा।

× × ×

बस इस प्रकार यह दोनों सच्चे मित्र बनकर रहने लगे। दोनों में बहुत प्यार हो गया। दोनों ही जो भोजन लाते मिल बांट कर खा लेते। कहा भी गया है देना-लेना। गुप्त बातें कहना। पूछना खाना तथा खिलाना, यह छह प्रकार की नीति के लक्षण हैं। इस प्रकार इन दोनों मित्रों में दिन-प्रतिदिन प्यार बढ़ने लगा।

एक दिन कौवे ने रोते हुए चूहे से आकर कहा, भैया अब तो इस देश से मन खट्टा हो गया है अब कहीं और जाऊंगा।

"भैया! यह मन खट्टा होने का कारण क्या है?"

भाई चूहे! इस देश में वर्षा न होने से अकाल पड़ गया है। जिसके कारण लोग भूखे मर रहे हैं। अपनी भूख मिटाने के लिए लोगों ने घर-घर में जाल फैला रखे हैं। मैं भी एक जाल में फंस गया था। यह मेरी तकदीर अच्छी थी जो उस जाल से निकल आया।

"तो फिर अब तुम कहां जाओगे?"

दूर कहीं घने जंगलों के बीच एक तालाब है, वहां पर तुम्हारे जैसा मेरा एक प्रिय मित्र कछुआ रहता है। वह मुझे मछलियों के मांस के टुकड़े देगा बस उन्हें खा-खाकर मैं अपना बुरा समय काट दूंगा। अब मैं यहां पर रहकर पक्षियों को जाल में फंस-फंस कर मरते देखना नहीं चाहता। कहा गया है कि विद्वान के लिए

विदेश क्या है। मीठा बोलने वाले के लिए पराया क्या है ?

"अरे भाई, यदि यह बात है तो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।" चूहे ने कहा।

"मगर मित्र तुम्हें यहां क्या दुःख है ?"

"यह बात मैं तुम्हें वहीं पर चलकर बताऊंगा।"

"लेकिन भैया, मैं आकाश में उड़ने वाला पक्षी हूं मैं तो उड़कर जाऊंगा किन्तु तुम…"

"अरे मित्र! क्या तुम मुझे अपने परों पर बैठाकर नहीं ले जा सकते ?"

वाह तुमने भी यह बात क्या कह दी, अरे मैं तो मित्र के लिए अपनी जान दे सकता हूं परों पर बैठाना तो बहुत छोटी-सी बात है।

तो फिर क्या सोच रहे हो। चलो, हम तो यारों के यार हैं। यारों के साथ जिएंगे और यारों के साथ मरेंगे।

इतना कहने के पश्चात् चूहा कौवे के परों पर बैठ गया और कौवा उड़ता हुआ उसे उस तालाब तक ले गया। तालाब पर जाकर उसने अपने मित्र कछुए को आवाज दी।

कछुआ अपने मित्र की आवाज सुन पानी से बाहर निकल आया। दोनों मित्र किनारे पर बैठ बातें करने लगे। फिर कछुए ने पास बैठे चूहे की ओर देखकर पूछा।

"अरे भाई यह कौन है ?"

यह मेरा मित्र है, इसे मैं अपनी पीठ पर लादकर यहां तक लाया हूं।

क्या कह रहे हो भाई। यह चूहा तो तुम्हारा भोजन है। यदि तुम इसे मित्र बनाकर लाए हो तो जरूर कोई खास बात है।

मित्र तो जान से प्यारा होता है। जब मैंने अकाल पड़ने पर उस देश को छोड़ना चाहा तो यह भी कहने लगा।

"हम तो मित्र के साथ ही जिएं हैं, उसके साथ ही मरेंगे।"

"मगर इसका कारण क्या है ?"

इसका कारण मैंने वहां पर पूछा था लेकिन इसने कहा कि मैं यह कारण तालाब पर चलकर ही बताऊंगा।

"चलो मित्र अब तुम हमें वह कारण बता तो।" चूहे से कौवे ने कहा।"

चूहा कहानी सुनाने लगा था।

धन की शक्ति

दक्षिण देश में एक नगर है, उसके पास महादेव जी का एक मठ है, उस मठ में ताम्रचूड़ नाम का एक संन्यासी रहता था। वह उस नगर में भिक्षा मांगकर अपना गुजारा करता था, बची हुई भिक्षा को वह एक खूंटी पर टांग देता, सुबह होते ही उसे गरीब मजदूरों में बांट देता, यह गरीब मजदूर इस खाने के बदले में उस मठ की सफाई वगैरा कर दिया करते थे।

एक दिन मेरे भाइयों(यानि दूसरों चूहों)ने मुझसे कहा कि यह साधू उस भोजन को खूंटी पर टांग देता है जिससे हम लोग इसे खाने से वंचित रह जाते हैं, क्योंकि आप हम सबमें से बड़े हैं और बुद्धिमान भी इसलिए वहां चलकर स्वयं भी भोजन कीजिए और हमें भी खिलाइये।

भाइयों की बात सुन मैं उनके साथ हो लिया फिर अपनी तीव्र बुद्धि से उस खूंटे पर चढ़ गया। बस खाने को निकाल मैंने अपने साथियों को बांट दिया और स्वयं भी खाया, इससे मेरे साथी बहुत खुश हुए, इस प्रकार से हम हर रात उस भोजन को खाकर आनन्द लेने लगे थे।

साधू जी महराज अपने भोजन को रोज ही खाए जाने के कारण बहुत ही चिन्तित हुए, इस भोजन की रक्षा के लिए वह एक लम्बा बांस ले आए जिससे रात को सोते-सोते भी वह हिलाते रहते। इस तरह हम लोग उस बांस के डर से ऊपर भोजन तक न पहुंच सके।

दूसरे दिन उस संन्यासी का मित्र दूसरा संन्यासी तीर्थ यात्रा करके लौटा। उन दोनों मित्रों में ज्ञान की बातें आरम्भ हुई। लेकिन ताम्रचूड़ का ध्यान तो उस बांस की ओर था। उसे इस प्रकार देखकर दूसरे संन्यासी ने कहा—देखो ताम्रचूढ़ तुम मेरी बातों को ध्यान से नहीं सुन रहे, यह तो पाप है, अब भले ही रात का समय है लेकिन मैं इसी समय तुम्हारा मठ छोड़कर दूसरे मठ में जाता हूं, क्योंकि जो प्राणी अपने घर आए मेहमान को देखकर इधर-उधर या नीचे-ऊपर झांकने लगे, उसके घर में जो लोग जाते हैं वे बिना सींग के बैल हैं। जहां आदर-सत्कार, मीठी-मीठी बातें, गुण-दोष की चर्चा न हो वहां नहीं जाना चाहिए। तुम एक मठ के मालिक बनकर सब कुछ भूल गये, तुमने अपने भाईयों का प्यार भी छोड़ दिया। क्या तुम नहीं जानते कि यह मठ नहीं तुमने नर्क पाया है। कहा भी गया है यदि नर्क में जाना हो तो वर्ष भर परहित करो या फिर तीन दिन के लिए मठाधीस बन जाओ, तुम दया के पात्र हो।

यह सुनकर ताम्रचूड़ घबराकर बोला—भगवान् ऐसा मत कहो, आपसे प्रिय इस संसार में मेरा और कोई मित्र नहीं है, मेरी परेशानी का कारण एक चूहा है जिसके लिए मैं यह बांस हिलाता रहता हूं। वह हर रोज मेरा भोजन खाता है।

"उसका बिल कहां है, क्या तुम्हें पता है?"

"मुझे ठीक से तो कुछ पता नहीं, हां मुझे यह संदेह है कि उसका बिल किसी खजाने के आस-पास होगा, क्योंकि धन की गर्मी से प्राण का तेज बढ़ता है। इसीलिए वह चूहा बहुत ऊंचा कूदता है।

अपने मित्र की बात सुन मेहमान संन्यासी बोला—देखो भाई बिना किसी सेतु के यह शांडली धोए हुए तिलों को बिना धोए तिलों में नहीं बेच सकते, इसमें अवश्य कोई कारण होगा।

"वह कैसे महाराज।"

लो सुनो—

बिना कारण त्याग नहीं

जब मैं किसी तूफान में वर्षाकाल, व्रतग्रहण के लिए किसी ब्राह्मण से प्राथना की तो उनकी कृपा से मैं बच गया और विश्राम करने लगा। जब मैं सोकर उठा तो उस ब्राह्मण को अपनी पत्नी से बातें करते सुना।

वह अपनी पत्नी से बोला—हे पत्नी अति फल देने वाली दक्षणाएं संक्राति होगी, सो मैं दान प्राप्त करने के लिए दूसरे गांव जाऊंगा, तुम एक ब्राह्मण को भगवान् सूर्य के नाम का भोजन करवा देना।

पति की बात सुन पत्नी कठोर वचनों से उसकी निन्दा करते हुए बोली—तुम्हारे जैसे सुस्त प्राणी के यहां किसी को भोजन कहां से प्राप्त होगा। तुम्हारे साथ मुझे कभी सुख नहीं मिला। न कभी अच्छे भोजन मिले, न वस्त्र, न जेवर।

पत्नी की बात सुन ब्राह्मण धीरे से बोला—प्रिय ऐसा कहना ठीक नहीं है, यदि तुम्हारे पास एक ही रोटी है तो उसमें से आधी भूखे को दे देना चाहिए, क्योंकि चाहने पर धन और ऐश कैसे मिलता है—? क्योंकि हमने सुना है कि सुखी और अमीर लोग बहुत से जो फल पाते हैं गरीब लोग वही फल एक कौडी का बीसवां भाग दान करके प्राप्त कर लेते हैं, दानी छोटा भी सेवा करने वाला होता है। कंजूस अमीर भी। यह तो मीठा जल देने वाले कुएं से सब खुश रहते हैं, खारी जल वाले समुद्र से

कोई नहीं। यह समझकर गरीब को भी समय-समय पर थोड़ा-बहुत दान करना चाहिए। कहा भी है।

सच्चे प्राणी को श्रद्धापूर्वक, देश, कालानुसार जैसे भी हो दान देने पर मन चाहे फल की प्राप्ति होती है और अधिक लोभ नहीं करना चाहिए। अधिक लोभ करने वाले के मस्तिष्क पर शिखा हो जाती है।

"पत्नी बोली वे कैसे—?"

लो सुनो—



लालच बुरी बला

किसी जंगल में एक शिकारी एक दिन शिकार खेलने के लिए गया, उसे एक भयंकर सूर मिला, जैसे ही उस शिकारी नें उस सूर पर तीर चलाया तो सूर ने मुड़कर उस शिकारी पर इतना भयंकर हमला किया कि कुछ ही क्षणों में उस शिकारी की लाश ही खून में लतफत नजर आई। लेकिन सूर के पेट में लगा तीर उसे ले डूबा। सूर की लाश भी वहीं ढेर हो गई।

थोड़ी देर के पश्चात् एक गीदड़ भूख से बेचैन वहां से गुजरा तो उसने सूर की लाश को पड़े देखकर दिल ही दिल में कहा—

वाह…वाह…आज तो अपने नसीब जाग गए हैं, पूरे का पूरा सूर, अब तो हम कई दिन तक आराम से इसे खा-खाकर काटेंगे। शिकार की चिन्ता ही समाप्त। अब तो मैं इसे धीरे-धीरे खाऊंगा, थोड़ा-थोड़ा…आनन्द।

हां भाई…पहले तो मैं इसके पेट में लगे तीर से साथ निकली अन्तड़ियों को ही खाकर अपना पेट भरूंगा। बाकी का शव तो कल से खाना आरम्भ करूंगा।

बस यही सोच लालची गीदड़ उस सूर के पेट से तीर निकालकर खाने ही लगा था कि तीर के आगे लगे लोहे के टुकड़े उसके दांतों में फंसे, मगर लालची गीदड़ ने उस मांस को चबाने का प्रयास आरम्भ रखा। फिर एक लोहे का टुकड़ा उस गीदड़ के गले में फंसा, जिसके कारण उस गीदड़ की वहीं पर मौत हो गई। इसलिए मैं कहता हूं कि लालच बुरी बला है।

ओ मेरी प्रिया, क्या तुमने यह नहीं सुना कि जीव जब भी मां के गर्भ में रहता है तभी उसकी आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु—यह पांचों चीजें बना दी जाती है।

तब वह बोली—मेरे पास तिल बहुत हैं, इन तिलों से ही भोजन तैयार करके ब्राह्मणों को भोज करा दूंगी।

अपनी पत्नी की बात सुनकर वह गांव चला गया। तभी उसकी पत्नी ने तिलों को गर्म पानी में भिगो, मल-कूटकर धूप में सुखा लिया। तिलों को वहीं छोड़ वह बेचारी अपने काम में लग गई। तब कहीं से एक कुत्ता वहीं पर आया उसने इन तिलों में पेशाब कर दिया। बेचारी स्त्री ने जब यह देखा कि उस कुत्ते ने उसके रहे-सहे तिल भी भ्रष्ट कर दिए हैं। तभी तो उस चतुर औरत ने सोचा—

चलो मैं इन तिलों को लेकर किसी के घर जाती हूं और इन्हें दूसरे तिलों से बदल लाऊं। जैसे ही वह औरत अपने किसी पड़ोसी के घर पहुंची तो मैं भी वहां पर पहुंचा हुआ था। उस घर की मालकिन जब उन साफ तिलों को अपने गन्दे तिलों से

बदलने लगी तो उसके बेटे ने कहा—

मांताजी, इन तिलों को मत लो। साफ तिल देकर यदि कोई गन्दे तिल लेता है तो उसके पीछे जरूर कोई चाल होती है।

अपने बेटे की बात सुनकर, उस औरत ने तिल बदलने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार से उस ब्राह्मण की पत्नी की यह चाल असफल हो गई।

अच्छा संन्यासी जी, क्या आप उस चूहे के आने का रास्ता जानते हो ?

हां, जानता हूं। क्योंकि वह कभी अकेला नहीं आता बल्कि अपने कई साथियों के साथ आता है।

ठीक है, अब हम सुबह उठकर उस रास्ते पर मिट्टी डाल देंगे जहां से वह चूहा आता है, इस प्रकार से उसके पांव के निशान उस मिट्टी पर बन जाएंगे जिससे हमें उसके आने का रास्ता पता चल जाएगा।

मेहमान साधू की बात सुनकर मैंने सोचा कि वह नष्ट हो गया। उसने जैसे मेरे खजाने को जान लिया वैसे ही मेरे बिल को जान लेगा। इस प्रकार में डर के मारे अपना बिल वाला रास्ता छोड़कर किसी दूसरे रास्ते से चल पड़ा।

सहपरिवार मैं चला ही था कि सामने से एक बिल्ला आ गया। वह चूहों को देखकर टटपड़ा और बहुत सारे मेरे साथियों जो मारकर खा गया। तब बाकी के चूहे मुझे गलत रास्ते पर जाने के कारण गालियां देते हुए खून से लथ-हथ मेरे बिल में घुस गए। मैं अकेला ही वहां से एक दूसरे स्थान की ओर चला गया। उस मेहमान साधू ने अपनी चाल से मेरे खजाने का पता लगा लिया जिसकी गर्मी से मैं बहुत बड़े किले पर भी पहुंच जाता था।

फिर उस मेहमान साधू ने ताम्रचूड़ से कहा कि अब आप आराम से सो जाओ, क्योंकि इसी खजाने की गर्मी से वह आपको तंग करता था। इतना कह दोनों खजाने को पाकर अपने मठ

की ओर चले गए। बाद में जब मैं वहां पर पहुंचा तो मुझे वह स्थान बहुत सूना लगने लगा और मैं उदास होकर सोचने लगा कि अब मैं कहां जाऊं, किधर जाऊं —?

इस प्रकार सोचते-सोचते बड़ी कठिनाई से वह दिन बीता जब दिन समाप्त हो गया तो मैं अपने साथियों को लेकर उसी मठ में पहुंचा मेरे साथियों की आवाज सुनकर संन्यासी ने बांस को उस भिक्षापात्र पर मारना आरम्भ किया, तब वह मेहमान बोला—

"मित्र ! क्या आज भी आपको नींद नहीं आती ?"

"भाई वह चूहा अपने साथियों समेत फिर आ गया। इसलिए मैं बांस मार मारकर उन्हें भगा रहा हूं।"

मेहमान बोला—मित्र तुम अब डरो मत। धन के जाने से इसके कूदने की शक्ति भी चली गई। सब प्राणियों का यही हाल होता है। कहा भी है—

"मनुष्य जो उत्साही रहता है और गन्दे शब्द बोलता है वह सब धन का बल होता है।

उसकी बात सुनकर मुझे क्रोध आ गया और मैं पूरे जोश के साथ उस टंगे भोजन पर कूदा, लेकिन मैं उस पर पहुंचने से पहले ही धरती पर गिर पड़ा।

मुझे इस प्रकार गिरते देख वह मेहमान ताम्रचूड़ से कहने लगा—

देखो भाई, सब धन से बलवान और पंडित होते हैं बिना धन के वह चूहा भी अपनी जाति के दूसरे चुहों जैसा हो गया। इसकी शक्ति समाप्त हो गई। तुम चिन्ता छोड़ो और आराम से सो जाओ।

यह सुनकर मैंने अपने मन मैं सोचा कि निर्धन का जीना बेकार है। चाहे मनुष्य में और कितने गुण क्यों न हों यदि धन न हो तो बेकार है।

मेरे सारे साथी मुझे बेकार समझकर मेरा साथ छोड़कर

चले गए, क्योंकि उन्हें यह पता चल गया था कि अब मेरी शक्ति समाप्त हो गई है, वे अब मेरी सेवा क्यों करें ? इस तरह से मैं दुःखी होकर सुबह-सुबह अपने बिल में गया और वहां जाकर अकेले में सोचने लगा कि मेरा भी क्या जीवन है ?

ठीक ही कहा आता है, बेकार आदमी मरा हुआ है, बिना दक्षिणा का यज्ञ भी बेकार है।

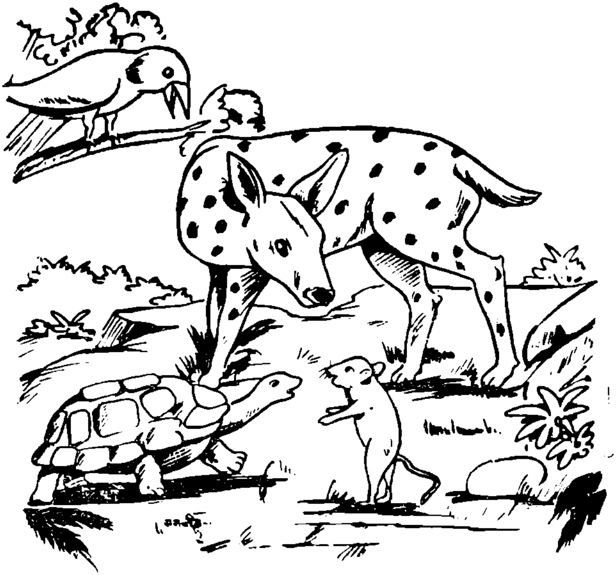
मैं इस प्रकार सोचता ही रहा कि मेरे सारे साथी शत्रु के साथ जा मिले। तभी मैंने अपने जीने का रास्ता निकाला और निर्णय किया कि संन्यासी जब रात को सो जाए तो उसके तकिए के नीचे रखी धन की थैली को उठा लाऊं, इस प्रकार से मेरी खोई हुई ताकत फिर से वापिस आ जाएगी, कहा भी है।

निर्धन को भाई, बन्धु···मित्र सब छोड़ देते हैं।"

गरीब आदमी यदि अमीर आदमी को कुछ देने भी जाए तो लोग उसे भिखारी समझते हैं। ऐसी गरीबी पर लानत है। यही सोचकर मैं रात को संन्यासी के पास गया और उसके तकिए को छेड़ा ही था कि वह संन्यासी जाग उठा और उसने फटे बांस से मेरे सिर पर वार किया। लेकिन मैं अपनी होशियारी से उसका वार बचा गया। सच है मिलने वाला धन मिलता ही है। उसे देवता भी नहीं रोक सकते और जाने वाला धन जाएगा ही उसे कोई ताकत नहीं रोक सकती। इसीलिए मैं न सोच करता हूं और न ही चिन्ता। जो चीज मेरी है वह किसी दूसरे की नहीं हो सकती। इसीलिए मैंने सभी चिन्ताएं छोड़ दी हैं और यहां आकर रहने लगा। इस मित्र की कृपा से तुम्हारे तक पहुंचा हूं।

कछुआ, चूहे की बात सुनकर बोला—मित्र का हृदय शुद्ध होता है तभी तो भूखा होते हुए भी तुम्हें रास्ते में नहीं खाया। कहा भी है—धन को देख जिसका दिल न मचले और सुख-दुःख में जो एक-सा रहे ऐसा मित्रअवश्य बनाना चाहिए और जो कोई मुसीबत के समय मित्र बना रहे वही सच्चा मित्र होता है। सुख में तो हर आदमी मित्र बन जाता है। इसलिए हम तुम्हारा

स्वागत करते हैं। तुम इस तालाब के तट पर जब तक दिल करे रहिए। जो आपका धन नष्ट हो गया है उसकी चिन्ता मत कीजिए क्योंकि यह धन सदा किसी का साथ नहीं देता। धन के कमाने में भी दुःख और चले जाने पर दुःख। फिर ऐसे धन का क्या लाभ ? मनुष्य जितना धन कमाने के लिए कष्ट उठाता है यदि उतना समय किसी अच्छे कार्य, ईश्वर भक्ति के लिए लगाए तो उसको आत्मिक सुख मिलेगा। इसलिए तुम्हें देश छोड़ने का भी दुःख नहीं करना चाहिए। बुद्धिमान के लिए तो सभी स्थान एक जैसे हैं। वे लोग यहां भी रहते हैं, अपनी बुद्धि से सब कुछ लेते हैं। मूर्ख मनुष्य धन कमाकर इसका लाभ नहीं उठा सकते। जैसे विशाल वन मूर्ख, सोमिलक का हाल हुआ, सुनो उसकी कहानी।



नसीब बलवान है

एक शहर में सोमिलक नाम का जुलाहा रहता था। वह बेचारा दिन-रात कपड़े बुनता। लेकिन उस बेचारे के पास सदा ही धन की कमी रहती यहां तक कि घर खर्च के लिए भी वह चिन्तित रहता था। उसके साथी जो बढ़िया कपड़े न बुनकर घटिया कपड़े बुनते थे वे सबके सब अमीर हो गए थे।

एक दिन दु:खी होकर उसने अपनी पत्नी से कहा।

"देखो प्रिया! हम यहां पर बहुत दु:खी हैं। हमारे सारे साथी अमीर होते जा रहे हैं। इसलिए मैं इस शहर को छोड़कर किसी दूसरे शहर में जाकर अपना काम करूंगा। जिससे मैं भी अमीर बन सकूं।"

"प्राणनाथ ! अपना शहर छोड़ना अच्छा नहीं होता। यह धन तो नसीब के बिना नहीं मिलता। फिर इंसान के पिछले जन्मों का भी हिसाब इसके साथ जुड़ा होता है। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि यहीं पर अपने काम में लगे रहो।"

नहीं प्रिया ! यह बात ठीक नहीं। बिना हिम्मत के फल नहीं खाना। हिम्मत किए बिना मुंह तक नहीं पहुंचता। हां यदि हिम्मत करने पर भी धन न मिले तो इसे भाग्य के साथ जोड़ा जा सकता है।

बस इसके पश्चात् जुलाहा अपना शहर छोड़कर दूसरे शहर चला गया। वहां पर दिन-रात काम करके उसने बहुत-सा धन जमा कर लिया।

धन जमा होने पर उसने घर वापस आने की तैयारी की। बस अपना सामान इकट्ठा कर उस शहर से अपने शहर की ओर चल पड़ा। राह चलते-चलते उसे रात पड़ गई। उसने सोचा कि रात को इसी जंगल में विश्राम कर लिया जाये।

यही सोच वह एक बरगद के वृक्ष के नीचे सो गया। सोते-सोते रात को उसने दो भयंकर प्राणियों को बात करते सुना।

"पहले ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि इस जुलाहे के भाग्य में खाने-पीने को छोड़ और कुछ नहीं है।"

दूसरा बोला, हे कर्म ! उद्योगियों को अवश्य देना चाहिए पर उसका फल तो तुम्हारे अधीन है।

यह बातें सुनकर जुलाहा घबरा कर उठा और उसने सबसे पहले अपने धन की पोटली को देखा—वहां तो धन का नाम भी न था। उसका सारा धन कहां गया ?

हे भगवान ! यह आपने क्या किया ? मेरी सारी कमाई चोर ले गये। मैंने कितने दुःखों से यह धन कमाया था। अब मैं खाली हाथ जाकर अपने घर वालों को क्या मुंह दिखाऊंगा।

दुःखी होकर जुलाहा बेचारा उसी शहर की ओर फिर वापस चल पड़ा। जहां से वह धन कमाकर लाया था।

थोड़े समय में ही दिन-रात परिश्रम करके उसने फिर धन जमा कर लिया ।

अब दुबारा वह जब अपने घर की ओर चला तो उसने यह फैसला कर लिया था कि अब यदि उसे नींद आएगी भी तो भी वह रास्ते में सोएगा नहीं । यही सोचकर जुलाहा चला जा रहा था कि एक स्थान पर फिर उसे दो भयंकर आदमी खड़े मिले जो आपस में बातें कर रहे थे ।

एक ने कहा, ओ कर्त्ता – तूने इसे इतना धन क्यों दिया जबकि तुम जानते हो कि इसके भाग्य से केवल दो समय की रोटी ही लिखा है ।

दूसरा बोला—हे कर्म, परिश्रमी व्यक्ति को धन देना तो मेरा कर्तव्य है । उसका परिणाम तो तुम्हारे हाथ में ही है ।

यह सुनकर जैसे हो जुलाहे ने अपनी धन वाली पोटली को हाथ लगाया तो सारा धन उसमें से गायब था । थैली खाली थी ।

यह बेचारा तो हैरान, परेशान, दुःखी होकर यह सोचने लगा कि अब उसके जीने का ही क्या लाभ । अब तो मर जाना ही अच्छा है । क्यों न मैं इस वृक्ष में फन्दा लटका कर मर जाऊं ।

वह बेचारा मरने के लिए उस वृक्ष पर लटकने लगा ।

उसे इस प्रकार मरते देख एक आदमी ने उससे कहा ।

"अरे मूर्ख, तुम यह क्या कर रहे हो ?"

"मैं मर रहा हूं । मैं इस दुनिया में जीना नहीं चाहता । मेरा सारा धन दो बार लुट चुका है । अब मैं जीकर भी क्या करूंगा ।"

वह पुरुष जोर से हंसा और बोला, अरे ओ मूर्ख मैं तेरा नसीब हूं और याद रख तेरे नसीब में खाने-पीने के सिवा और कुछ नहीं है । जा अब तू अपने घर जा । मैं तेरे परिश्रम से बहुत खुश हुआ हूं ।

मेरे नसीब, अब मैं घर खाली हाथ कैसे जाऊं । मुझे मेरा धन दे दो ताकि मैं अपने घर वालों को कुछ तो खाने को दे सकूं ।

"अरे भोले मानव ! तू उस धन को लेकर भी क्या करेगा जो

तेरे भाग्य में ही नहीं है ।"

मेरे नसीब में धन हो या न हो, किन्तु मुझे धन की जरूरत है। मैं अपने मित्रों और घर वालों को यह बताना चाहता हूं कि मैं खाली हाथ नहीं आया ।

यदि ऐसी ही बात है तो प्राणी सुन, तू यहां से बहुत दूर एक पुराने मन्दिर में चला जा, वहां पर जाकर तुम उन दो देवता पुरुषों से मिलो जिनमें से एक का नाम है। गुप्तधन, दूसरा उपयुक्त धन ।

इनमें से जिसे भी तुम चाहोगे मैं तुम्हारे हवाले करके तुम्हारा नसीब लिख दूंगा । इतना कहकर वह देव प्राणी वहां से गायब हो गया ।

जुलाहा हैरानी से इधर-उधर देखता रहा पर वहां तो कुछ भी नहीं था । देवता स्वरूप प्राणी जा चुका था । उसके जाने के पश्चात् वह जुलाहा उस मन्दिर की और चल पड़ा जिसके बारे में नसीब देवता ने बताया था ।

उस पुराने मन्दिर में पहुंचते ही उसे वही दोनों प्राणी नजर आये जिन्होंने उसका धन चुराया था। वे जुलाहे को देखकर बोले—

आ गए मूर्ख मित्र, तुम धन के लोभी हो, तुम धन को जमा करके रखना चाहते हो। यही तुम्हारी मूर्खता है। अरे धन कमाने खाने की चीज है, जमा करने की नहीं। फिर तुम अपने भाग्य पर विश्वास नहीं करते, यही तुम्हारी भूल है। तभी तो तुम भटक रहे हो। कहा गया है।

"अग्नि होत्र रूपी फल जिसमें हो वही ज्ञान है ।"

"जिससे चरित्र और स्वभाव सुधरे, वही विद्या है ।"

"जिससे पुत्र रूप फल प्राप्त हो वही स्त्री है ।"

"दान तथा भोग धन ही धन है ।"

अब तुम यह निर्णय करो कि तुम्हें कौन-सा धन चाहिए ।

"खाने-पीने अथवा जमा करने वाला ।"

जुलाहा उनकी बातों को समझ गया उसे ज्ञान प्राप्त हो गया था। उसे यह पता चल गया था कि यह दोनों प्राणी देवता हैं। उसने उनके आगे हाथ जोड़ते हुए कहा।

"हे भगवान ! मुझे तो ऐसा धन देना जिससे मैं अपना पेट भर सकूं। अपने बच्चों और परिवार का पेट भर सकूं।"

जाओ प्राणी, तुम्हारी यह आशा पूरी होगी।

जुलाहा खुश होकर अपने घर को वापस चला देवता ने उसे पेट भर कर खाने के लिए धन दे दिया था।

इसलिए कहता हूं कि मेरे मित्र चूहे, तुम्हें धन के बारे में कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। धन केवल दान और भोग के लिए होता है। मधुमक्खियों को देखो उनका संचित धन क्या है ? उसे तो दूसरे ही लोग ले जाते हैं। इसलिए बुद्धिमान को केवल जमा करने के लिए ही धन नहीं कमाना चाहिए। जो मूर्ख लोग धन आदि में सुख समझते हैं वे गर्मी के सताए हुए होकर भी ठंडक के लिए मानो आग का प्रयोग कर रहे हैं। देखो सांप हवा पीते हैं किन्तु कमजोर नहीं होते। सूखे घास-फूस तिनके खाकर हाथी बलवान होते हैं, मुनि लोग फल-फूल खाकर अपना समय व्यतीत करते हैं। वास्तव में संतोष ही संसार का सबसे बड़ा खजाना है। संतोषी को जो आनन्द मिलता है। वह इधर-उधर दौड़ने वाले लोगों को कभी नहीं मिलता। इसलिए मित्र तुम्हें संतोष करना चाहिए।

अभी वे लोग यह बातें कर ही रहे थे कि एक जंगली हिरण किसी शिकारी के डर से छुपता-छुपाता उसी तालाब पर पहुंच गया। उस घबराये हुए हिरण को देख कौवा झट से उड़कर वृक्ष पर जा बैठा। चूहा अपने बिल में घुस गया। कछुआ पानी में जा छुपा।

हिरण बेचारा चिंतित-सा खड़ा इधर-उधर देखता हुआ बोला, अरे भाई लोगों मैं इस समय मुसीबत में घिरा हूं मेरे पीछे शिकारी लगा है। इसलिए मुझे बचाने का प्रबन्ध करो नहीं तो मैं मारा

जाऊंगा।

हिरण की बात सुन कछुआ बोला, अरे मित्र ! ऐसे अवसर पर नीति शास्त्र यह कहता है सुनो।

शत्रु से मुठभेड़ होने पर केवल दो ही उपाय हैं- १. लड़ना २. भाग जाना। सो जब तक शिकारी नहीं आता तब तक तुम घने जंगल की ओर भाग जाओ।

ऊपर बैठे हुए कौवे ने कहा, हे मित्रो ! चिंता मत करो ! मैंने ऊपर से देखा है कि वह शिकारी थक-हारकर वापस घर की ओर लौट गया है। इसलिए तुम लोग आराम से बाहर आ जाओ।

इसके पश्चात् यह चारों मित्र तालाब के किनारे वृक्ष की छाया में बैठकर आराम से बातें करते हुए समय व्यतीत करते रहे। ठीक ही कहा है। जो सुख स्त्री सतसंग से मिलता है वह अच्छे मित्रों से बातचीत से भी प्राप्त होता है।

कुछ दिनों के पश्चात् जब ये सब मित्र इकट्ठे हुए तो हिरण नहीं आया। सब लोग हिरण को न पाकर बहुत चिन्तित हुए और आपस में कहने लगे कि आखिर क्या है जो हमारा मित्र नहीं आया कहीं किसी शेर ने तो उसे नहीं मार दिया या फिर किसी शिकारो ने उसे मार दिया हो। कछुआ और चूहा कौवे से बोले, भाई हम दोनों तेज नहीं चल सकते तुम ही उड़कर उसे जंगल में ढूंढ़ो शायद कहीं मिल जाए।

अपने मित्रों की बात सुनकर कौवा जंगल की ओर उड़ने लगा।

अभी वह थोड़ी दूर ही गया था कि उसने जंगल में जाल में फंसे हिरण को देखा। तब दु खी होकर उससे बोला।

"मित्र यह क्या हुआ ?"

आंखों में आंसू भरते हुए हिरण ने कहा—हे मित्र अब तो मेरी मौत निकट आ चुकी है। अच्छा हुआ तुमसे भेंट हो गई। यदि मुझसे कोई भूल हो गई हो तो क्षमा कर देना मेरे मित्रो।

हिरण भाई तुम हमारे मित्र हो। तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो। हम अपने मित्र पर अपनी जान दे देंगे। तुम ठहरो मैं अभी अपने दोनों मित्रों को लेकर आता हूं।

कौवा अपने मित्रों के पास वापस गया और उसने हिरण के जाल में फंस जाने की बात कही। तब चूहे ने कहा—मित्र तुम मुझे अपनी पीठ पर लाद कर जल्दी से हिरण के पास ले चलो मैं उसका जाल काट दूंगा।

इस प्रकार कौवा चूहे को लेकर हिरण के पास पहुंच गया चूहे को अपने पास आता देख हिरण की आंखों में खुशी के आंसू भर आए। जैसे अंधेरे में आशा की किरण दिखाई दे जाए।

चूहा हिरण से बोला, "अरे भाई तुम तो नीति शास्त्र के बड़े ज्ञानी हो। तुम कैसे जाल में फंस गए?"

भैया! यह बातों का समय नहीं, तुम शिकारी के आने से पहले इस जाल को काट डालो।

चूहे ने हंसकर कहा, अरे भाई क्या तुम मेरे आने पर भी उस शिकारी से डरते हो।

इसी बीच धरती पर रेंगता हुआ कछुआ भी अपने मित्रों से आ मिला था।

कछुए को देखकर हिरण बोला, देखो भाई इस कछुए ने नीति के विरुद्ध काम किया है। अब यदि शिकारी आ गया, मैं तो जाल कटने पर भाग जाऊंगा। तुम किसी झाड़ी में छुप जाओगे, कौवा उड़ जाएगा। यह पानी में रहने वाला मित्र कहां जाएगा?

वास्तव में वह शिकारी इधर ही आ गया। तब तक चूहा तो जाल काट चुका था। हिरण जंगल की ओर भाग गया। कौवा पेड़ पर जा बैठा। किन्तु कछुआ बेचारा···

शिकारी हिरण के जाल से निकल जाने से बहुत दुःखी हुआ। उसने सामने ही एक कछुए को देखकर शांति का सांस लिया। चलो हिरण न सही कछुआ ही सही, कुछ तो खाने को मिलेगा, यही सोचकर उसने कछुए को अपने तीर से बांध कर कंधे पर

लटका लिया।

अपने मित्र को इस प्रकार जाते देख कौवा जोर-जोर से चिल्लाने लगा। देखो, देखो···क्या जुलम हो गया, हमारा मित्र हमसे जुदा हो गया···

चूहे ने कहा, घबराने से कोई लाभ नहीं। अब तो अपने मित्र को बचाने की बात सोचो।

"हां बात तो ठीक है।" हमें ठंडे दिमाग से सोचना होगा।

बुद्धि के बल से ही हम इस पापी शिकारी को हटा सकते हैं। फिर अचानक ही कौवा बोला।

लो मित्रों बात बन गई। देखो हिरण एक तालाब के किनारे जाकर लेट जाए। मैं इसके ऊपर जाकर बैठ जाऊंगा। शिकारी यह समझेगा कि हिरण मरा हुआ है। वह इसे पाने के लिए दौड़ेगा। इतने में तुम शिकारी के तीर के बन्धन काट देना, बस कछुआ तालाब में छलांग लगा देगा।

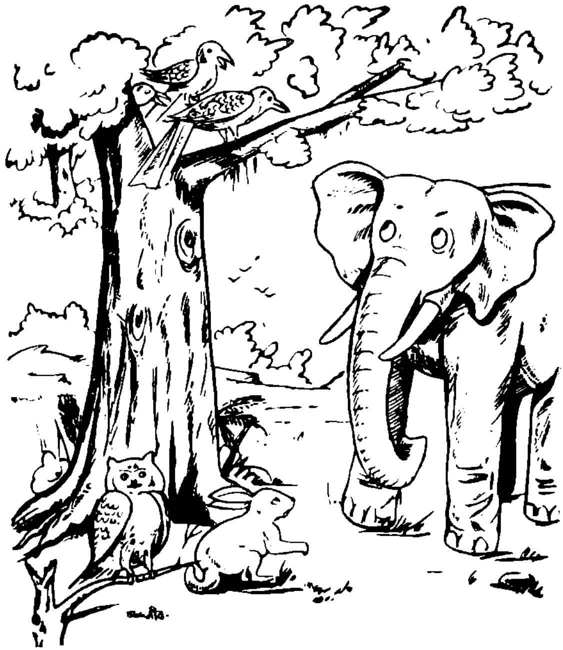
इन सब ने कौवे के दिमाग की दाद दीं। बस फिर क्या था कुछ ही क्षणों में सारा काम पूरा हुआ।

शिकारी ने हिरण को सामने पड़े देखा तो बड़ा खुश हुआ उसका खोया हुआ शिकार मिल गया भले ही वह मर चुका था, वह कछुए को फेंक हिरण को कब्जे में करने के लिए दौड़ा।

बस चूहे ने दांव मारा। उसने तीर को बीच में से काटा और कछुए को मुक्त करवाया। कछुआ तालाब में घुस गया। शिकारी जैसे ही हिरण की ओर गया। तो छलांग लगाते हुए हिरण भी वहां से भाग निकला।

शिकारी निराश होकर अपने भाग्य को रोने लगा और कहने लगा। मेरा तो नसीब फूट गया है।

कौवा, कछुआ, हिरण, चूहा चारों मित्र हंसते हुए चले गए।



युद्ध की नींव

एक बड़े नगर के बाहर बहुत ही पुराना बरगद का घना और विशाल पेड़ था। उसके ऊपर कौवों का राजा रहता था। उसी पेड़ के साथ गुफा के पास उल्लुओं का राजा रहता था। इस प्रकार इस वृक्ष पर दो राजा अपनी प्रजा पर राज्य करते थे। उल्लुओं के राजा ने अपनी प्रजा को आदेश दे रखे थे कि वे रात को जब गुफा के बाहर पहरा दें तो जो भी कौवा रात को उन्हें घूमता मिले उसे मार डालें।

इस प्रकार कौवा जाति बेचारी मारी जाती रही थी। कौवों

के राजा को इस बात से बड़ी चिन्ता हुई। उसने एक दिन अपने मन्त्रियों को बुलाया और उनसे कहा कि यह हमारा शत्रु बड़ा ही भयंकर है। यदि हमने इससे बचने का उपाय न करेंगे तो शीघ्र ही हमारी कौम का नाश हो जाएगा। यह तो हम सब जानते हैं कि हम लोग रात को देख नहीं सकते। दिन में हमें यह पता नहीं कि उनकी गुफा कहां है। इसलिए आप लोग यह सोचो कि हम उनसे सन्धि कर लें अथवा कोई रास्ता निकालें।

तब वे बोले—महाराज ने यह पूछकर ठीक किया है। कहा भी है मन्त्री के लिए उचित यही है कि ऐसे मामले में बिना पूछे ही अपनी राय दे। फिर पूछने पर जो भी सही या गलत हो वह बताए, जो मन्त्री पूछे जाने पर हित की बात करे और इसके बजाए मीठी-मीठी बातें करे वह शत्रु होता है। इसलिए राजा को चाहिए कि एकांत में ले जाकर बात करे।

राजा ने अलग-अलग से अपने पांचों मन्त्रियों से पूछना आरम्भ किया। सबसे पहले मुख्य मंत्री से पूछा। क्यों मन्त्री जी ऐसे समय पर आप क्या उचित समझते हैं।

महाराज ! मेरी नीति तो यही है कि बलवान से लड़ाई नहीं करनी चाहिए। कहा है—प्राण बचाने के लिए हर किसी से सन्धि कर लेनी चाहिए। यदि एक बार प्राण बच जाएं तो फिर सब कुछ हो सकता है। बृहस्पति का कहना है कि यदि युद्ध में विजय सम्भव न हो तो बराबर के शत्रु से भी सुलह कर लेनी चाहिए। साम, दाम और भेद के पश्चात् ही युद्ध दण्ड उचित होता है। भमि मित्र तथा धन संग्राम से सही तीन फल हैं। यदि इनमें से एक भी नहीं मिलती तो युद्ध न करें। पत्थरों से बने चूहे के बिल को यदि शेर खोदेगा तो या तो उसके दांत टूट जाएंगे, यदि दांत न टूटे तो मिलेगा क्या। एक चूहा और खोदा पहाड़। शक्तिशाली शत्रु से युद्ध नहीं करना चाहिए। इसलिए मेरी राय में सन्धि करने में ही भला है।

इसके पश्चात् काकराज ने उप-मुख्यमन्त्री से पूछा।

"इसके बारे में आपका क्या विचार है ?"

महाराज मेरे विचार में तो सन्धि करना ठीक नहीं है, कहा गया है कि शत्रु यदि स्वयं झुककर भी सन्धि करना चाहे तो भी सन्धि नहीं करनी चाहिए, क्योंकि गर्म पानी भी आग का धुआं देता है। लोभी अधर्मी से तो भूलकर भी सन्धि नहीं करनी चाहिए। क्योंकि वह पापी होता है। पापी और खोटा मित्र बनकर भी सन्धि को तोड़ देता है। इसलिए ऐसे शत्रु से युद्ध करना चाहिए। ऐसा मेरा विचार है। फिर हम लोग हारे हुए हैं तो हम यदि सन्धि के लिए कहेंगे भी तो वे और क्रोध करेंगे फिर हमें बुजदिल नहीं बनना चाहिए। बड़ों ने कहा है कि हिम्मत और उत्साह से इन्सान बड़े-से-बड़े शत्रु को हरा देता है। शेर छोटा होने पर भी बड़े हाथी पर राज करता है। जो शत्रु बल से न मारा जाए उसे छल से मार देना चाहिए। जैसे औरत रूप से भीम ने कीचक को भी मारा था।

इसके पश्चात् काकराज ने तीसरे मन्त्री से पूछा।

आपका क्या विचार है मन्त्री जी ?

महाराज इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह पापी हमसे बहुत शक्तिशाली है, इसलिए उससे सन्धि या युद्ध करना कुछ भी ठीक नहीं। कहा भी गया है बलवान् और सिद्धान्तहीन शत्रु से बिना हमले के युद्ध या सन्धि नहीं करनी चाहिए। विजय की आशा रखने वाले को चाहिए कि शत्रु पर कार्तिक व चैत्र में हमला करे, दूसरे समय नहीं। जब शत्रु किसी संकट में हो अथवा उसमें कोई कमी हो उस समय उस पर चढ़ाई करना ठीक होता है, जो शत्रु के आने-जाने के रास्तों तथा अन्न-जल के भण्डारों को जाने बिना हमला करता है वह कभी वापिस नहीं लौट सकता।

फिर राजा ने चौथे मन्त्री से पूछा—"भाई तुम भी अपनी राय दो।"

उसने कहा कि मुझे तो सन्धि, विग्रह, यान यह तीनों ही

पसन्द नहीं । मुझे तो केवल आसन ही ठीक लगता है । क्योंकि बुद्धिमान कहते हैं—

अपने स्थान पर स्थित मगर हाथी को भी खींच लेता है । वही अपने स्थान (पानी) से बाहर आकर कुत्ते से भी हार जाता है । बलवान से युद्ध होने पर अपने किले में रहकर प्रयत्न करता रहे । और अपनी सहायता के लिए मित्रों को बुलाए, जो घबराकर, डरकर अपने स्थान को छोड़ देता है, वह दोबारा उस स्थान को प्राप्त नहीं कर सकता । इसलिए मेरी सलाह तो आसन ही है ।

"अब काकराज ने पांचवें मन्त्री की राय पूछी तो वह अपने स्थान से उठकर कहने लगा—

महाराज ! मुझे तो इन सबकी राय पसन्द नहीं है । मेरे विचार में हमें किसी-न-किसी मित्र से सहायता लेनी ही होगी । अपनी भूसी से अलग होकर चावल नहीं जामते । इसलिए यहां पर रहते हुए आप किसी-न-किसी मित्र का सहारा लें, यही मेरी सलाह है ।

सब मन्त्रियों की सलाह लेने के पश्चात् काकराज एक सबसे बूढ़े कौवे से पूछा—

हे बुजुर्ग, तुम हमारे राज में सबसे अधिक आयु के और सबसे अधिक अनुभवी हो । तुमने सब मन्त्रियों की राय तो सुन ली अब अपने विचार बताओ ।

बूढ़ा कौवा बोला—महाराज । इन मन्त्रियों ने जो कुछ भी कहा है वह नीतिशास्त्र के अनुकूल है । यह सब समय-समय के अनुसार ठीक ही है । बड़ों का कहना है कि बलवान शत्रु के साथ सन्धि या विग्रह करके निश्चिन्त नहीं बैठना चाहिए । शत्रु के मन में विश्वास पैदा करके, स्वयं विश्वास न करते हुए, लोभ दिखाकर बड़ी आसानी से उसे मारा जा सकता है ।

मेरे बुजुर्ग ! मैं आपकी बातों को मानता हूं किन्तु कितने दुःख की बात है कि मैं तो उसका निवास-स्थान भी नहीं जानता ।

महाराज ! यह सारा काम अपने गुप्तचरों से करवाओ, वे लोग वहां जाकर सारे भेद लेकर आएंगे। ब्राह्मण शास्त्रों से देखते हैं, राजा गुप्तचरों से देखते हैं और साधारण प्राणी आंखों से देखते हैं। बड़ों ने कहा है—जो राजा अपने गुप्तचरों से अपने शत्रुओं की हर चाल को जानता रहता है वह कभी भी नहीं हारता। बूढ़े कौवे ने कहा।

मेरे बुजुर्ग ! आप हमें यह सलाह दो कि गुप्तचर कैसे भेजें जाएं ? और यह कैसे होने चाहिएं।

इस बारे में नारद जी ने कहा है—

शत्रु के १८ तीर्थ और अपने १५ तीर्थ होते हैं।

तीन तीर्थ गुप्तचरों की सहायता से उन्हें जानना चाहिए। यह तीर्थ शब्द शत्रु के मारने आदि के कर्म के अर्थ से है। सो स्वपक्ष में तीर्थ ठीक नहीं होता अपने ही नाश का कारण होता है। यदि यह ठीक होता है तो लाभदायक होता है। वे तीर्थ इस प्रकार हैं—

शत्रु पक्ष के—(१) मन्त्री (२) पुरोहित (३) सेनापति (४) युवराज (५) द्वारपाल (६) अन्तर्वशिक (७) प्रशासन (८) तहसीलदार (६)सन्निधाता(१०) प्रदेष्टा (११) ज्ञायक (१२)साधनाध्यक्ष (१३) गजाध्यक्ष (१४) कोषाध्यक्ष (१५) दुर्गपाल (१६) करपाल (१७) सोमध्यक्ष (१८)श्रीकट नृत्य। इन १८ कर्मचारियों को तोड़कर अपने साथ मिलाने से शत्रु वश में होता है।

स्वपक्ष के—(१) रानी (२) राजमाता (३) राजब्राह्मण (४) माली (५) शयनापालक (६) स्पशध्यिक्ष (७) सांवत्सरिक (८) भिषक (६) कहार (१०) ताम्बलवाहक (११) आचार्य (१२) अंगरक्षक (१३) स्थान चिन्तक (१४)छत्रकर (१५) वैश्या।

इन पन्द्रह के साथ वैर होने से अपने पक्ष को नुकसान पहुंचाता है।

वैद्य, ज्योतिषी और आचार्य—यह जैसे अपने पक्ष की सब बातों को जानते हैं वैसे ही गुप्तचर सपेरों की भांति शत्रुपक्ष की बातें जान जाते हैं।

राजा ने अपने सभी यिशेष सहयोगियों की राय जानने के पश्चात् उस बूढ़े कौवे से पूछा मेरे पूज्य नाथ अब आप यह तो बताओ कि और उल्लुओं से हमारी इस पुरानी शत्रुता का कारण क्या है ?

सुनो महाराज - एक समय हंस, तोता, बगुला, कोयल, चिड़ियां, उल्लू, कबूतर, बाज, कठफोरवा आदि सब पक्षियों ने मिलकर आपस में सलाह आरम्भ की कि हमारा राजा गरुड़ है, यह वासदेव का भक्त है, हमारी कोई चिन्ता नहीं करता, सो ऐसे स्वामी से क्या लाभ जो शिकारियों के जालों में फंसे जाने वाले हम लोगों की रक्षा नहीं करता। इसीलिए कहा है, शत्रु से तंग प्रजा की रक्षा न करने वाला राजा यमराज होता है। राजा के अच्छा न होने पर उसकी प्रजा समुद्र में पतवार रहित नौका के समान इधर-उधर रह जाती है। मनुष्य को चाहिए कि समुद्र में टूटी नाव की भांति सदा उपदेश देने वाले आचार्य मूर्ख पुरोहित, रक्षा न करने वाले राजा, कड़वा बोलने वाली नारी—इन सबको छोड़ दे अतः विचार करके किसी दूसरे को राजा बनाया जाए। तब उन सबसे भद्र उल्लू को देखकर कहा—

आज से हमारा राजा उल्लू होगा। चलो जाकर राजतिलक का सामान लाओ। तभी राजगद्दी पर बैठाने के सारे प्रबन्ध किए गए। अभी उल्लू राजगद्दी पर बैठने ही लगा था कि उसी समय एक कौवा आ गया, उसे देखकर पक्षियों ने सोचा कि हम सबमें से कौवा बहुत चालाक होता है। कहा भी है मनुष्यों में नाई, पक्षियों में कौवा, दांत वाले जानवरों में गीदड़ और साधुओं में सफेद भिक्षु सबसे अधिक चालाक होते हैं।

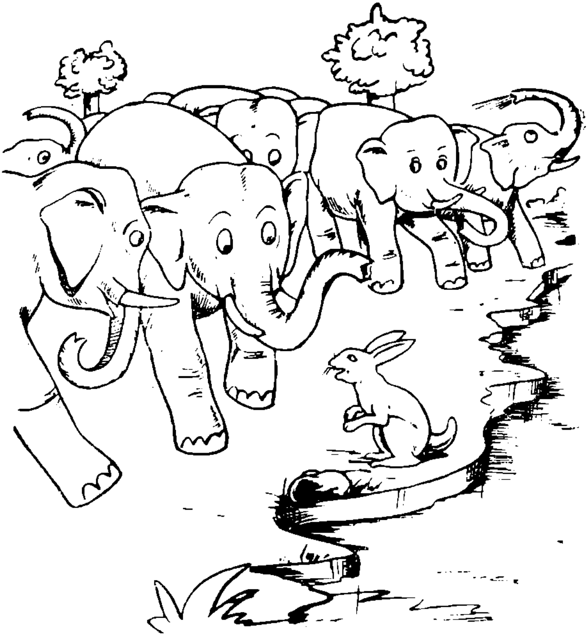
वहां पहुंचकर कौवा ने पूछा—"अरे भाई यह काहे की खुशियां मनाई जा रही हैं ?"

"भाई कौवे हम पक्षियों का कोई राजा नहीं है, तो हम इस उल्लू को राजगद्दी पर बैठा रहे हैं। तुम भी जरा अपनी राय दो।"

कौवा हंसकर बोला—भाइयो ! यह बात उचित नहीं है कि कोयल, मोर, हंस, तोता, बुलबुल, हारित, सारिस आदि प्रधान पक्षियों के होते हुए इस दिन में अंधे भयंकर चेहरे वाले को राजा बनाया जाए। इसे मैं नहीं चाहता। क्योंकि यह तो देखने में भी बड़ा भयंकर लगता है। इसे राजा बनाकर भला हमारी क्या इज्जत होगी। दूसरे गरुड़ के राजा रहते हुए इसे राजा क्यों बनाया जा रहा है। यदि गुणवान भी हो तो एक स्वामी के होते हुए दूसरा स्वामी नहीं बनाया जाता। गरुड़ के नाम से शत्रु डर जाते हैं। कहा भी है कि बड़ों के नाम से ही बड़े-बड़े काम सिद्ध हो जाते हैं।

वे बोले—"यह कैसे ?"

उसने कहा, लो सुनो—



बड़ों के नाम से लाभ

एक जंगल में हाथियों का राजा रहता था। वहां पर एक बार बहुत वर्षों तक वर्षा न हुई, जिसके कारण उस क्षेत्र के सभी तालाब और कुएं सूख गए। तब सब हाथियों ने मिलकर अपने राजा से कहा कि प्यास के मारे हमारे बच्चे मर रहे हैं और कुछ एक तो मर भी गए हैं। कोई तालाब ढूंढ़िये जिससे पानी पीकर जान बचे। तब बहुत देर सोचने के पश्चात् उसने कहा कि दूर एक जंगल में पुराने जमाने का एक बहुत बड़ा तालाब है, शायद उस तालाब में पानी मिल जाए। वह पाताल गंगा के जल से

सदा भरा रहता है। चलो वहीं चलते हैं।

इस प्रकार सबके सब हाथी वहां से चल पड़े और पांच रातें पांच दिन चलते-चलते वहां पर पहुंचे। उस तालाब में आनन्द-पूर्वक वे सारा दिन नहाते रहे फिर बाहर निकले। उस तालाब के चारों ओर खरगोशों के अनेक बिल थे। उन हाथियों के भारी पांव पड़ने से वे सारे के सारे दब गए। जिससे बहुत से खरगोश मारे गए और बहुतों के शरीर की हड्डियां टूट गई। उन हाथियों के जाने के पश्चात् खरगोश इकट्ठे होकर सोचने लगे कि हम तो मारे गए। यह हाथी तो हर रोज यहां आएंने क्योंकि बाहर कहीं भी पानी नहीं है। सो हमारा सर्वनाश हो जाएगा, कहा भी है छूते ही हाथ मारता है। सूंघते ही सांप समाप्त करता है। राजा हंसते-हंसते जान लेता है। दुष्टजन इज्जत करते-करते जान लेते हैं। इसलिए हमें कुछ सोचना चाहिए।

तब एक खरगोश ने कहा—इस स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाना चाहिए। मनु और व्यास जी ने कहा है—कुल के लिए एक को, देश के लिए ग्राम को और अपने लिए पृथ्वी को भी छोड़ देना चाहिए। आपत्तिकाल के लिए धन की रक्षा करें। धन देकर स्त्री की रक्षा करें और धन और स्त्री देकर आत्म-रक्षा करें।

तब कुछ साथी बोले—भाई! बाप-दादा की धरती को ऐसे नहीं छोड़ा जा सकता। अब तो इन हाथियों के लिए कोई ऐसा डर पैदा करें जिससे यह यहां पर न आएं। कहा गया है बिना जहर के सांप को फन तो फुफकारना चाहिए। जहर हो या न हो, फुफकार से ही आदमी को डर लगता है।

फिर एक खरगोश बोला—एक डराने वाली बात है जिससे ये हाथी नहीं आएंगे। वह चाल है दूत के वश की। चन्द्रमण्डल में हमारा राजा रहता है, तो हाथियों के राजा के पास एक दूत भेजो जो उससे जाकर कहे कि चांद देवता, तुम्हें इस तालाब में आने से रोकते हैं। क्योंकि हमारा परिवार इसके चारों ओर

बसता है। ऐसा करने से शायद वे लोग मान जाएं।

तब दूसरे लोगों ने कहा—यदि ऐसी बात है तो लम्बकर्ण नाम का खरगोश जो बात करने में बड़ा होशियार दूत है उसे वहां भेजा जाए।

सब लोगों ने यह बात मान ली और लम्बकरण को दूत बनाकर हाथी राजा के पास भेजा गया। वहां जाकर वह दूत हाथी से बोला—

अरे दुष्ट हाथी तू इतना निडर होकर उस तालाब में नहाने क्यों आता है। मैं तुम्हें यही कहने आया हूं कि आज के पश्चात् उस तालाब में मत आना।

यह सुनते ही हाथी राजा बोला—"अरे भाई! तुम कौन हो?"

मैं लम्बकरण नाम का खरगोश हूं और चन्द्रमण्डल में रहता हूं, इस समय भगवान चन्द्र ने मुझे अपना दूत बनाकर तुम्हारे पास भेजा है।

राजा हाथी ने उसे चन्द्रमा दूत जान झट से कहा—भाई! चांद की जो आज्ञा हो हमें बताओ।

महाराज! आप और आपके साथियों ने उस तालाब पर जाकर बहुत से खरगोशों को मार डाला। सो आप क्या यह नहीं जानते कि यह मेरा परिवार है।

"इस समय चांद देवता कहां हैं?"

"वह इस समय उन दुःखी खरगोशों के पास हैं और उन्हें हौसला दे रहे हैं।"

"यदि तुम्हारी बात सत्य है तो हमें चांद देवता के दर्शन करवा दो ताकि हम अपने घर वापिस चले जाएं।"

"ठीक है, आप मेरे साथ अकेले ही आओ, मैं आपको चांद के दर्शन करवाता हूं।"

इस प्रकार वह चालाक दूत खरगोश रात के समय उस हाथी राजा को तालाब के पास ले गया। यहां पानी में चांद की

छाया पड़ रही थी ।

"लो महाराज देखो मेरे स्वामी चांद को ।"

उस हाथी ने जैसे ही तालाब में चांद को देखा तो उसे विश्वास हो गया कि देवता स्वयं इस तालाब में आ गए हैं । अब तो यहां से जाना होगा । इस प्रकार हाथी चाँद को प्रणाम करके वापस चल पड़ा । खरगोश आनन्द से रहने लगे ।

मैं आपको यह बताना चाहता था कि बड़ों के नाम से भी बहुत प्रभाव पड़ता है । उनके नाम से ही लोग डर जाते हैं ।

यह बात याद रखने योग्य है कि आलसी बुजदिल, कायर, वचन न निभाने वाले और पीठ पीछे निन्दा करने वालों को भी कभी राजा मत बनाओ । प्राचीन काल में दुष्ट राजा के पास जाकर न्याय मांगने वाले खरगोश और गौरैया नाम के दो जानवर रहते थे ।

"फिर उनका क्या हुआ ।"

लो सुनो, मैं उन दोनों की कहानी सुनाता हूं ।

पापी का फैसला

पहले मैं एक वृक्ष पर रहता था । उसी वृक्ष के नीचे एक गौरैया रहता था । हम दोनों में बड़ी मित्रता थी । हम लोग देवी-देवताओं की पूजा ब्राह्मणों का आद्र, वेदों का पाठ करते । जंगल में घूमते अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे ।

एक दिन गौरैया अपने दूसरे साथियों के साथ धान के खेत में गया । उस दिन जब वह रात तक भी वापस न आया तो मेरे को बड़ी चिन्ता हुई । मैं डर रहा था कि मेरा मित्र किसी जाल में तो नहीं फंस गया अथवा किसी पापी ने उसे मार डाला हो ।

इस प्रकार कई दिन बीत गए, किन्तु मेरा मित्र वापस न आया । एक दिन शाम के समय एक खरगोश मेरे मित्र के बिल

में घुसता नजर आया। मैंने सोचा अब इस खरगोश को यहां से नहीं भगाना चाहिए। क्योंकि गौरैया के स्थान पर यहीं पर मेरा मन लगाए रखेगा। इस प्रकार वह खरगोश वहीं पर रहने लगा।

तभी क्या एक दिन गौरैया भी परदेश से खब मोटा-ताजा होकर वापस आ गया। उसने आते ही अपने घर में घुसे खरगोश से कहा कि भाई तुम मेरा घर खाली कर दो।

खरगोश ने कहा, अरे यह तुम्हारा घर नहीं मेरा है। तुम यहां क्या करने आए हो। तुमने सुना नहीं कि स्मृति में लिखा है, कुआं, तालाब, देवालय और वृक्षों को एक बार छोड़कर दुबारा इन पर अपना अधिकार नहीं जमा सकता। दस वर्ष जिसने किसी जगह का भोग किया हो, उसके भोग ही प्रमाण है। गवाह या लेख नहीं। यह नियम मनुष्यों के लिए मुनियों ने बनाया है, परन्तु पशु-पक्षी का अधिकार तब तक ही रहता है। जब तक वे यहां रहते हैं।

गौरैया बोला, "अरे भाई! यदि तुम इन धार्मिक बातों पर विश्वास रखते हो तो चलो चलकर किसी विद्वान से फैसला करवा लेते हैं।"

"ठीक है, चलो!" खरगोश इतना कहकर उसके साथ चल पड़ा।

मैं भी इन दोनों के झगड़े का अन्त देखने के लिए इनके पीछे-पीछे चलने लगा था।

इन दोनों को अपनी ओर आते देखकर एक मोटा-सा काला बिल्ला नदी के तट पर जा तीन पांव पर खड़ा हो अपने आप ही बोलने लगा।

भाई यह संसार आसार है, जीवन व्यर्थ है। इन्द्रजाल के समान यह परिवार है, सो धर्म को छोड़कर और कोई रास्ता नहीं कहा भी है—यह शरीर सदा नहीं रहता, मौत सदा रहती है। इसलिए धर्म कार्य करना चाहिए। वृक्ष से अधिक प्रिय तो उसके फल और फूल होते हैं। दूध से घी अच्छा। दूसरों को

दुःख देना पाप है। मानव सेवा सबसे अधिक पुण्य है।

बिल्ले को नदी तट पर धर्म उपदेश देते देख खरगोश ने गौरैये से कहा, देखो भाई यह काफी धर्मी लगता है। इसके पास चल कर हम न्याय करवा लें।

ठीक है, यह कह दोनों उस बिल्ले के पास जाकर बोले, हे धर्म पुत्र हमारा एक झगड़ा है। आप धर्म को सामने रखकर हमारा फैसला कर दें। जो हममें से झूठ बोलेगा उसे खा जाना।

बिल्ला बोला, भाइयो यह पाप की बात मत कहो। नर्क में गिरने वाले मार्ग से मैं हट गया हूं। अहिंसा ही धर्म मार्ग है, कहा भी है, क्योंकि सज्जनों ने अहिंसा को ही धर्म माना है, उन्होंने कहा है कि जूं खटमल आदि की भी रक्षा करें। भाई जीव हत्या सबसे बड़ा पाप है, सो मैं तुम्हें खाऊंगा नहीं, हां तुम्हारी हार जीत का फैसला कर दूंगा। मैं बूढ़ा हूं दूर से तुम्हारी बात नहीं सुन सकता, सो मेरे पास आकर अपनी-अपनी बात कहें जिससे मैं ठीक फैसला कर सकूं। कहा भी गया है जो मान से, लोभ से और क्रोध से भय से जो झूठ बोलता है वह नर्क में जाता है। सभा में जो साफ बात नहीं कहता। वह कैसा फैसला करता हो उसे दूर से छोड़ दो। इसलिए बेधड़क होकर मेरे पास आओ और साफ-साफ बात कहो।

इस प्रकार उस पापी ने उन दोनों को ऐसा विश्वास दिलाया कि वे उसके पास पहुंच गए।

तब उस पापी ने एक साथ ही उन दोनों को पकड़ लिया। एक को पंजों से दूसरे को मुंह मारकर खा गया। इसलिए मैं कहता हूं नीच स्वामी की भांति यदि तुम इस उल्लू को राजा बनाओगे तो रात के अंधे की भांति, खरगोश और गौरैया की भांति मारे जाओगे।

कौवे की बात सुनकर सभी पक्षी कहने लगे कि यह बिल्कुल ठीक कहता है। अब हम फिर कभी मिलकर राजा का चुनाव करेंगे। यह कहकर सब लोग चले गए। केवल उल्लू अपनी पत्नी

के साथ वहां पर बैठा रह गया और बोला कोई है ? क्या मेरा राजतिलक नहीं करोगे।

कोयल बोली, भाई उल्लू ! कौवे ने आपके राजतिलक में बाधा डाल दी है। अब तुम राजा नहीं बन सकते, फिर सभी पक्षी अपने-अपने स्थानों को जा चुके हैं अब तो केवल एक वही कौवा बाकी बैठा रह गया है। यदि तुम चाहो तो इससे ही बात कर सकते हो।

उल्लू उस कौवे की ओर घूरकर देखा और बोला।

क्यों रे दुष्ट ! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था जो तूने मेरे राजा बनने में रोड़ा अटकाया। याद रख आज से तेरा और हमारा पारिवारिक बैर हो गया। विद्वान यही कहते हैं कि तलवार का घाव भर सकता है लेकिन जबान से निकाले बुरे शब्दों का जख्म कभी नहीं भर सकता। यह कहकर उल्लू अपने घर की ओर चला गया। इसके साथ ही कौवे और उल्लू की कौमी दुश्मनी शुरू हो गई थी। ठीक ही कहा है कि विद्वान को चाहिए कि सभा में किसी की निन्दा न करे।

उल्लू के जाने के पश्चात् कौवा भी उड़ गया।

इस प्रकार हमारा और कौवे का जातिगत वैर आरम्भ हो गया था।

कौवों का राजा बोला अब हमें क्या करना चाहिए।

उसने कहा कि महाराज, ऐसी हालत में भी बुरे रास्ते के अलावा एक और महान मार्ग है, उसको अपनाकर मैं स्वयं विजय के लिए जाऊंगा और दुश्मन को धोखा से मारूंगा, कहा भी है कि बुद्धिमान और ज्ञानी बलवान शत्रु को भी उस प्रकार छल लेते हैं जैसे ठगों ने ब्राह्मण से बकरा ठग लिया था।

राजा बोला; यह कैसे ?

उसने कहा, लो सुनो—

ठगों की चाल

एक नगर में पूजा-पाठ करने वाला एक पंडित रहता था, उसने एक बार माव मास में जबकि ठंडी हवाएं चल रही थीं, आकाश पर बादल छाए थे। हल्की-हल्की बूंदाबांदी हो रही थी, उसने एक गांव में जाकर अपने जजमान से एक पशु मांगा, जज-मान ने अपने पंडित को एक मोटा बकरा दे दिया। पंडित उस बकरे को लेकर अपने शहर की ओर आ रहा था कि रास्ते में उसे कुछ ठग मिल गए।

उन ठगों ने बकरे को देखकर आपस में कहा।

वाह, इस पशु के भोजन से ही आज आनन्द लें। हमें इस पंडित से यह बकरा ठगना चाहिए। इस तरह उन ठगों ने मिल कर एक योजना बनाई।

उनमें से एक ने भेष बदलकर उस पंडित के सामने से आते हुए कहा कि ओ मूर्ख पंडित ! तुम पंडित होकर एक गंदे कुत्ते को कंधे पर उठाए जा रहे हो। कहा भी गया है। कुत्ता, मुर्गा, ऊंट, गधा, यह सब छूने के योग्य नहीं होते।

पंडित को उसकी बात पर बड़ा क्रोध आया। वह झट से बोला, अरे पागल, तुम अंधे हो जो बकरे को कुत्ता बता रहे हो।

पंडित जी ! गुस्सा क्यों करते हो जाओ अपने रास्ते से जाओ।

वह पंडित उसे वहीं पर छोड़कर आगे बढ़ गया। अभी वह थोड़ी दूर ही चला होगा कि उसे दूसरा ठग सामने से आता दिखाई दिया। उसने पास आकर कहा।

"हे पंडित ! यह कितने दुःख की बात है कि तुम मरे हुए बछड़े को कंधे पर उठाए जा रहे हो ।"

पंडित क्रोध से बोला, अरे क्या तुम्हें यह बकरा नहीं नजर आता जो इसे मरा हुआ बछड़ा बता रहे हो ।

उसने कहा, पंडितजी ! देखो गुस्से में मत आओ । मुझे इससे क्या लेना-देना है । जाओ अपने घर जाओ ।

इस प्रकार पंडित वहां से चल पड़ा तो आगे थोड़ी दूरी पर उसे भेष बदले हुए तीसरा ठग मिला और बोला ।

अरे भैया ! यह क्या तुम इस गधे को कंधे पर लादे चले जा रहे हो ।

"क्या यह गधा है ?" पंडित ने आश्चर्य से उस ठग की ओर देखा और फिर किसी गहरी सोच में पड़ गया । उसकी समझ में कुछ भी तो नहीं आ रहा था ।

हां महाराज यह गधा ही तो है, भला इसमें पूछने की क्या जरूरत है ।

पंडित बेचारा और भी चिंतित हो गया । उसे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया था कि यह बकरा नहीं, हां यह कोई भूत-प्रेत है जो हर मिनट के पश्चात् अपना रूप बदल रहा है ।

डर के मारे उसने उस बकरे को वहीं जंगल में फेंक दिया और स्वयं तेजी से भाग निकला ।

तीनों ठग अपनी जीत पर खुश थे । उन्होंने उस बकरे को खाकर खूब आनन्द लिया ।

इसीलिए मैं कहता हूं कि बुद्धिमान बनो । ठगों से बचो, सांप को भी छोटी-छोटी चींटियां खा जाती हैं ।

"वह कैसे ?" काकराज ने पूछा ।

लो सुनो—

बहुमत की शक्ति

किसी कुम्हार के घर में एक बहुत मोटा सांप रहता था, एक बार वह अपने बिल से निकलकर साथ वाले छोटे-से बिल में घुसा तो उसका शरीर जख्मी हो गया। जख्मी सांप को देखकर चींटियां उस पर टूट पड़ी थीं। सांप ने बहुत सारी चींटियों को मारा अनेकों को कुचला, लेकिन फिर भी वह चीटियों को समाप्त न कर सका और न ही उन्हें डरा सका।

चींटियां घायल सांप के शरीर को नोच-नोचकर खा गईं। इस प्रकार से सांप मारा गया। इसलिए मैं आपसे कहता हूं कि हमेशा बहुमत की शक्ति ध्यान रखो और मैं आपसे जो भी कहता हूं उसे ध्यान से सुनो।

मैं सुन रहा हूं मन्त्री जी, आप कहो तो सही।

देखो महाराज! मैंने यही उपाय सोचा है जिसे पांचवां उपाय कहते हैं। इस प्रकार आप लोग मुझे अपना झूठा शत्रु घोषित करो और मुझे मार-पीटकर रास्ते में फेंक दो और स्वयं सब साथियों को लेकर सामने पहाड़ पर चले जाओ। मुझसे बहुत दूर, इस बीच शत्रु मुझे आपका शत्रु समझ कर अपना मित्र समझ अपने पास रखेगा और मैं उन्हें झूठी मित्रता का विश्वास दिलाकर उनके सारे भेद लेता रहूंगा, मैं उनको धोखे से मारता रहूंगा, बस यही एक चाल है जिससे हम शत्रु तक पहुंचकर उसे समाप्त कर सकते हैं।

राजा ने अपने मन्त्री की बात मान ली और उसने झूठ-मूठ में उससे झगड़ा आरंभ कर दिया। यहां तक कि नौबत मार-पीट तक पहुंच गई।

बस फिर क्या था उस मंत्री कौवे को मार-पीट कर सामने चौराहे पर फेंक दिया गया।

जख्मी मंत्री को देखकर उल्लुओं के जासूसों ने कौवों का भेद लेने का सबसे बढ़िया रास्ता निकाल और शत्रु का शत्रु, मित्र वाली बात उनकी समझ में आई, उधर कौवों का राजा अपनी प्रजा समेत अपने राज्य छोड़कर पहाड़ों की ओर निकल भागा था।

उल्लू राजा ने जब अपने गुप्तचरों से यह सारी कहानी सुनी तो वह बहुत खुश हुआ। यह अवसर तो बहुत अच्छा था, एक तो शत्रु का निवास स्थान मिलेगा। दूसरा उनका मित्र शत्रु— जो अब हमारा मित्र होगा, उनके सारे भेद देगा। यह कह कर उस कौवा राजा की ओर निकल पड़ा, किन्तु उन्होंने जाकर देखा तो वहां कुछ भी नहीं था, सभी कौवे भाग चुके थे। उल्लू राजा ने अपने सैनिकों से कहा—

देखो हमें यथाशीघ्र उन कौवों का रास्ता पता लगाकर किले में घुसने से पहले मार देना चाहिए।

जख्मी कौवे ने जब उनके मुंह से यह शब्द सुने तो उसे इस बात पर बड़ा दुःख हुआ कि वे लोग उसे तो उठाने की बात सोच ही नहीं रहे। फिर उसने एक योजना सोची…और लगा धीरे-धीरे बोलने…

उसकी आवाज सुन सभी उल्लू उसकी ओर मारने को भागे उन्हें अपनी ओर आते देख वह बोला।

भाइयों! मैं कौवा राजा का मंत्री हूं। उस पापी राजा ने मार-मार कर मुझे अपने राज्य से निकाल यहां पर फेंक दिया है। सो आप लोग मुझे अपने राजा के पास ले चलो मुझे उससे बहुत कुछ कहना है।

तब वे उल्लू उसे अपने राजा के पास ले गए। उल्लू राजा ने उसे घायल हालत में देखकर पूछा, अरे, यह तुम्हारी हालत, सारे शरीर में से खून…यह सब क्यों हुआ?

उल्लू महाराज, मैं क्या बताऊं उस पापी कौवा राजा ने यह मेरा हाल किया है, वह आप पर हमला करना चाहता था। मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका, क्योंकि मैंने उन्हें कहा था कि यह लोग हमसे बहुत ताकतवर हैं। इसलिए इनको कुछ भेंट देकर संधिकर लेनी चाहिए। यह सुनते ही उसने मुझे आपका गुप्तचर समझकर यह सजा दी। अब मैं आपके चरणों में पड़ा हूं। अब तो आप ही मेरे मालिक हैं, उस धोखेबाज और अत्याचारी ने मुझे मारकर फेंक ही दिया है। अब तो मुझे उससे बदला चुकाना ही है और मैं आपको उनके निवासस्थान तक ले जाकर उन सबको मरवा दूंगा।

उल्लू राजा ने कौवे की बात सुनकर अपने पांचों मंत्रियों को बुलाकर उनसे यह पूछा कि अब मुझे क्या करना चाहिए।

पहले मंत्री ने कहा, यह हमारा शत्रु है इसे मार देना चाहिए, दुर्बल शत्र को बल पाने से पहले ही मार देना चाहिए, क्योंकि बल पाकर वह बहादुर हो जाता है। ऐसा सुना जाता है, जलती हुई चिता, कटा हुआ फण, देखो, जो प्रेम टूट गया वह फिर नहीं बढ़ता।

उल्लू राजा ने पूछा।

"यह कैसे?"

मंत्री बोला, लो सुनो—

लालची बेटा

किसी नगर में हरि नामक एक ब्राह्मण रहता था। वह खेती तो करता था किन्तु उसे उसका मन चाहा फल नहीं मिलता था, एक दिन गर्मी के दिनों में धूप से व्याकुल हरि अपने खेतों के बीच में एक वृक्षके नीचे लेटा हुआ था। पास ही फण फैलाए एक सांप को देखकर वह सोचने लगा कि आज तक मैंने इस नाग

देवता की पूजा नहीं की तभी तो मुझे अपनी मेहनत का फल नहीं मिलता इसलिए आज मैं इस नाग देवता की पूजा करूंगा।

यह सोचकर वह कहीं से दूध मांग लाया और एक बर्तन में डालकर उसे सांप के सामने ले जाकर बोला।

हे नाग देवता ! मुझे यह नहीं पता था कि आप यहां रहते हैं, तभी मैं पूजा नहीं कर पाया, इसलिए मुझे क्षमा करें, यह कहकर उसने उस दूध को वहीं रखा और स्वयं घर चला गया।

सुबह उठकर जब हरि नाग देवता वाले स्थान पर आया उसने दूध वाले बर्तन को देखा तो उसके अन्दर सोने का एक सिक्का पड़ा था। वह बहुत खुश हुआ यह धन पाकर।

अब तो हरि रोज ही उस नाग देवता के लिए दूध लाकर रखता और इसके बदले में सुबह ही सोने का एक सिक्का मिल जाता।

एक दिन हरि ने कहीं बाहर जाना था। उसने सांप के लिए दूध ले जाने के लिए अपने लड़के से कह दिया। बेटा भी वहां पर दूध रख कर जैसे ही सुबह वहां गया तो उसे सोने का सिक्का मिला।

उस लड़के ने सोचा इस सांप के पास तो बहुत से सोने के सिक्के होंगे। मैं क्यों न इसे जान से मारकर सारे सिक्के-के-सारे निकाल लूं।

यही सोचकर उसने सांप के सिर पर लाठी दे मारी। किन्तु सांप बड़ा होशियार था, वह लाठी की चोट बचा गया साथ ही उसने उस लड़के को डस लिया, जिससे वह लड़का वहीं पर मर गया।

दूसरे दिन हरि वापस आया तो उसने अपने आदमियों से अपने बेटे की मृत्यु की खबर सुनी, तो उसने कहा जो प्राणी अपने शरण में आए पर दया नहीं करता। वह इसी तरह नष्ट हो जाता है।

लोगों ने पूछा, यह कैसे ?

लो सुनो—

प्यार को प्यार दो

किसी देश में चित्ररथ नाम का एक राजा रहता था। उसका एक तालाब था जो सैनिकों से सुरक्षित था। उस तालाब में बहुत से सोने जैसे हंस रहते थे। वह छठे मास एक-एक पंख छोड़ा करते थे।

कुछ दिन के पश्चात् वहां एक सोने के रंग का बड़ा पक्षी आया उसे देखकर सब हंसों ने कहा कि आप हमारे बीच में न रहें, क्योंकि हर छठे महीने एक-एक सोने का पंख देकर हमने इसे खरीद लिया है।

इसी बात को लेकर उनमें झगड़ा हो गया। तब उस सोने के रंग वाले पक्षी ने राजा के पास जाकर कहा, महाराज, ये पक्षी यह कहते हैं कि राजा हमारा क्या करेगा ? हम यहां पर किसी को नहीं रहने देंगे। इसलिए आपसे यही प्रार्थना है कि मुझे इन्साफ दें।

राजा ने अपने सैनिकों से कहा कि तुम लोग इसी समय जाकर उन पक्षियों को मारकर ले आओ।

राजा का आदेश सुनते ही सैनिक वहां से चल पड़े।

उन सैनिकों को अपनी ओर आते देखकर एक बूढ़े हंस ने कहा।

भाई अब हमारी खैर नहीं। अब यहां से भाग निकलो।

उन सब ने ऐसा ही किया और वहां से भाग निकले। इस प्रकार वे सारे के सारे वहां से उड़ गए।

इसीलिए कहा गया है कि शरण आए को कभी मत ठुकराओ।

कहा जाता है कि कपोत ने शरण में आए हुए शत्रु का भी

यथायोग्य सत्कार किया और अन्त में अपने मांस से उसका पेट भरा।

"यह कैसे ?" कौवा ने पूछा।

लो सुनो—

त्याग से स्वर्ग

किसी जंगल में एक शिकारी रहता था। उसका न तो कोई मित्र था और न ही कोई सगा-सम्बन्धी। बस वह अकेला ही था जैसे ही वह सुबह उठता शिकार के लिए निकल जाता।

एक दिन जंगल में घूमते-घूमते उसे एक कबूतरी मिल गई, शिकारी ने उसे पिंजरे में डाल दिया। अभी वह जंगल में ही घूम रहा था कि चारों ओर से काले बादल आ गए जिनके कारण चारों ओर घोर अंधेरा छा गया। साथ ही तेज आंधी आई, वर्षा भी होने लगी। शिकारी बेचारा डर गया, इस तूफान से बचने के लिए एक बड़े वृक्ष के नीचे जाकर खड़ा हो गया। कितनी देर तक वर्षा होती रही। तूफान तो थम गया, किन्तु साथ ही रात हो गई थी। उसे भूख भी काफी लग आई। वह सोचने लगा कि इस घने जंगल में यदि कोई ऐसा मित्र मिल जाए जिसके पास रहकर वह अपनी भूख मिटा सके।

उस वृक्ष पर बहुत दिनों से एक कबूतर रहता था। वह अपनी पत्नी के न आने से बड़ा दुःखी था। इस भयंकर तूफान और वर्षा में वह बेचारी न जाने कहां खो गई होगी। उसके बिना तो उसे अपना सारा घर सूना लग रहा था, घर को घर नहीं कहते, बल्कि पत्नी को घर कहते हैं। वह रोते-रोते कह रहा था।

पति के मुंह से दर्द-भरी बातें सुनकर उस शिकारी के पिंजरे में बंद कबूतरी बहुत संतुष्ट हुई और बोली।

वह स्त्री, स्त्री नहीं मानी जाती जिसका पति उससे खुश न

हो। यदि पत्नी अपने पति को खुश करती है तो सारे देवता खुश हो जाते हैं। हे पति मैं तुम्हारे सुख की बात कहती हूं लो सुनो।

अपने प्राणों पर खेल कर भी घर आए मेहमान की रक्षा करनी चाहिए। सर्दी का मारा और भूख का सताया यह शिकारी अब तुम्हारी शरण में आया है, अब इसकी रक्षा करो, इसकी इज्जत करो, क्योंकि शाम को घर आए हुए मेहमान की जो पूजा नहीं करता उसको बहुत पाप लगता है।

कबूतर बोला, इस पापी शिकारी ने तुम्हें बंद कर रखा है यह सोचकर तुम इस पर दया मत करो।

यह सब तो मेरे पुराने कर्मों का फल है। दुःख, रोग, बन्धन यह अपने कर्मों के ही फल होते हैं, इसलिए तुम मेरे बन्धन की चिंता को छोड़ो अपना कर्त्तव्य और धर्म का पालन करो।

कबूतर अपनी पत्नी की बात मान उस शिकारी के पास गया और बोला, भाई मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं, इसलिए मैं आपकी सेवा में कोई कमी नहीं रखूंगा। इस घर को तुम अपना ही घर समझो।

शिकारी कबूतर को देख बड़ा खुश हुआ और प्यार से बोला भैया मुझे इस सर्दी और भूख से बचाओ।

शिकारी की बात सुन कबूतर उड़कर कहीं से एक आग का अंगारा उठा लाया उसे सूखे पत्तों पर रखकर उनमें आग लगा दी। फिर शिकारी से बोला, लो भाई अब आप आराम से ताप-कर अपनी सर्दी दूर करो। मुझे तो इस बात का दुःख है कि मेरे पास कोई खाने की चीज भी नहीं, जिससे मैं आपकी भूख मिटा सकूं, मैं अभागा हूं, जो अपने मेहमान के खाने का प्रबन्ध नहीं कर सकता। उसका घर में रहने का क्या लाभ है। अब तो मैं इस शरीर को भी तुम्हारे अर्पण करके अपने-आपको मुक्त करता हूं।

इतनी बात कहकर कबूतर ने आग के चारों ओर चक्कर काटे फिर आग में अपने आपको भूनकर भूखे शिकारी के हवाले कर दिया।

कबूतर की इस कुर्बानी को देख शिकारी का मन पिघल गया और वह बोला, जो पाप करता है, उसे उसका फल अवश्य मिलता है और मैं तो जीवन-भर पाप करता रहा हूं। मैं तो अवश्य नर्क में गिरूंगा। इस कबूतर ने अपना मांस अर्पण करके मुझे एक नया रास्ता दिखाया है। आज से मैं तप करूंगा और अपने शरीर को इस तरह सुखा दूंगा जैसे गर्मी में जल, यह कहकर उस शिकारी ने अपना जाल और लाठी को दूर फेंक दिया, साथ ही पिंजरे में कैद कबूतरों को भी आजाद कर दिया।

कबूतरी ने अपने पति को उस आग में जले देखा तो वह बहुत जोर-जोर से रोने लगी। दुःख के मारे बिलखती हुई वह भी उसी आग में गिर गई। यह सब कुछ देख शिकारी भी साधु बन गया। फिर भगवान का नाम लेते हुए उसने कहा कि यदि यह बेजुबान पक्षी इतना बड़ा त्याग कर सकती है तो मैं इंसान होते हुए क्या त्याग नहीं कर सकता।

इतना कहते ही शिकारी भी उसी आग में कूद पड़ा।

उसके इस तप और त्याग के बदले में उसे स्वर्ग मिला।

इस कथा को सुनते ही उल्लू राजा बोला कि इस हालत में आप क्या ठीक समझते हैं।

महाराज इसे मारना तो चाहिए ही नहीं, क्योंकि जो रोज मुझसे घबराती थी। वह प्यार करने लगी। उसने कहा जो कुछ मेरे पास है ले जा।

चोर ने कहा था कि तेरे पास तो चुराने योग्य तो कुछ भी नहीं है। फिर कभी आऊंगा।

अरे भाई यह चोर कौन है ? यह बीच में कहां से आ गया ? जरा जल्दी से बताओ।

सदा भलाई करो

किसी शहर में एक सेठ रहता था, दुर्भाग्य से उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् जब वह अपने घर के अकेलेपन से दुःखी हो गया तो उसने बहुत-सा धन देकर किसी वैश्य की लड़की से शादी कर ली।

इस प्रकार वह सेठ उस लड़की के साथ बड़े आनन्द से रहने लगा था। एक बार जैसे ही वह दोनों रात्रि के समय पलंग पर लेटे हुए थे कि एक चोर उनके कमरे में घुस आया। डर के मारे वह लड़की उस बूढ़े पति से चिपट गई। सेठ को उसके इस प्रकार चिपटने से बड़ा आनन्द आया, उसने सोचा जब से उसकी शादी हुई है यह पहली बार ऐसा प्यार कर रही है। फिर अचानक ही उसने सामने खड़े चोर को देखा तो समझ गया कि इस चोर के डर से यह मुझसे चिपट रही है। आज से पहले तो यह मुझसे घृणा करती थी। मुझे अपने पर बोझ मानती थी।

लेकिन आज इस चोर ने हमारे घर में आकर मुझे पत्नी का सच्चा प्यार तो दिया। यह चोर तो मेरे लिए देवता है। इस-लिए सेठ ने चोर से कहा।

भाई तुझे जो कुछ भी चाहिए ले जा।

नहीं सेठ जी ! अब आपके पास ऐसी कोई चीज नहीं ज़िसे मैं चुरा सकूं। हां यदि कोई चुराने योग्य चीज थी तो वह आपकी पत्नी, लेकिन वह तो आपसे ऐसे चिपट गई है, जैसे बहुत प्यार करती हो। इसलिए मैं अब फिर कभी आऊंगा।

वह कहकर चोर वहां से चला गया।

× × . ×

इससे यह अर्थ निकलता है कि भला करने वाले चोर को भी लोग अच्छा समझते हैं। फिर शरण में आए हुए शत्रु की तो बात ही क्या है—यह बात ध्यान रखने योग्य है महाराज, शत्रु का शत्रु आपका मित्र बनता है। यह हमारी ताकत बढ़ाएगा और हमें उनके सारे भेद बताएगा। क्योंकि उन्होंने इसे मार-पीटकर निकाला है। अब इसका कोई ठिकाना नहीं।

उल्लू राजा ने दूसरे मंत्री से पूछा, "इसके बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?"

महाराज इसे मारना नहीं चाहिए, क्योंकि आपस में लड़ने वाले शत्रु अपने हित में होते हैं। जैसे चोर ने ब्राह्मण की जान छुड़वाई और राक्षस ने दो गायें—

यह कैसे हुआ जरा विस्तार से बताओ मंत्री !

फूट से लाभ

किसी शहर में एक पंडित रहता था। उसका कार्य दान लेना था जिससे उसके घर का खर्च चलता था। इसी कारण वह अपने सिर के बाल, दाढ़ी नाखून बढ़ाए रहता था। तप और त्याग से उसका शरीर काफी सूख गया था जिसके कारण वह अधिक भाग-दौड़ नहीं कर सकता था।

उसे एक जजमान ने दो बछड़ियां दान में दे दीं थीं। जिन्हें पाल-पोश कर उसने बड़ा किया। एक दिन एक चोर ने सोचा कि इन दोनों गायों को मैं चोरी कर लूं। यही सोच वह घर से रस्से लेकर निकला तो रास्ते में उसे एक बहुत बड़ा भयंकर व्यक्ति मिला। उसे देखकर चोर डर गया। चोर ने उससे पूछा।

"तुम कौन हो ?"

मैं ब्राह्मण का राक्षस हूं और तुम कौन हो ? उसने चोर से

पूछा।

मैं चोर हूं और इस शहर के प्रसिद्ध पंडित की दो गायें चुराने जा रहा हूं।

देख भाई ! मैं रात्रि को भोजन करता हूं और आज मैं उसी पंडित को खाने जा रहा हूं। यह तो और भी खुशी की बात है कि हम दोनों का शिकार एक ही है।

इस प्रकार वह दोनों मिलकर पंडित के घर पहुंच गये। जैसे पंडित सो गया तो राक्षस पंडित को खाने के लिए चल पड़ा।

"ठहरो भाई! पहले मुझे यह गायें ले जाने दो। इसके पश्चात तुम पंडित को खाना।" चोर बोला।

"अरे, यह कैसे हो सकता है ? यदि गायें की आवाज सुनकर पंडित जाग उठा तो मेरा काम बिगड़ जाएगा।"

"भाई राक्षस जब तुम पंडित को खाने जाओगे यदि उस समय वह बच गया तो मैं गायें न चुरा पाऊंगा, इसलिए पहले मुझे अपना काम करने दो।"

इस प्रकार वह दोनों झगड़ने लगे।

चोर बोला, "मैं पहले।"

राक्षस बोला, "मैं पहले।"

"मैं पहले···!"

"मैं पहले···!"

इस प्रकार की आवाजें सुनकर पंडित भी जाग उठा। तब चोर ने उससे कह दिया।

पंडित जी ! यह राक्षस तुम्हें खाना चाहता है।

पंडित जी ! यह चोर तुम्हारी इन दोनों गायों को चुराना चाहता है।

यह सुनकर उस पंडित ने अपने देवता की पूजा करके उस राक्षस को भगा दिया।

इसलिए मैं कहता हूं कि आपस में लड़ते हुए शत्रु का लाभ उठा लेना चाहिए। फूट में ही सदा हार होती है।

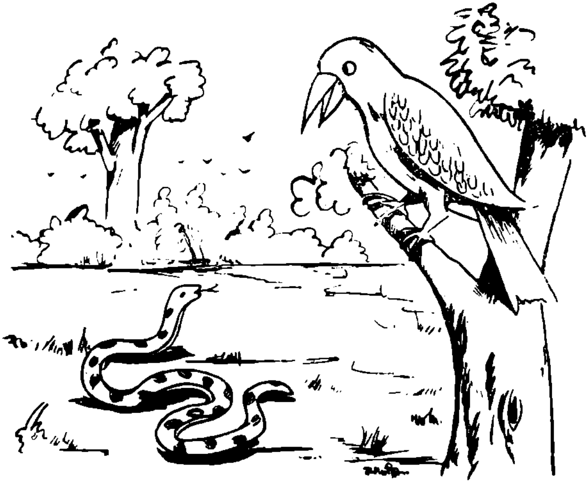
उसकी बातें सुनकर उल्लूराज ने अपने बड़े मंत्री से पूछा।

अब आप ही बताएं इनकी बातों से आप क्या फैसला करते हैं।

वह बोला, महाराज ! न मारने योग्य ही यह है क्योंकि कहा गया है, जो प्राणी एक दूसरे की रक्षा नहीं करते व बांबी में रहने वाले सांप की भांति मौत को प्राप्त होते हैं।

"क्या तुम मुझे उस सांप की कहानी सुना सकते हो ?"

जी हां महाराज !



अपना भेद किसी को मत दो

देवकरण नाम के राजा के पुत्रको सांप ने डस लिया तो वह उस सांप के जहर से बुरी तरह दुःखी रहने लगा। इसी दु.ख के कारण उसने अपना घर छोड़ दिया और वह किसी और देश में जाकर एक मन्दिर में रहने लगा। यहां पर वह भिक्षा मांगकर अपना पेट भरता था।

उस देश के राजा का नाम भली था। उसकी दो लड़कियां थीं जो सुबह होते ही सूर्य को नमस्कार करती थीं। उनमें से एक कहती थी कि···

"महाराज की जय हो ! जिसकी कृपा से सब कुछ मिलते हैं।"

दूसरी कहती—

"जो आपके नसीब में लिखा है, वही मिलेगा, वही खाओ।"

दूसरी लड़की की बात सुनकर राजा को बड़ा क्रोध आया उसने अपने मंत्री से कहा कि यह लड़की दुष्ट है। यह हमारा दिया खाती है और उसे भाग्य के पल्ले बांधती है, इसलिए इसे किसी विदेशी के हवाले कर दो। जिससे इसे पता चले कि हम बड़े हैं अथवा भाग्य।

ठीक है महाराज ! ऐसा ही होगा।

यह कहकर मंत्री ने उस लड़की को मन्दिर में रहने वाले बीमार राजकुमार के हवाले कर दिया। उस राजकुमारी ने उस बीमार राजकुमार को ही अपना देवता माना और उसे वहां से ले जाकर किसी और देश में चली गई।

वहां पर जाकर उन्होंने एक तालाब के किनारे पर अपना डेरा लगाया। राजकुमार को वहीं छोड़कर राजकुमारी दो नौकरों को साथ ले बाजार से खाने-पीने का सामान खरीदने चली गई।

जब वह वापस लौटी तो उसने आकर देखा कि राजकुमार एक बांबी पर सिर रखकर सो रहा है और एक सांप अपना फन फैलाए उसके मुंह से निकलने वाली हवा को पी रहा है। साथ वाली बिल से निकलकर दूसरा सांप भी ऐसा ही कर रहा था। उन सांपों ने जब एक-दूसरे को देखा तो बाद में आने वाले सांप नें पहले वाले सांप से कहा।

"अरे ओ दुष्ट ! तू इस राजकुमार को क्यों तंग कर रहा है ?"

"अबे तू मुझे क्या कह सकता है। तू भी तो अपनी बिल में रखे सोने की ढेर को गंदा कर रखा है।"

इस प्रकार दोनों ने एक दूसरे का भेद खोल दिया और एक सांप ने कहा कि क्या तुझे नहीं पता कि तेरी मौत केवल पुरानी कांजी पीने से हो जाती है।

दूसरा बोला, तू क्या तेरी भी दवा कोई नहीं जानता कि तू गर्म पानी से मर जाएगा।

वृक्ष के पीछे खड़ी राजकुमारी ने दोनों सांपों से भेद ले लिए और उसने वैसा ही करके सांप से डसे अपने पति का इलाज करके उसे ठीक कर लिया, दूसरे सांप के बिल को खोदने से उसे सोने का पूरा भंडार मिल गया था। इस बड़े खजाने को पाकर उसने अपने पति को ठीक करके वह अपने देश को वापस आई और यहां पर खुशी-खुशी अपना जीवन व्यतीत करने लगी। राजा हार गया था, बेटी जीत गई थी।

इसीलिए मैं कहता हूं कि आपसो भेद नहीं खोलने चाहिए।

उस मंत्री की बात सुनकर उल्लू राजा ने यह फैसला किया कि इस कौवे को मारना नहीं चाहिए। इसे अपने साथ ले चलना उचित होगा।

उनकी बात सुन कौवा मन ही मन खुश होकर बोला।

वाह रे मंत्रियों! आपने तो अपने फैसले से राजा को मरवा डाला। इसीलिए कहा है--

जहां पूजा न करने योग्य लोगों की पूजा हो और पूजा योग्य लोगों की बेइज्जती, वहां अकाल, मरण, भय, तीनों बातें होती हैं, विद्वानों ने उन्हें मित्र रूपी शत्रु बताया है, जो लाभ की बात न कह कर इसके विपरीत राय देते हैं। देश, मूर्ख मंत्रियों को पाकर राजा ऐसा नष्ट होता है जैसे सूर्य निकलने पर आंधी।

इस तरह उस कौवे को उठाकर वे अपने किले पर ले गए।

तब उस कौवे ने कहा—

महाराज! मुझे बचाकर आप क्या करेंगे, मुझे तो उन पापियों ने मार ही डाला है। अब तो मुझे जलती आग में डालकर समाप्त कर दीजिए।

"अरे भाई तुम आग में क्यों जलना चाहते हो?"

महाराज! मुझे उस पापी राजा ने मारा है। अब मैं मरकर उल्लू वंश में जन्म लेकर उससे बदला लेना चाहता हूं।

उल्लू राजा बोला, अरे तुम बड़े चालाक हो, तुम उल्लू वंश में पैदा होकर भी कौवों से प्यार करोगे, उनका ही भला

सोचोगे। क्योंकि यह बात सुनी जाती है कि सूर्य, बादल, हवा पहाड़ों को छोड़कर चुहिया ने अपने जाति वालों से ही प्यार किया—वास्तव में जाति प्रेम छोड़ना कठिन है।

मन्त्रियों ने कहा यह कैसे !

लो सुनो कहानी चुहिया की—



जाति प्रेम

गंगा नदी के किनारे एक आश्रम था। जिसके कुलपति थे श्री याक्ष जी, एक दिन वह गंगा से नहाने के पश्चात् अपने आश्रम लौटे तो उनके अंगुली से एक चुहिया लिपट गई। उसे बरगद के पत्ते में रख दुबारा से स्नान किया और फिर अपनी शक्ति से उस चुहिया को लड़की बना दिया और अपने पास रखकर अपनी पत्नी से बोले —

लो प्रिया ! यह कन्या तुम्हारे लिए है। तुम इसका पालन करना।

इस तरह से वह लड़की बारह वर्ष की हो गई, तो विवाह योग्य हुई देखकर पत्नी ने पति से कहा कि क्या आपको पता नहीं कि कन्या की शादी की आयु निकली जा रही है।

तब गुरूजी ने अपनी पत्नी से कहा कि यदि तुम और यह

लड़की पसंद करें तो मैं आदित्य भगवान् को बुलाकर इसकी शादी की बात कर दूं।

पत्नी बोली, इसमें कोई बुराई की बात नहीं। यह तो और भी अच्छी बात है।

पत्नी की बात मान याक्ष जी ने आदित्य भगवान को घर बुलाया, उन्हें देख लड़की बोली—

पिताजी ! यह तो अति जलाने वाले हैं किसी और को बुलाएं।

लड़की के वचन सुन याक्ष जी ने आदित्य भगवान से पूछा कि आपसे अच्छा कोई है ?

आदित्य (सूर्य) ने कहा कि मुझसे अच्छा तो बादल है जो मुझे भी अपनी चादर में ढांप लेता है।

तब मुनि जी ने बादल को बुलाया और लड़की से पूछा बोले बेटी क्या यह तुम्हें पसंद है ?

नहीं ! यह तो काला है किसी और को लाएं।

तब मुनिजी ने बादल से पूछा, भाई आपसे बढ़कर भी कोई है ?

जी हां, मुझसे बढ़ कर हवा है। जो मुझे भी मार कर टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

यह सुनकर मुनि ने हवा को बुलाया और लड़की से पूछा बोलो बेटी ! क्या यह तुम्हें पसंद है ?

लड़की कहने लगी यह तो बहुत चंचल है। मुझे यह पसंद नहीं और किसी को लाइए।

तब मुनि ने हवा से पूछा कि आपसे अच्छा कोई और है।

उसने कहा, मुझसे अच्छा पहाड़ है। जिसके रोकने से मैं भी गिर जाता हूं।

फिर मुनि ने पहाड़ को बुलाया और अपनी लड़की से कहा, देखो बेटी, क्या यह तुम्हें पसंद है ?

नहीं पिता जी, यह बहुत सख्त है।

तब मुनि ने पहाड़ से पूछा, पहाड़ राजा, क्या आपसे अच्छा कोई और है। तब पहाड़ ने कहा, मुझसे बढ़कर तो केवल चूहा ही है जो मेरा पेट फाड़कर उसमें सुराख कर देता है।

तभी मुनि ने चूहे को बुलाया और अपनी बेटी से कहा, बोलो बेटी ! क्या यह तुम्हें पसंद है।

लड़की ने चूहे को देखा और अपने मुनि पिता की ओर देखकर बोली, जी हां, आप मुझे चुहिया बनाकर इसके साथ शादी कर दें ताकि मैं अपना जीवन शांति से काट सकूं।

तब मुनि जी ने उसे अपनी शक्ति से चुहिया बनाकर उस चहे के साथ शादी कर दी।

इसीलिए मैं कहता हूं कि जाति प्रेम कभी नहीं जाता, इससे हर समय चौकस रहें।

× × ×

उल्ल राजा उसे अपने किले में ले जाकर बोला कि इस मेहमान कौवे को इसकी इच्छानुसार स्थान दो।

कौवे ने सोचा मुझे तो इनका नाश करना है, इसलिए यदि मैं इनके बीच में रहूंगा तो मैं अपना काम पूरा नहीं कर सकूंगा, इसलिए कौवे ने उल्लू राजा से कहा—

देखो महाराज, वास्तव में मैं आपका शत्रु हूं, इसलिए मैं नहीं चाहता कि मुझपर कोई संदेह करे, बस आप मुझे अपने इस किले के बाहर ही बैठने दीजिए, यहीं पर रहकर मैं आपको प्रणाम करता रहूंगा।

उल्लू राजा ने कहा।

जैसी तुम्हारी इच्छा है, वैसा ही किया जाएगा।

तब वह कौवा उसी किले के द्वार पर रहने लगा और दूसरे उल्लू उसके लिए मनपसंद खाने ला-लाकर खिलाते। कुछ ही दिनों में वह मोर के समान मोटा-ताजा और बलवान हो गया।

उसे मोटा होते देखकर बूढ़े उल्लू ने कहा कि राजन ! आप और आपका मंत्री मंडल मूर्ख है, कहा भी है पहले तो मैं मूर्ख हूं

फिर प्रजा इसके बाद राजा और मंत्री भी मूर्ख हैं।

यह कैसे ?

मूर्ख ही मूर्ख

किसी वृक्ष पर त्रिकुख नाम का एक पक्षी रहता था। उसकी बीटसे सोना पैदा होता था। एक बार एक शिकारी उसका शिकार करने के लिए आया उस पक्षी ने उसके सामने बीट की, वह बीट जैसे धरती पर गिरी सोना बन गई। यह देखकर शिकारी को बड़ी हैरानी हुई। वह सोचने लगा कि मैं बचपन से लेकर अस्सी वर्ष की आयु तक पहुंचते हुए निरन्तर शिकार करता आया हूं, लेकिन आज तक मैंने किसी पक्षी की बीट में सोना नहीं देखा।

यह सोचकर उसने पेड़ पर जाल फेंक दिया—वह मूर्ख पक्षी उस जाल में फंस गया, शिकारी ने उसे पिंजरे में बन्द किया और घर की ओर चल दिया।

कुछ समय पश्चात् उस शिकारी ने सोचा कि मैं इस कीमती पक्षी को रखकर क्या करूंगा, क्योंकि यदि किसी ने इसके गुण को देखकर राजा से कह दिया तो निश्चय ही मेरे प्राण खतरे में होंगे, क्यों न मैं ही इस पक्षी को स्वयं ही राजा को दे दूं।

यह सोचकर शिकारी उस पक्षी को राजा के पास ले गया।

राजा ने जैसे ही सोने की बीट करने वाला पक्षी देखा तो बड़ा खुश हुआ उसने अपने नौकरों से कहा कि इस पक्षी को संभालकर रखना और इसकी पूरी तरह रक्षा करना।

पास खड़े मन्त्री ने कहा—

महाराज ! आप उस पागल शिकारी के कहने पर विश्वास कर रहे हैं, भला कोई पक्षी भी सोने की बीट कर सकता है। सो

इसे आप पिंजरे से आजाद कर दीजिए, बेकार के पक्षी को पिंजरे में रखने का क्या लाभ ?

मन्त्री का कहना मान राजा ने उस पक्षी को छोड़ दिया, पिंजरे से निकलते ही वह ऊंचे वृक्ष पर जा बैठा।

वहां पर बैठते ही उसने सोने की बीट कर दी।

राजा और मंत्री दोनों ही आश्चर्य से देखते रह गए पक्षी अपने स्थान से उड़ गया और जाते-जाते यह कह गया कि पहले तो मैं ही मूर्ख हूं, उसके पश्चात् तुम सब के सब…

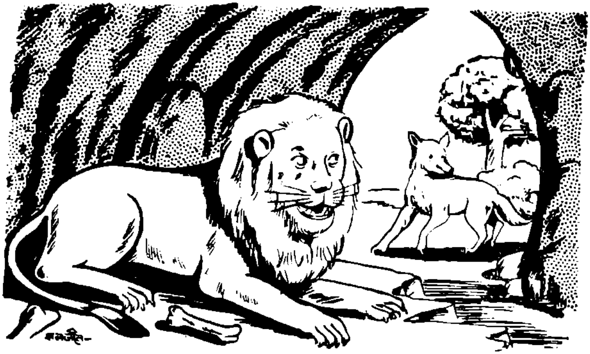
इस पर भी उन लोगों ने किसी की न सुनी और वह कौवे को मांस आदि खिलाकर पालते रहे।

उल्लू राजा के बड़े मंत्री ने अपने दल के लोगों को इकट्ठा करके कहा।

भाइयो ! अब यहां पर रहने में खतरा है। राजा ने हमारी बात न मानकर सबसे बड़ी भूल की है। इसलिए हमें यह स्थान छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाना चाहिए। बड़े लोग कहते हैं, जो मुसीबत के समय से पहले ही अपना बचाव नहीं करता वह पछताता है। इस जंगल में रहते-रहते मैं बूढ़ा हो गया। पर मैंने कभी गुफा को बोलते नहीं सुना।

वह कैसे बोल सकती है ? उन लोगों ने पूछा।

सुनो मैं तुम्हें बताता हूं।



बोलती गुफा

किसी जंगल में एक शेर रहता था। एक दिन वह सारे जंगल में भटकता फिरता रहा किन्तु उसे कोई शिकार न मिला । वह भूख से व्याकुल था। शाम के समय वह एक बड़ी गुफा के अन्दर घुस गया और वहाँ पर बैठकर सोचने लगा। शायद रात को कोई न कोई जानवर यहां अवश्य आएगा इसलिए चुपचाप बैठता हूं।

कुछ देर के पश्चात् उस गुफा का मालिक गीदड़ आया। उसने देखा कि गुफा में अन्दर जाने वाले शेर के पांव तो हैं, किन्तु उसके वापसी के नहीं। वह सोचने लगा अब तो वह मारा गया क्योंकि इसके अन्दर शेर जरूर है। पर मुझे कैसे पता चले।

कितनी देर तक गीदड़ अपने बचाव के लिए सोचता रहा फिर गुफा के द्वार पर जाकर बोला--

"हे गुफा ! हे गुफा !" यह आवाज दे वह थोड़ी देर के लिए चुप हो गया।

फिर वह बोला, हे गुफा ! क्या तुझे यह याद नहीं कि मैंने तुम्हारे साथ यह शर्त रखी थी कि जब भी मैं बाहर से आऊं तू मुझे बुलाएगी और मैं तुम्हें । अब देख यदि तू मुझे नहीं बुलाएगी तो मैं रहने के लिए किसी दूसरी गुफा में चला जाऊंगा ।

यह सुनकर शेर ने सोचा, निश्चय ही यह गुफा गीदड़ के आने पर इससे बोलती होगी । आज मेरे डर के कारण नहीं बोलती होगी, इसलिए क्यों न मैं ही इस गीदड़ को बुलाऊं जिससे यह गुफा के अंदर आ जाए फिर मैं इसे खा लूं । यह सोचते ही शेर ने उसे बुलाया । जिसकी आवाज सुनकर जंगल के सारे जानवर भाग खड़े हुए । इसके साथ ही गीदड़ भी यह कहता हुआ भाग निकला ।

जो भी मुसीबत आने से पहले उपाय करता है वही सुखी रहता है । जो भी ऐसा नहीं करता वह पछताता है । इस वन में रहते-रहते मैं बूढ़ा हो गया लेकिन मैंने कभी गुफा को बोलते नहीं सुना, इसलिए मैं आपसे यही कहता हूं कि आप लोग यहां से भाग निकलो, नहीं तो सब-के-सब मारे जाओगे ।

मन्त्री की बात सुन वे सब के सब उसके साथ जाने को तैयार हो गए । वे सब के सब उस पहाड़ी से बहुत दूर चले गए ।

उस बूढ़े मन्त्री के जाने पर कौवे ने सोचा—

वाह ! यह तो बहुत अच्छा हुआ, वही मंत्री तो इन सब में होशियार था, बाकी के तो सब बेकार हैं । अब तो इन्हें मैं आसानी से मार लूंगा, कहा भी है—जिस राजा के पास बुद्धिमान मन्त्री नहीं होते उसके विनाश में अधिक समय नहीं लगता ।

यही सोचकर वह कौवा, उस गुफा को जलाने के लिए अपने निवास स्थान पर एक-एक लकड़ी इकट्ठा करता रहा । उसकी तीव्र बुद्धि उल्लुओं के विनाश की बात सोच रही थी, उसकी इस चाल को मोटी अक्ल के उल्लू न समझ सके थे । इस तरह उसने अपने घौंसले के बहाने बहुत-सी लकड़ियां इकट्ठी कर ली थीं ।

एक दिन जब सुबह के समय सभी उल्लू अंधे होकर सो रहे

थे तो यह बुद्धिमान कौवा अपने राजा के पास गया और बोला, "महाराज ! मैंने शत्रु के सर्वनाश की सारी तैयारी कर ली है, आप कहीं से एक जलती हुई लकड़ी लाकर उस घौंसले पर फेंक दें। बस···सब सब शत्रु अन्दर ही जल जाएंगे। बस इतना कहते ही वह उड़ा।"

उसके जाने के पश्चात् सारे के सारे कौवे चोंचों में जलती लकड़ियां उठाकर उड़ते हुए आए उन्होंने उस घोंसले की बहुत सारी लकड़ियों के ढेर पर उन्हें फेंक दिया—

बस फिर क्या था।

सूखी लकड़ियों में आग भड़क उठी।

यह आग गुफा के अंदर भी पहुंच गई, दिन में तो उल्लुओं को वैसे भी नजर नहीं आता और ऊपर से भयंकर आग देखते ही सारे उल्लू जलकर राख हो गए।

इस प्रकार कौवे अपने राजा समेत फिर अपने पुराने किले में वापस आ गए और बूढ़े कौवे की बुद्धि से उनके राजा बहुत खुश हुए उन्हें अपने दरबार के लिए विशेष दूत और विशेष सलाहकार बना लिया।

जब कौवा राजा ने अपने इस विशेष सलाहकार से पूछा कि तुम उन उल्लुओं के बीच कैसे समय काटते रहे जो हमारे सबसे बड़े शत्रु थे।

तब बूढ़ा कौवा बोला, हे महाराज ! देखो पांडवों ने जंगलों में रहते हुए क्या दुःख नहीं सहे, इस प्रकार मैं भी अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए कष्ट सहता रहा। हां मैंने इन लोगों जैसे मूर्ख और कहीं नहीं देखे, मैं तो यही कहूंगा कि बुद्धिमान वही है जो मौके के अनुसार अपना रंग बदले, जैसे काले सांप ने बहुत मेंढकों को मार डाला।

"वह कैसे मारा ?"

सुनो महाराज—

राजनीति से शत्रु को मारो

वर्ण पर्वत में एक बूढ़ा काला सांप रहता था। वह बेचारा यह सोचता रहता कि मैं क्या करूं जिससे मेरा पेट भरता रहे।

एक दिन वह ऐसे तालाब पर चला गया जहां पर बहुत से मेंढ़क रहते थे। वहां पर जाकर वह बड़े धैर्य से एक कोने में बैठ गया। उसे इस प्रकार बैठे देखकर एक मेंढ़क ने पूछा।

मामा जी, क्या बात है आजकल आप बड़े आराम से बैठे रहते हैं? और कहीं जाते भी नहीं।

भाई! मैंने कहां जाना है। मैंने शाम को एक मेंढ़क को देखा जो अपना भोजन ढूंढ़ रहा था। मैं उसे पकड़ने चला। वह भी मुझसे डर के मारे भागकर एक ब्राह्मणों के झुंड में घुस गया, बस मुझे पता नहीं कि फिर वह कहां गया। मगर मैंने क्रोध में आकर एक ब्राह्मण के लड़के को काट लिया जिससे वह मर गया। उसके मरने पर उस ब्राह्मण के बाप ने मुझे शाप दिया।

क्योंकि तूने मेरे बेगुनाह बेटे को काटा है, जा तू अब मेंढ़कों की सवारी बनेगा, इसीलिए मैं यहां पर चुपचाप बैठा हूं ताकि आप लोग मेरी सवारी करें और ब्राह्मण का शाप भी पूरा हो जाए।

उस मेंढ़क ने यह बात अपने राजा को सुनाई। मेंढ़क राजा ने अपने सारे मेंढ़कों को इकट्ठा करके कहा, चलो आज हम सब उस सांप की सवारी करेंगे जो हमारा पुराना शत्रु है।

इस प्रकार सब के सब मेंढ़क तालाब से बाहर आ उस सांप की पीठ पर बैठ गए, जिनको पीठ पर जगह न मिली वह वैसे ही उसके पीछे भागने लगे।

सांप उन्हें अपनी पीठ पर लाद तेजी से चलने लगा। पूरा दिन मेंढ़क सांप की सवारी का आनन्द लेते रहे।

दूसरे दिन सांप धीरे-धीरे चलने लगा। उसे धीरे चलते देख मेंढ़क राजा बोला।

"अरे भाई आज तुम इतना धीरे क्यों चल रहे हो?"

"महाराज! मैं क्या करूं मुझे भूख लग रही है।"

"यदि तुम्हें भूख लग रही है तो मेरे छोटे मेंढ़कों को खाकर अपना पेट भर लो।"

इस तरह से सांप को भोजन मिलने लगा, वह रोज ही थोड़े मेंढ़क खा लेता और फिर चलता रहता।

एक दिन रास्ते में उसे एक और काला सांप मिला, उसने जैसे ही मेंढ़कों को सांप की पीठ पर चढ़े देखा तो हैरानी से पूछने लगा।

"अरे भाई! यह क्या, जो लोग हमारे भोजन के काम आते हैं उन्हें आप अपनी पीठ पर बैठाए आ रहे हो?"

वह बोला भाई! देखो मैं बूढ़ा सांप हूं अधिक भाग-दौड़ मुझसे नहीं होती, मैं तो अपनी बुद्धि से ही अपना पेट भर रहा हूं, देखो बहुत से मेंढ़क मैंने खा लिए हैं, जो रह गए हैं वह भी···

मेंढ़कों का राजा फिर भी उसकी चाल को न समझ सका, उसने सांप को तेज चलने के लिए कहा, फिर अब रह ही क्या गया था—वही राजा। काले सांप ने उसे भी अपना भोजन बना लिया।

हे राजा! मैंने भी इसी प्रकार अपनी बुद्धि से इन उल्लुओं का सर्वनाश किया है। जो शक्ति बुद्धि में है वह इंसान में नहीं होती।

कौवा राजा अपने इस साथी की बात सुनकर बहुत ही खुश हुआ। उसने कहा वास्तव में असली शक्ति बुद्धि में है और नीति शास्त्र इसकी जड़ है। नीति शास्त्र से ही लोग शत्रुओं के गढ़ में घुस कर भी उनका नाश कर देते हैं।

आप ठीक कहते हैं महाराज! युद्ध में नीति शास्त्र का ही

विशेष स्थान है। इससे हम बड़े से बड़े शत्रु को भी हरा सकते हैं। अब तो आपको भी भविष्य में ऐसी किसी चाल से बचना होगा जो हमने चली है। हमें यह सब याद रखना चाहिए।

कौरवों की हार।

रावण का मारा जाना।

पांडव वनवास।

यह सब नीति शास्त्र की ही देन है। इन्द्र के मित्र महाराज दशरथ कहां गए! समुद्र तट को बांधने वाले राजा कहां हैं। महाराज वेणु और सूर्य पुत्र मनु कहां हैं। निश्चय ही समय नें इन्हें बलवान बनाया और फिर मृत्यु की गोद में सुला दिया। ऐसे ही बड़े-बड़े अनेक अवतार यहां से चले गए, इस संसार में कुछ अपना नहीं, इस लक्ष्मी को पाकर हमें मानवता को कभी नहीं भूलना चाहिए।



धोखेबाज

सागर के किनारे से थोड़ी दूरी पर एक बड़ा वृक्ष था, जिस पर एक बन्दर रहता था। उस सागर में रहने वाला एक बड़ा मगर एक दिन उस वृक्ष के नीचे बैठा ठंडी-ठंडी हवा का आनन्द ले रहा था, बन्दर ने अपने घर आए मेहमान को देखा तो मित्रता कर ली। बन्दर अपने मित्र के लिए इस वृक्ष पर से ताजा और पकी हुई जामुनें लेकर आया, जिसे खाकर वह मगर बड़ा खुश हुआ।

ऐसे ही इन दोनों में मित्रता बढ़ी। अब तो मगर रोज ही उस बन्दर के पास आता और मीठे-मीठे जामुन खाता, फिर कुछ जामुन अपनी पत्नी के लिए भी ले जाता।

मगर की पत्नी ऐसे मीठे जामुन कभी नहीं खाए थे, वह तो आश्चर्य से पूछने लगी—

"हे प्राणनाथ ! ऐसे मीठे जामुन तुम कहां से लाते हो ?"

"प्रिया ! मेरा एक मित्र बन्दर है, वह ही मुझे रोज यह जामुन लाकर देता है।"

वाह ! जो बन्दर इतने मीठे जामुन लाता है उसका अपना कलेजा कितना मीठा होगा। मुझे तो उसका कलेजा खाने को ला दो जिसे खाकर मैं ऐसी ही मीठी, सुन्दर एवं अमर हो जाऊं।

प्रिया ! ऐसी बात मत कहो, वह तो मेरा भाई बन गया है। फिर हमें फल लाकर देता है। भला कोई ऐसे मित्र को भी मारता है।

मगर की बात सुनकर उसकी पत्नी को क्रोध आ गया। वह बोली।

मैं सब समझ गई। जिसके पास तुम जाते हो वह बन्दर नहीं कोई बन्दरिया है, तुम उससे प्रेम करते हो।

नहीं···नहीं···प्रिया ऐसा मत कहो। मैं झूठ नहीं बोलता, तुम मुझपर विश्वास करो।

नहीं, मुझे तुम्हारी बात पर बिल्कुल विश्वास नहीं। यदि यह सत्य है तो तुम जाकर उसका कलेजा लाओ, नहीं तो याद रखो मैं भूखी रहकर अपनी जान दे दूंगी।

मगर बहुत दुःखी हो गया। वह सोचने लगा कि करूं तो क्या करूं ? अपने मित्र को कैसे मारूं···यह मेरी पत्नी तो पागल हो गई है लेकिन फिर भी···

बेचारा मगर दुःखी होकर बन्दर के पास पहुंचा। बन्दर ने उसे उदास देखकर कहा।

अरे यार ! क्या बात है। आज तुम इतने उदास क्यों हो ? मीठी-मीठी बातें भी नहीं सुना रहे।

मेरे भाई ! तुम्हारी भाभी ने मुझसे कहा कि तुम बड़े पापी हो जो रोज-रोज मित्र के पास जाकर खाते हो ? यह भी नहीं करते कि एक दिन उसे अपने घर पर लाकर खाना खिलाओ— कहा भी है—ब्रह्म हत्या, शराब पीना, चोरी, व्रत भंग और दुष्ट

व्यवहार का प्रायश्चित हो सकता है, पर कृतघ्नता का कोई प्रायश्चित भी नहीं है, सो तुम मेरे प्यारे देवर को घर लेकर ही आना नहीं तो मैं मर जाऊंगी, इसीलिए भाई आज मैं तुम्हारे पास आया हूं।

भैया ! भाभी ने ठीक ही तो कहा है। मगर एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि मैं तुम्हारे उस पानी के अन्दर वाले घर में कैसे आऊंगा, क्यों न तुम भाभी को मेरे पास यहीं पर ही ले आओ।

भाई बन्दर, सागर के अन्दर जो मेरा घर है, वह तो बड़ा ही सुन्दर है। तुम जाने की चिन्ता मत करो, मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर ले जाऊंगा।

बस फिर क्या था, बन्दर मगर की पीठ पर बैठ गया। मगर उसे लेकर तेजी से गहरे पानी में ले जाकर तेजी से चलने लगा, उसे इस तेजी से गहरे पानी में कूदते देखकर बन्दर घबरा गया, उसे ऐसा लग रहा था जैसे खतरा उसके सिर पर मंडरा रहा है। यह भयंकर सागर···

उधर मगर ने देखा कि अब बन्दर उसके वश में है, यह गहरे पानी से निकलकर अब कहीं भी नहीं जा सकता। अब क्यों न इससे सारी बात कह डालूं। तभी उसने कहा—

भाई बन्दर सत्य बात तो यह है कि मैं तुझे धोखे में फंसाकर मारने के लिए लाया हूं, अब तुम अपने भगवान को याद कर लो। तुम्हारा अन्तिम समय आ गया है।

"भैया ! मैंने तुम्हारा और भाभी का क्या बुरा किया है, जो तू मुझे मारने के लिए अपने घर लाया है ?"

बन्दर भैया ! मेरी पत्नी तुम्हारे मीठे हृदय का रस पीना चाहती है, जिसके लिए मैंने ऐसा किया।

बन्दर समझ गया कि अब तो वह इसके जाल में फंस गया है, अब मौत उससे अधिक दूर नहीं। यदि उसने जल्दी ही कोई उपाय न किया तो···

फिर अचानक ही बन्दर की तेज बुद्धि ने काम किया उसने चुटकी बजाते हुए कहा।

वाह भाई मगर ! तुमने क्या बात कह दी। यह बात तो तुम्हें मुझे वहीं पर बतानी चाहिए थी, अब तो सारा मामला बिगड़ गया, सब कुछ बेकार हो गया।

"क्यों भाई ! बेकार क्यों हो गया ?"

इसलिए कि जो मेरा मीठा दिल तुम्हारी पत्नी को चाहिए उसे तो मैं संभाल कर उस जामुन के पेड़ की जड़ के नीचे रखा करता हूं।

यदि यह बात है तो चलो मैं तुम्हें जामुन के पेड़ तक वापस ले चलता हूं। तुम वहां से मुझे दिल निकाल कर दे दो ताकि मेरी पत्नी खुश हो जाए नहीं तो वह मर जाएगी।

"हां···हां···क्यों नहीं। भाई ! आखिर मैं तुम्हारा मित्र हूं, मैं तुम्हारे काम नहीं आऊंगा तो किसके काम आऊंगा, चलो जल्दी जामुन के पेड़ तक···बस···

मगर मोटी बुद्धि का था, वह बन्दर की चाल को न समझा, बस चल पड़ा वापस।

जामुन के पेड़ पर पहुंच बन्दर ऊपर चढ़ गया।

नीचे खड़े मगर ने उससे कहा कि लाओ भाई अब वह दिल निकाल कर दे दो।

बन्दर ऊपर से बोला, ओ पापी ! धोखेबाज, दुष्ट, मूर्ख, भला तू सोच कि कभी किसी के दो दिल भी होते हैं। अब तेरी भलाई इसी में है कि तू यहां से चला जा और फिर कभी भूलकर इधर न आना, याद रख—

जो एक बार दुष्टता के पश्चात् फिर मित्रता करना चाहता है, वह गर्भ धारण करने वाली खच्चरी के समान मृत्यु को प्राप्त होता है।

बन्दर की बात सुन मगर अपनी भूल पर पछताने लगा। वह सोचने लगा अब क्या होगा, मेरी ही मूर्खता के कारण मित्र भी

हाथ से गया और पत्नी भी खुश न हो सकी।

यदि मैं बन्दर को रास्ते में अपने मन की बात न बताता तो अवश्य ही मैं अपनी पत्नी को तो खुश कर ही देता—

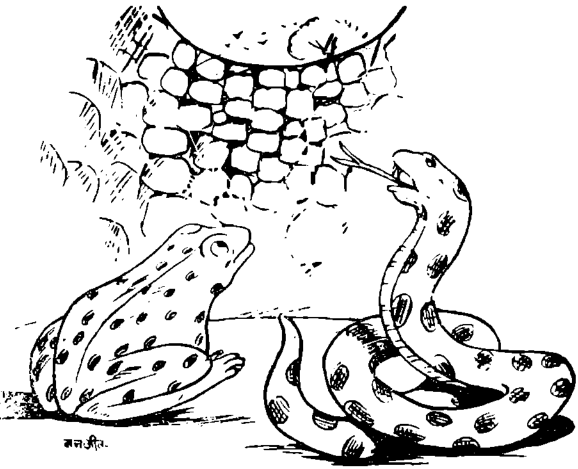
…लेकिन, मगर को एक चाल सूझी उसने बन्दर से कहा—

अरे भाई तुम तो मेरे मजाक को ही सच मान गए, मैं तो वैसे ही कह रहा था, चलो आओ मेरे साथ अब हम घर चलते हैं।

ओ दुष्ट! अब तू यहां से चला जा, कहा गया है कि भूखा क्या पाप नहीं करता, मेरे भाई अब तुम प्रियदर्शन से कह दे कि गंगादत्त कुएं पर नहीं आएगा।

"इसका क्या मतलब है?" मगर ने पूछा।

लो सुनो—मैं तुम्हें इसका मतलब बताता हूं।



पापी मित्र

किसी कुएं में गंगादत्त नाम का मेंढ़क राजा रहता था। एक बार वह अपने दामादों से बड़ा परेशान था यहां तक कि उसे एक दिन इनके कारण उसे अपने घर से बेघर होना पड़ा। घर छोड़ने के पश्चात् उसने सोचा कि अब मैं इनसे बदला कैसे लूं।

इतने में उसने बिल में घुसते हुए सांप को देखा, उसे देखकर उसने सोचा कि क्यों न इस सांप को कुएं में ले जाकर उन दामादों को समाप्त कर डालूं इसी के लिए कहा है—

अपने काम के सिद्धि के लिए बलवान शत्रु को उससे भी बलवान शत्रु से भिड़वा दें। जैसे कांटे को कांटे से निकाला जाता है। यही सोचकर उसने बिल के पास जाकर कहा, प्रियदर्शन आइए···आइए।

सांप ने मेंढ़क को देखकर कहा, यह तो मेरी जाति का ही है

नहीं और किसी से मैं मिलता नहीं, क्योंकि कहा गया है—जिसके कुल का कोई पता न हो उससे मित्रता न करो। यही सोच सांप ने कहा—

भाई आप कौन हो ?

भाई ! मैं गंगादत्त नाम का मेंढ़क हूं जो आपसे मित्रता करने के लिए यहां आया हूं।

भाई ! यह बात मानने योग्य नहीं है। भला आग और पानी का भी कभी मेल हो सकता है ?

आप ठीक कहते हो नाग देवता ! इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारी और आपकी पुरानी दुश्मनी चली आ रही है। मगर मैं भी मजबूर होकर आपके पास मदद के लिए आया हूं।

"क्या मजबूरी है आपकी ?"

भाई मुझे मेरे ही दामादों ने मिलकर इतना तंग किया कि मुझे सब कुछ छोड़कर भागना पड़ा।

"तुम रहते कहां हो ?"

मैं पत्थरों के कुएं में रहता हूं।

लेकिन मैं तो वहां तक नहीं जा सकता, क्योंकि हमारे पांव नहीं होते। यदि किसी तरह मैं पहुंच भी गया तो वहां पर ऐसा कोई स्थान नहीं जहां पर बैठकर मैं आपके दामादों को खा सकूं।

आप वहां जाने की चिन्ता न करें, मैं किसी-न-किसी भांति आपको वहां पर पहुंचा दूंगा। वहां पर खोखड़ा है वहां पर बैठ-कर उन्हें खा सकोगे।

सांप ने सोचा कि मैं बूढ़ा तो हो ही चुका हूं, मेरे को अब शिकार भी कम ही मिलता है, क्यों न चलकर उन मेंढ़कों को ही खाकर अपना पेट भर लूं। यही सोचकर उसने कहा कि चलो भाई मैं तुम्हारी मदद के लिए चलता हूं।

चलो नाग देवता, मैं तुम्हें बड़े आराम से ले चलता हूं पर इस बात का ध्यान रखना कि मेरे साथियों की रक्षा करना जिन लोगों को मैं बोलूं उन्हीं को खाना।

हां भाई, अब हम दोनों मित्र बन गए हैं। मैं तो अब केवल आपके कहने पर ही सारा काम करूंगा।

फिर दोनों मित्र रहट की बाल्टी में बैठ कुएं तक पहुंच गए, कुएं में एक खोखड़ा था वहीं पर मेंढ़क ने सांप को बैठाकर अपने दुश्मनों की ओर इशारा कर दिया था।

सांप उन मेंढ़कों को एक-एक करके खाने लगा था। धीरे-धीरे सारे शत्रुओं को सांप ने खा लिया, जब और कोई शत्र बाकी न रहा तो सांप ने मेंढ़क से कहा—

अरे भाई तुम्हारे शत्रु तो सबके सब मैंने खा लिए, अब यह बताओ कि मेरी भूख का क्या इलाज है।

ठीक है नाग महाराज! अब आप बड़े आराम से यहां से जा सकते हैं।

सांप ने क्रोध से कहा, अब मैं कहां जाऊं? मेरे तो बिल पर भी किसी और ने अधिकार जमा लिया होगा। अब तो तुम अपने परिवार के लोगों में से ही मेरे खाने का प्रबन्ध करो, नहीं तो मैं सबको ही खा जाऊंगा।

मेंढ़क बेचारा तो फंस गया और अपनी भूल पर पछताने लगा, वह सोच रहा था कि काश मैं इस सांप को यहां न लाता, ठीक कहा है—जो अपने से बलवान शत्रु से मित्रता करता है, वह स्वयं ही जहर खाता है। इससे बचने का तो एक ही रास्ता है कि इसे एक-एक मेंढ़क रोज दिया करूं।

इस प्रकार वह खूनी सांप हर रोज एक मेंढ़क खाने लगा, एक दिन सांप ने बाकी मेंढ़कों को खाने के पश्चात् गंगादत्त के पुत्र को भी खा डाला, इस बात से गंगादत्त बहुत दुःखी हो गया और रोने लगा, तब उसकी पत्नी ने कहा—

अब क्यों रो रहे हो मूर्ख! तुमने तो अपनी जाति को ही समाप्त करवा डाला, दुःख के समय जाति के लोग ही काम आते हैं। इसलिए यहां से भाग निकलो—

लेकिन गंगादत्त वहां से भागा नहीं और उसका मित्र धीरे-

धीरे सारे परिवार को भी खा गया। अन्त में वह गंगादत्त से कहने लगा—

देखो ! तुम ही मुझे यहां पर लाए हो, अब तुम ही मेरे भोजन का प्रबन्ध करो।

तभी मेंढ़क राजा को एक चाल सूझी और वह सांप से बोला।

नागराज ! मैं जानता हूं कि तुम भूखे हो, इसलिए मैं अभी जाकर दूसरे कुएं से मेंढ़कों को फंसाकर यहां पर लाता हूं बस आप उन्हें खाते रहना।

हां…हां…जाओ…भाई…जाओ…मेरे लिए भोजन का प्रबन्ध करो तुम ही तो अब मेरे सच्चे मित्र हो।

बस यहां से अपनी जान बचा गंगादत्त भाग निकला, सांप उसकी प्रतीक्षा करता रहा, जब कई दिन तक वह न आया तो उसने अपने साथ रहने वाली एक गोह से कहा कि बहन जाओ तुम ही पास वाले कुएं से गंगादत्त को बुला लाओ।

गोह जैसे ही गंगादत्त के पास गई तो वह बोला—

जाओ, उस प्रियदर्शन से कह दो कि अब गंगादत्त तुम्हारे जाल में नहीं फंसेगा, तुम तो पापी हो ! दुष्ट हो—किसी पापी का विश्वास नहीं करना चाहिए।

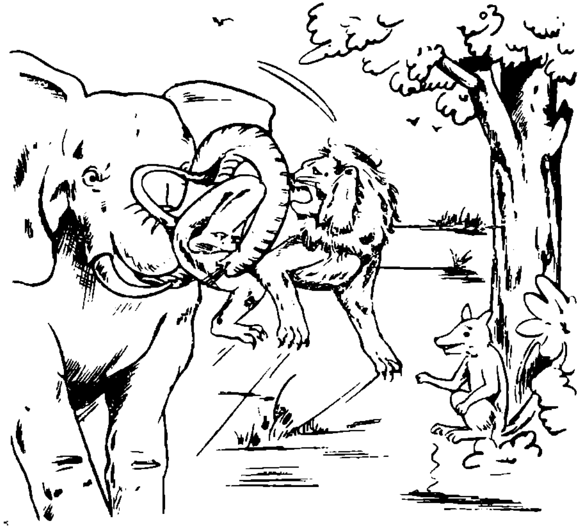
इसलिए पापी मगर, अब मैं भी गंगादत्त की भांति तुम्हारे घर नहीं जाऊंगा।

मगर बोला, यदि तुम मेरे घर नहीं चलोगे तो मैं यहीं पर भूखा मर जाऊंगा।

अरे मैं क्या मूर्ख लम्बकरण हूं जो मुसीबत को देखकर भी अपने को मरवाऊं।

वह कैसे ? मगर बोला।

लो सुनो—



केवल एक बार

किसी जंगल में एक शेर रहता था, उसका एक सेवक गीदड़ जो सदा उसके साथ रहता था। एक बार हाथी के साथ युद्ध करते समय शेर के शरीर पर कितनी ही चोटें आईं जिससे वह एक कदम चलने के काबिल न रहा। वह बेचारा उसी जंगल में पड़ा रहा और भूखा मरने लगा।

वह गीदड़ बेचारा भी भूखा मरने लगा, क्योंकि शेर जख्मी था जिसके कारण वह शिकार नहीं कर सकता था। तभी उस गीदड़ ने शेर से कहा, मालिक अब मैं क्या करूं मैं तो अब भूखा मरने लगा हूं।

अरे मित्र घबराओ मत, जाओ जाकर कोई ऐसा जानवर देखो जिसे मैं जख्मी हालत में भी मार सकूं।

यह सुनकर गीदड़ शिकार की तलाश करते-करते एक गांव में चला गया, वहां पर एक गधा बड़े आराम से छोटी-छोटी घास चर रहा था।

मामाजी मेरा प्रणाम स्वीकार करो। गीदड़ ने उसके पास जाकर कहा—

आओ मित्र ! तुम कहां से आ गए ?

अरे मामा ! मैंने जैसे ही तुम्हें इतना कमजोर होते देखा तो मेरा दिल डूबने लगा। क्या धोबी तुम्हें खाने को नहीं देता।

नहीं भाई !

मामा, जहां पेट भर खाने को न मिले वहां रहने से क्या लाभ ? तुम मेरे साथ जंगल में चलो, वहां पर तुम्हें खाने को खूब मिलेगा।

भाई मुझे जंगल से डर लगता है, क्योंकि हम लोग गांव में रहने वाले सीधे-सादे जानवर हैं।

मामा ! तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो, मैं जो तुम्हारे साथ हूं। मेरे होते हुए तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। मेरे पास पहले भी तीन गधियां रहती हैं जिन्हें धोबी ने खाने को कुछ नहीं दिया था। वास्तव में उन गधियों ने ही मुझे कोई पति लाने को कहा है। आपके जाने से मेरी मामियों का घर भी बस जाएगा।

गधे ने कहा, यदि ऐसी बात है तो चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।

× × ×

गधा उस गीदड़ के साथ उस घायल शेर के पास पहुंच गया, जैसे ही गधे ने शेर को उठकर अपनी ओर आते देखा तो वह यहां से भाग निकला।

जैसे ही गधा यहां से भागा तो गीदड़ ने शेर से कहा—आपने तो मुंह आए शिकार को भी खो दिया, अब क्या होगा।

सेवक वास्तव में मैं उस समय तैयार नहीं था, तभी वह मेरे हाथ से निकल गया।

ठीक है मैं उसे दुबारा फंसाकर लाता हूं लेकिन यह ध्यान रखना अबकी बार वह न निकल जाए।

यह कहकर गीदड़ एक बार वहां से फिर निकल पड़ा, उसने रास्ते में गधे को घास चरते देखा और बोला, "मामा ! तुम वहां से भाग क्यों आए ?"

अरे वाह भांजे ! तूने तो आज मुझे मरवा डाला था। वह तो कोई खूनी शेर लगता था, जो जख्मी पड़ा था।

वाह मामा ! वाह ! बस आपने भी कमाल कर दिया, आपने तो उस गधी को ही शेर समझ लिया, जो आपसे गले मिलने के लिए आ रही थी। वह बेचारी तो आपके प्रेम में बैठी जल रही है और कहती है कि मैं तो उसी गधे से ही शादी करूंगी।

गीदड़ की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर गधा फिर वहां से चल पड़ा। ठीक ही कहा है कि मनुष्य कभी-कभी वह काम भी कर बैठता है जिससे उसे खतरा हो।

गधे के वहां पहुंचते ही शेर ने झट से उसे मार डाला और उसके टुकड़े-टुकड़े करके गीदड़ के आगे डाल दिए, गीदड़ ने उसके कान और हृदय खा लिए।

जैसे ही शेर वापस आया तो उसने गधे के कान और हृदय न देखकर गीदड़ से कहा कि पापी यह तूने क्या किया जो मेरे आने से पहले ही मेरा शिकार खा गया।

मालिक ! आप भूल रहे हैं। इस गधे के पास कान और दिल थे ही नहीं, यदि इसके पास ये चीजें होतीं तो वह वापस ही क्यों आता।

शेर ने गीदड़ की बात पर विश्वास कर लिया था।

सो हे मूर्ख तूने मुझसे छल किया और युधिष्ठिर के समान सत्य बोलने से नष्ट हो गया, सच कहा है जो मूर्ख स्वार्थ का ख्याल न करके सच बोल देता है, वह युधिष्ठिर की तरह अपना काम खराब कर लेता है।

बन्दर ने कहा, सुनो वह कहानी—

वंश से वीरता

किसी देश में युधिष्ठिर नाम का एक कुम्हार रहता था, एक बार वह भागते-भागते बड़े जोर से जो गिरा तो उसके माथे पर बड़ा गहरा घाव हो गया, जैसे ही यह घाव ठीक हुआ तो उसके माथे पर पक्का निशान छोड़ गया ।

कुछ समय के पश्चात् उस देश में भयंकर अकाल पड़ गया । जिसके कारण उस कुम्हार को अपने कई साथियों के साथ किसी दूसरे देश में जाना पड़ा । वहां पर जाकर कुम्हार राजा की सेना में भर्ती हो गया ।

एक दिन राजा ने जैसे ही उसके माथे पर गहरा घाव देखा तो सोचा यह तो कोई बहादुर आदमी है, जिसके माथे पर किसी युद्ध में यह घाव लगा होगा । यही सोचते हुए राजा ने अपनी सेना में विशेष स्थान देकर उस वीर का सम्मान किया ।

एक बार राजा ने सोचा कि अपने वीरों की शक्ति परीक्षा लेने के लिए नकली युद्ध का प्रबन्ध किया जाए ।

बस फिर क्या था इस नकली युद्ध की तैयारियां आरम्भ हो गईं, राजा ने उस कुम्हार वीर को सबसे अलग ले जाकर पूछा ।

वीर ! तुम्हारा नाम क्या है ? यह तुम्हारे माथे पर जो घाव है यह किस युद्ध में आया था ?

सीधा-सादा कुम्हार बेचारा क्या जानता था, उसने झट से सत्य बोल दिया ।

हे महाराज ! मैं तो जाति का कुम्हार हूं, यह चोट तो बचपन में बर्तनों से पांव फिसल कर गिर जाने से आई थी, जिसका निशान मेरे माथे पर पक्का हो गया ।

कुम्हार की बात सुन राजा को बहुत क्रोध आया उसने कुम्हार को धक्का देते हुए कहा।

धोखेबाज जा निकल जा, मेरे दरबार में से मैं तुम्हारे जैसे धोखेबाज की शक्ल नहीं देखना चाहता।

महाराज ! आप यह तो देखें कि मैं कितना बलवान हूं, मुझे नौकरी से न निकालें।

मैं मानता हूं कि तुममें सारे गुण हैं, किन्तु जिस कुल में तुमने जन्म लिया है उस कुल में हाथी नहीं मारे जाते।

क्यों महाराज ! ऐसी भी क्या बात है।

हां ऐसी ही बात है। लो मैं तुम्हें सुनाता हूं—

गीदड़ का बच्चा गीदड़

एक जंगल में शेर का जोड़ा रहता था। शेरनी ने दो बच्चे पैदा किए और दोनों पति-पत्नी मिलकर उन बच्चों को पालने लगे।

एक दिन शाम को जैसे ही शेर शिकार से खाली लौट रहा था। उसे रास्ते में गीदड़ का बच्चा मिला, जिसे उसने मारने की वजाए अपनी पीठ पर बैठाकर ले आया।

आते ही शेरनो ने पूछा, क्या आज मेरे लिए भोजन नहीं लाए ?

नहीं प्रिया ! आज तो मुझे यह गीदड़ का बच्चा मिला है, मैंने इसे जानबूझकर नहीं मारा। मेरा विचार है तुम इसे अपने बच्चों के साथ ही पाल लो।

शेरनी ने अपने पति की बात मान ली और उस गीदड़ के बच्चे को भी अपने बच्चों के साथ मिलाकर अपना दूध पिलाकर पालने लगी। इस प्रकार यह तीनों बच्चे एक साथ इकट्ठे रहने लगे इनमें जाति भेद की कोई बात नहीं थी।

एक दिन उस जंगल में घूमता हुआ हाथी आ गया। उसहाथी को देखकर शेर के दोनों बेटे उस हाथी की ओर हमला करने के लिए बढ़े तो झट से गीदड़ पुत्र शेर बच्चे ने उनसे कहा—

अरे, यह तो तुम्हारा शत्रु है। इसके आगे मत जाओ चलो घर भाग चलें।

उस गीदड़ बच्चे की बात सुन उन दोनों का दिल भी टूट गया और उसे भागा देख वे दोनों भी घर की ओर भाग चले। एक गीदड़ ने दो शेरों को भी गीदड़ बना दिया।

इसीलिए राजा लोग अपनी सेना में खानदानी वीर चाहते हैं, घटिया वंश के लोगों को नहीं। सेना में केवल राजपूतों को ही स्थान मिलता है, तुम्हें शायद पता नहीं कि जैसे ही घर पहुंचकर शेर के बच्चे ने उस गीदड़ के बच्चे से क्रोध से कहा कि भाई तुम हाथी को देखकर क्यों भागे थे। तुमने तो आज हमारी जाति के माथे पर कलंक का टीका लगाया है। हम तुम्हें मार कर ही छोड़ेंगे, बुजदिल शेर को जीने का कोई अधिकार नहीं।

यह कहते हुए जैसे ही शेर के बच्चे उस अपने भाई को मारने के लिए दौड़े तो उस बेचारे को तो पसीना आ गया, मौत को सामने देख वह कांपने लगा।

शेरनी ने देखा, यह तो आपस में ही लड़ने-मरने को तैयार हो गए हैं तो उसने बीच में आकर कहा—

बेटा नहीं, इसे मारो मत, यह दोष तो इसका नहीं है, यह तो सारा दोष इसकी जाति का है। वास्तव में यह शेर पुत्र नहीं यह तो गीदड़ पुत्र है जो बचपन में हमें जंगल में पड़ा मिला था, मैंने इसे पाला-पोसा है, मैं सोचती थी शायद यह बड़ा होकर तुम्हारा साथी बन जाएगा, लेकिन नहीं ऐसा नहीं हो सका, इसलिए गीदड़ पुत्र तुम यहां से जल्दी भाग कर अपनी बिरादरी में शामिल हो जाओ, इसी से तुम बच सकते हो।

गीदड़ पुत्र शेर भाग गया, अब तुम्हारे लिए यही आदेश है

कि यहां से भाग जाओ, नहीं तो राजपूत तुम्हें मार डालेंगे, इस प्रकार कुम्हार वहां से भाग खड़ा हुआ।

अरे पागल तुम पर लानत है, जो तूने स्त्री के लिए ऐसा नीच काम करना चाहा, स्त्री पर कभी विश्बास नहीं करना चाहिए।

अब मैं तुम्हें ऐसी ही कहानी सुनाता हूं।



धोखेबाज का अन्त

किसी नगर में एक पंडित रहता था। उसे अपनी पत्नी से बहुत ही प्यार था। एक बार इन दोनों पति-पत्नी की परिवार वालों के साथ लड़ाई हो गई। जिसके कारण इन्हें अपना घर छोड़कर दूसरे शहर में जाना पड़ा।

रास्ते में जाते-जाते उसकी पत्नी ने कहा—"पतिदेव मुझे पानी की प्यास सता रही है कहीं से पानी लाओ।"

पत्नी की बात सुन वह पंडित पानी लाने के लिए निकल गया।

जैसे ही वह पानी लेकर आया तो वह क्या देखता है उसकी पत्नी मरी पड़ी है। उसे देखते ही वह जोर-जोर से रोने लगा।

उसे रोते देख ऊपर से आवाज आई।

"हे पंडित ! यदि तुम इसे अपनी आधी आयु दे दो तो यह बच सकती है।"

उस आवाज को सुनते ही पंडित ने सच्चे दिल से तीन बार कहा।

"हे भगवान ! मैं अपनी खुशी से इसे अपनी आधी आयु देता हूं।"

सच्चे दिल से की हुई प्रार्थना स्वीकार हो गई। उसी समय उसकी पत्नी जीवित हो गई। गिर दोनों ने मिलकरपानी पिया कुछ जंगली फल खाए, इसके पश्चात् चल पड़े।

थोड़ी दूर जाने के पश्चात् वे एक बहुत बड़े बाग में जाकर विश्राम करने लगे। फिर पत्नी ने कहा—मुझे बड़े जोर की भूख लग रही है। अपनी पत्नी की बात सुन पंडित उसी समय भोजन लेने के लिए चल पड़ा।

पंडित के जाने के पश्चात् वहां पर एक लंगड़ा गायक आया उसकी आवाज में इतना जादू था कि पंडिताइन उसे सुनते ही दिल दे बैठी और उसके पास जाकर कहने लगी—

गायक जी ! आपकी आवाज में तो कमाल का जादू है। आपने मेरा मन जीत लिया है। अब तो तुम मेरे तन को भी अपनी बांहों में लेकर मुझे जीवन का सच्चा आनन्द दो, यही मेरी इच्छा है, इसे तुम्हें अवश्य पूरा करना होगा।

लंगड़ा गायक उस औरत की बातों में फंस गया। प्रेम जाल से आज तक कौन बच पाया है। बस दोनों ने खूब आनन्द लिया। इसके पश्चात् स्त्री ने कहा—हे गायक अब आप भी हमारे साथ ही चलोगे।

इसी बीच पंडित भी भोजन लेकर आ गया था।

जैसे ही पति-पत्नी भोजन करने लगे तो पत्नी ने कहा—देखो जी ! यह लंगड़ा गायक है इसका इस दुनिया में कोई नहीं। क्यों न हम इसे भी अपने साथ रख लें। क्योंकि जब आप मुझे छोड़कर चले जाते हो तो मेरा दिल अकेलेपन से बहुत घबराता है।

पंडित पहले से ही उसका गुलाम था। उसने झट से हां कर

दीं ।

इस प्रकार वे तीनों वहां से चल पड़े । अब पंडित की पत्नी दिन-प्रतिदिन उस लंगड़े गायक की ओर खिचती जा रही थी । यहां तक कि उन्हें यह पंडित अपने रास्ते में रोड़ा महसूस होनें लगा ।

एक दिन दोनों ने एक षड्यन्त्र रचा । प्रेम और वासना की आग में अन्धे हो उन्होंने कुएं के पास सोए पंडित को कुएंमें फेंक कर अपना रास्ता साफ कर लिया ।

अब यह चालाक औरत लंगड़े गायक को अपनी पीठ पर उठाए जैसे ही किसी दूसरे देश में पहुंची तो वहां के पहरेदारों नें उसे सन्देह की दृष्टि से देखते हुए पकड़कर अपने राजा के सामनें पेश किया ।

राजा ने उस औरत से पूछा—"यह लंगड़ा कौन है ?"

"यह मेरा पति है महाराज ।" क्योंकि यह बेचारा लंगड़ा है चल फिर नहीं सकता । इसके कारण हमसे लोग घृणा करते थे । मैंने इसी दुःख के मारे अपना देश छोड़ दिया और आपके पास शरण लेने आई हूं ।

राजा उस औरत की बात सुनकर समझ गया कि यह बेचारी बहुत दुःखी है, तभी झट से बोले—आओ मैं तुम्हें रहने के लिए ही गांव इनाम में देता हूं । उनकी कमाई से तुम दोनों मौज मारो । फिर दोनों वहां रहने लगे ।

उधर किसी साधू ने पंडित को कुएं में से निकाल लिया और वह भी उसी देश के उसी गांव में पहुंच गया था । एक दिन उस स्त्री ने अपने पति को देख लिया । डर के मारे उसका बुरा हाल था । लेकिन उसने एक नई चाल चली । वह राजा के पास जाकर बोली—

महाराज ! यह पापी मेरे पीछे लगा है । शायद यह मेरी हत्या करना चाहता है ।

राजा ने उसी समय उसे बुलाया और औरत के कहने पर

फांसी की सजा दे दी। लेकिन फांसी देने से पूर्व उसने इस पंडित की इच्छा क्या है, पूछो।

तभी उस पंडित ने उस पापिन पत्नी की ओर गौर से देखते हुए कहा—

"देखो महाराज! यह औरत किसी समय मेरी पत्नी थी। आज यही मेरी शत्रु बन गई है।"

राजा ने आश्चर्य से पंडित की ओर देखा। जैसे उसकी बात पर विश्वास न आ रहा हो। इसलिए उसने कहा।

"हे पंडित! तुम कोई सबूत दे सकते हो?"

पंडित बोला—"महाराज! इसका सबसे बड़ा सबूत यही है कि चतुर नारी, भगवान का नाम लेकर यह कह दे कि मैंने अपने पति का लिया हुआ आधा जीवन वापस किया।"

सभी लोग इस विचित्र बात को सुन हैरान से उन दोनों की ओर देख रहे थे। राजा ने उस औरत को ऐसा करने का आदेश दिया।

राजा के आदेश का पालन न करना मौत थी। बस वह औरत डर कर कहने लगी—मैंने अपने पति का लिया आधा जीवन वापिस कर दिया। इतना कहते ही वह पापिन औरत मर गई।

राजा ने आश्चर्य से पंडित की ओर देखकर कहा—

यह क्या बात है—?

"फिर पंडित ने उस राजा को बेवफा औरत की सारी कहानी सुना डाली।"

बन्दर ने मगर से कहा—इसलिए मैं कहता हूं कि कभी स्त्री जाति पर विश्वास न करो। जिस मेले में घोड़ा न होने पर भी लोग हिनहिनाने लगे उसी मेले में मैंने अपना सिर मुंडवाया है।

यह क्यों—

लो सुन लो उसकी कहानी—

औरत का जादू

नन्द नाम का एक राजा समुद्री पर्यन्त की धरती पर राज करता था। उसका एक बुद्धिमार मन्त्री था जिसका नाम वररुचि था। राजा और मन्त्री में काफी प्रेम था। दोनो एक-दूसरे की बात पर काफी विश्वास करते थे।

राजा नन्द की महारानी एक दिन उनसे किसी बात पर नाराज हो गई। उस राजा के लाख यत्नों पर भी वह नहीं मानी, उस रात न तो उसने खाना खाया न ही महलों में दीप जले।

रानी को नाराज देखकर राजा का दिल भी बहुत उदास हो गया। अब वह अपनी रानी के पास जाकर बोला—

हे महारानी! देख मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूं, तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकता। तुम जो कहो मैं वही करने के लिए तैयार हूं। बस एक बार तुम हंस दो। तुम्हारी हंसी के साथ ही मेरे उजड़े महलों में बहार आ जाएगी।

महारानी ने राजा की ओर देखकर कहा—क्या आप मेरी इच्छा पूरी करेंगे?

हां···हां···मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूंगा। मैं इस देश का राजा हूं।

ठीक है, आप आज मेरे घोड़े वन जाइए। मुंह में लगाम डालकर मैं तुम्हारी पीठ पर बैठ सवारी करूंगी और तुम घोड़े की भांति ही हिनहिनाते हुए इन महलों का चक्क काटोगे।

राजा ने बिना संकोच के ऐसा ही किया। घोड़ा बनकर रानी को खुश कर दिया।

उधर राजा के मन्त्री की पत्नी भी नाराज हो गई। मन्त्री ने जब उससे पूछा कि तुम क्या चाहती हो।

उसने कहा—यदि तुम मुझसे सच्चा प्यार करते हो तो अपना सिर मुंडवा दो। मन्त्री ने पत्नी के कहने पर अपना सिर मुंडवा दिया। इस प्रकार उसने अपनी स्त्री को भी खुश कर दिया। सुबह जैसे ही मन्त्री जी राजा के पास पहुंचे तो उसका सिर मुंडा देखकर राजा ने पूंछा—आपने किस पर्व में सिर मुंडवाया है—?

मन्त्री ने हंसते हुए कहा—औरतों के कहने पर पुरुष क्या कुछ नहीं करता। मैंने उसी पर्व में सिर मुंडवाया है जिसमें घोड़े को छोड़कर सभी प्राणी हिनहिनाने लगते हैं।

मन्त्री की बात सुनकर राजा को ऐसा लगा जैसे उसकी कोई चोरी पकड़ी गई हो। वह चुपचाप सोचने लगा कि मैं अकेला ही नहीं औरत के लिए सभी पति कुछ-न-कुछ करते ही हैं।

अब तू भी सुन ओ पागल! मगर तू भी उस राजा और मन्त्री की भांति औरत के वश में है। अब तू मुझे मारने पर तुला हुआ है ताकि अपनी औरत को खुश कर सके। अपने ही वाणी के दोष से तेरी यह चाल पकड़ी गई। बाघ के चमड़े से ढका हुआ गधा ऐसी ही भूल किये जाने के कारण जान से मारा गया

"वह कैसे मारा गया?" जरा मैं भी तो सुनूं।

हां-हां तुम जरूर सुनो—

बोलना पाप है

एक धोबी के पास बहुत बढ़िया शक्तिशाली गधा था। कुछ समय बाद वह बेचारा बीमार हुआ तो कुछ कमजोर हो गया। धोबी उसे कमजोर देखकर बहुत दुःखी हुआ। एक दिन धोबी जंगल में जा रहा था तो उसने रास्ते में पड़ी हुई बाघ की लाश देखी। उस बाघ की लाश को देखकर धोबी ने योजना बनाई

कि मैं इसकी खाल उतार कर अपने गधे को पहना दूं, बस फिर गधे को रात को अकेला छोड़ दिया करूंगा। वह बड़े आराम से हर खेत में जाकर चरने लगेगा। लोग उसे बाघ समझकर डर जाया करेंगे। उस गधे को कोई कुछ नहीं कहेगा।

इस प्रकार गधा बाघ का रूप धारण कर बड़े आनन्द से लोगों की फसलें खाने लगा। कुछ ही दिनों में वह मौटा-ताजा हो गया। अब तो उसे देखकर ही लोग डरते थे। जिधर भी वह निकल जाता सभी उसे देखते ही भाग खड़े होते। धोबी को भी लाभ हो गया कि उसे अब अपने गधे पर कुछ भी तो खर्च नहीं करना पड़ता था।

इस प्रकार दोनों आनन्द लेने लगे।

एक दिन उस गधे ने चरते-चरते एक गधे को जो देखा तो लगा अपनी भाषा में हींचू···हींचू···हींचू···करने।

खेतों के रखवालों ने देखा यह तो साला बाघ की खाल में गधा है। यह हमें आज तक पागल बनाकर हमारी फसलें खाता रहा।

बस फिर क्या था, उन किसानों ने उस गधे को लाठियां मार-मारकर वहीं पर मार डाला।

इसीलिए मैं कहता हूं कि अपनी जरा-सी भूल के कारण भी लोग अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। औरत प्रेम में अन्धे होकर अपने आपको भी भूल जाते हैं।

बन्दर की बात सुनकर मगर की आंखें खुल गई थीं। वह अपनी भूल पर पश्चाताप करने लगा था। वह बन्दर से कहने लगा—मित्र! वास्तव में ही मैं तुम्हारा अपराधी हूं। औरत के प्यार में अन्धा होकर मैं सब कुछ भूल गया था। अब तो मैं औरत के प्रेम की ही आग में मरूंगा।

अरे मगर तू तो बिल्कुल मूर्ख है जो ऐसी औरत के लिए मरना चाहता है, जो दुष्ट है, ऐसी औरत के मरने पर तो खुशी मनानी चाहिए। याद रख जो औरत के मन में होता है वह

वाणी के अन्दर भी नहीं होता।

अभी वह दोनों बातें कर रहे थे कि मगर का एक मित्र मगर आया। उसके आते ही मगर से बोला—मित्र! तुम्हारे घर पर किसी दूसरे मगर ने कब्जा लिया है।

यह सूचना पाते ही मगर और भी दुःखी हुआ और रोते हुए कहने लगा —यह तो और भी बुरा हुआ, मित्र भी हाथ से गया, घर पर किसी और ने कब्जा जमा लिया। अब मेरा क्या बनेगा? क्या अब मुझे उस मगर से लड़ाई करनी चाहिए या सन्धि—?

अरे भाई बन्दर अब तुम ही बताओ कि मैं क्या करूं? ठीक है मैंने तुम्हें भी धोखा दिया, लेकिन तुम यह तो जानते हो कि मेरा इस दुनिया में कोई नहीं। अब तुम ही बताओ कि मैं क्या करूं?

देख मगर! मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊंगा। क्योंकि तू मुझे पत्नी के कहने पर जान से मारने लगा था। पत्नी हर एक को ही प्यारी होती है मगर उसके कहने पर मित्रों की जान तो नहीं ली जाती और मूर्ख तू अपनी मूर्खता से ही मरेगा। यह मैंने पहले ही कह दिया था, जो अहंकार के कारण अपने मित्रों की बात नहीं मानता वह घटोष्ट्र की भांति शीघ्र नष्ट हो जाता है।

"वह कैसे नष्ट हुआ था?"

लो सुनो उसकी कहानी।

पागल ऊंट

एक गांव में राकानाम का एक बढ़ई रहता था। वह अपनी सुस्ती के कारण बहुत गरीब था। उसके सारे साथी अमीर हो गए थे। जिन्हें देख-देखकर वह जलता रहा। दुःखी होकर एक दिन वह अपना गांव छोड़ने पर मजबूर हो गया और दूसरे किसी शहर की ओर चल दिया।

रास्ते में उसने एक ऊंटनी देखी जो अपने साथियों से बिछुड़ गई थी। उसने जैसे ही इस बच्चे वाली सुन्दर ऊंटनी को देखा तो बहुत खुश हुआ। उसे पाकर वह फिर अपने घर लौट आया और घर आकर उसने ऊंटनी को बांध दिया और स्वय उसके लिए खाने का चारा लेने के लिए चल पड़ा।

बस इस प्रकार से वह बढ़ई काम पर लग गया। ऊंटनी की सेवा करता, उसके दूध से सारा परिवार आनन्द लेता। धीरे-धीरे ऊंटनी भी मोटी होती गई, उसका बच्चा भी बड़ा होकर ऊंट बनने लगा था। बढ़ई ने खुशी से उस ऊंट के गले में एक घंटा बांध दिया था। जब से इस घर में ऊंटनी आई थी तब से इस बढ़ई के दिन फिर गए थे। कुछ ही दिनों में जब ऊंट का बच्चा ऊंट बन गया था तो बढ़ई बहुत खुश हो गया। अब तो उसे बहुत लाभ होगा।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि क्यों न मैं वन में जाकर ऊंट के बच्चे ले आऊं फिर उन्हें बड़े करके हम बेचेंगे। इससे हम बहुत बन कमा लेंगे। उसकी पत्नी भी खुश हो गई थी। उसे पता था अब हम भी अमीर बनने वाले हैं।

अब बढ़ई अपनी पत्नी से कुछ धन ले और थोड़ा कर्जा बनिये से लेकर ऊंटनी के बच्चे खरीद लाया। इस तरह उसके पास बहुत से ऊंट, ऊंटनिया हो गए। उनकी सेवा के लिए उसने एक नौकर भी रख लिया था। इस तरह बढ़ई उनके व्यापार से अमीर होने लगा था।

ऊंट परिवार रोजाना ही वन में जाकर हरे-हरे पत्ते खाकर अपना पेट भरता था। जो सबसे पहले ऊंट का बच्चा था वह अपने आपको सबसे बड़ा समझते हुए अकड़ में रहता और सबसे अलग जंगल में घूमता रहता। उन सब साथियों ने कहा कि भाई तुम्हारे गले में घंटा बंधा है तुम हमारे साथ ही रहा करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें कोई जंगली जानवर खा जाए? लेकिन वह अपनी ही अकड़ में था। उसने किसी की बात न मानी।

एक दिन जैसे ही यह ऊंटों का झुंड जंगली तालाब में से पानी पीकर निकला तो एक शेर ने अपना दांव मारा। जैसे ही सब ऊंट आगे निकल गए तो घंटे वाला ऊंट बड़े मजे से अकड़ा हुआ उनके पीछे-पीछे चल रहा था। बस फिर क्या था, शेर ने उस अकेले ऊंट को देखते ही उसे झपट लिया। वह अकड़ में आया ऊंट मारा गया। तभी तो कहा गया है कि जो लोग बड़ों की बात नहीं मानते वे सदा धोखा खाते हैं।

यह सुनकर मगर बोला—भाई बन्दर वास्तव में ही तुम बहुत ज्ञानी हो मैं मूर्ख हूं। अब तो मैं तुमसे यही प्रार्थना करूंगा कि मुझे भी कोई ज्ञान दो जिससे मुझ अभागे को भी कोई रास्ता मिल सके।

यदि यह बात है तो जाओ, जाकर उस मगर से युद्ध करो। यदि तुम उस युद्ध में मारे भी गए तो शहीद कहलाओगे, अगर जीत गए तो विजेता कहलाओगे। विद्वान कहते हैं—

शत्रु को झुककर, बलवान को भेद नीति से, नीचे को कुछ देकर और बराबरी वाले को बल से काबू करो।

यह कैसे—?" मैं तुम्हें बताता हूं मित्र, ऐसी ही एक कहानी।

चालाक गीदड़

एक जंगल में गीदड़ रहता था। उसे एक बार कहीं से मरा हुआ हाथी नजर आ गया, वह उसके चारों ओर घूमता रहा किन्तु उसकी सख्त खाल को फाड़ न पाया, उसी समय उधर से कहीं एक शेर घूमता हुआ आ गया, उस गीदड़ ने शेर के आगे सिर झुकाकर कहा, महाराज यह आपका शिकार है, मैं कब से खड़ा इसकी रक्षा कर रहा हूं।

भाई गीदड़! मैं दूसरे का मारा शिकार नहीं खाता, तुमने

सुना नहीं कि वन में रहने वाले भूखे शेर कभी भी घास नहीं खाते। सो मैंने यह हाथी तेरे को ही उपहार के रूप में दिया, शेर की बात सुन गीदड़ बहुत खुश हुआ, जैसे ही शेर वहां से गया तो उसके पश्चात् एक बाघ वहां पर आ पहुंचा, उसे देखकर गीदड़ घबराया और सोचने लगा कि एक दुष्ट से पीछा छुड़वा लिया किन्तु अब इससे कैसे पीछा छूटे ? कुछ क्षणों के पश्चात् उसने रास्ता निकाला।

मामा जी, आप इस ओर कैसे चले आए, यह हाथी तो शेर ने मारकर मुझे इसकी रक्षा के लिए खड़ा किया है, साथ ही उसने मुझसे कहा कि कोई बाघ आए तो उसकी सूचना मुझे देना क्योंकि पिछले दिनों मेरा एक शिकार बाघ उठाकर ले गए थे, अब मैं इन बाघों को तलाश करके मारूंगा।

जैसे ही बाघ ने यह बात सुनी तो वह वहां से भाग खड़ा हुआ, जाते-जाते गीदड़ से बोला, शेर को मेरे आने की खबर मत देना मेरे भांजे।

जैसे ही बाघ वहां से गया तो एक चीता आ गया, गीदड़ ने उसे देखकर सोचा कि चीते के दांत बहुत तेज होते हैं, क्यों न इससे हाथी की चमड़ी कटवा लूं। बस फिर क्या था उसने चीते से कहा भाई, यह हाथी शेर ने मारा है, यदि तुम इसे खाना चाहते हो तो जल्दी से इसे खा लो, मैं शेर के आने का ध्यान रखता हूं जैसे ही मुझे शेर आते दिखाई दिया मैं तुम्हें बता दूंगा, तुम उसी समय भाग जाना, चीते ने उसकी बात मान ली। उसे क्या पता था कि यह गीदड़ उसके साथ चाल खेल रहा है, वह देखते-ही-देखते हाथी की खाल काटने लगा। उधर जैसे ही गीदड़ ने देखा कि हाथी के शरीर से खाल उतर चुकी है, बस उसने शोर मचा दिया। भागो, भागो शेर आया···इस प्रकार चीता भाग खड़ा हुआ।

चीते के भागने के पश्चात् चालाक गीदड़ हंसने लगा और साथ ही बड़े आनन्द से हाथी का मांस खाने लगा।

सो भाई मगर तुम भी इस गीदड़ के काम से राजनीति सीखो

और अपने घर जाकर उस मगर से युद्धकरके उसे भगा दो, डरने से काम नहीं चलता, शत्रु को राजनीति से भगाओ।

क्योंकि गायों में धन की, ब्राह्मणों में तप की, औरतों में चंचलता की और अपनी जाति में भय की संभावना करनी चाहिए, विदेश में कई प्रकार के भोजन मिल जाते हैं, क्योंकि वहां की स्त्रियां उदार होती हैं पर विदेश में एक ही दोष है कि अपनी जाति ही विरुद्ध हो जाती है।

अरे भाई यह कैसे जरा मुझे भी तो बताओ ?

हां···हां···यह भी बताता हूं—

देश-परदेश

किसी गांव में अकाल पड़ा तो वहां के पशु-पक्षी लोग बहुत चिंतित हो गए थे। इस हालत में एक कुत्ता अपना गांव छोड़कर दूसरे गांव की ओर भाग निकला।

दूसरे गांव में जाकर उसे एक ऐसा घर नजर आया। यहां पर औरत अपने घर की रक्षा नहीं करती थी। बस इस अवसर को गनीमत जान वह कुत्ता रोज ही उस घर में घुस जाता और बड़े मजे से खाने खाता रहता।

बढ़िया खाने खाते-खाते वह कुत्ता काफी मोटा हो गया था, लेकिन उस बेचारे के साथ एक नई मुसीबत खड़ी हो गई, वह बेचारा जैसे ही खाना खाकर बाहर निकलता तो उसे दूसरे कुत्ते घेरकर काटने लगते। वह बेचारा बहुत दुःखी हुआ, आखिर उसे तंग आकर वह गांव छोड़कर फिर अपने ही गांव वापस आना पड़ा।

जैसे ही वह परदेश से वापस आया तो दूसरे कुत्तों ने उससे आकर पूछा।

भाई जरा हमें दूसरे देश की बातें तो सुनाओ। आखिर वहां पर आपने क्या देखा—क्या पाया ?

अरे भाई वहां तो अपने ही जाति से लोग मेरे शत्रु बन गए थे उससे तो अपना भूखा देश ही अच्छा था कम-से-कम लोग मारते-काटते तो नहीं थे।

बन्दर की यह बातें सुन मगर बहुत खुश हुआ और अपने घर की ओर चल पड़ा, उसने बन्दर की बताई राजनीति की शक्ति से अपने शत्रु को मार डाला और सुख से अपना जीवन व्यतीत करने लगा।



पागल नौकर

किसी शहर में एक सेठ रहता था। किसी कारणवश उस बेचारे को अपने कारोबार में घाटा पड़ गया और वह गरीब हो गया, गरीब होने का उसे बहुत दु:ख था। इस दु:ख से तंग आकर उसने सोचा कि इस जीवन का उसे क्या लाभ ? इससे तो मर जाना अच्छा है।

यही सोचकर एक रात को वह सोया तो रात को उसे सपने में एक संन्यासी नजर आया; जो उसे कह रहा था, सुनो सेठ तुम मरो मत, मैं तुम्हारे सारे दु:ख दूर करने के लिए कल सुबह तुम्हारे घर पर आऊंगा, तुम मेरे सिर पर डंडा मारना, मैं उसी समय सोने का होऊंगा। संन्यासी की बात सुनकर दु:खी सेठ ने सोचा कि चलो एक बार और देख लेते हैं।

यही सोचकर वह सुबह से ही अपने घर पर बैठ संन्यासी को

प्रतीक्षा करने लगा था। उसका नौकर नाई भी उस समय उसके पास ही बैठा था, थोड़े ही क्षणों के पश्चात् जैसे ही वह संन्यासी सेठ को आता दिखाई दिया तो उसने झट से अपना डंडा उठाकर उसके सिर पर दे मारा।

बस फिर क्या था, देखते-ही-देखते वह सोने का बनकर गिर पड़ा। उसे वहीं से उठाकर खुशी से नाचता सेठ अन्दर ले गया। उसने नाई को इनाम में कुछ रुपये देकर कहा, तुम जाओ लेकिन यह बात बाहर जाकर किसी से मत कहना।

नाई ने अपने घर जाकर सोचा कि जितने भी यह संन्यासी फिर रहे हैं यदि इनके सिर पर डंडा मारा जाए तो यह सोने के बन जाएंगे, सो मैं भी सुबह उठते ही इन सबके सिर पर डंडे मारूंगा और फिर···मैं भी अमीर···

बस फिर क्या था सुबह उठते ही उसने एक बड़ा लठ लिया और चल पड़ा संन्यासियों की खोज में और एक स्थान पर जहां बहुत से भिक्षुक ठहरे हुए थे। उन्हें अपने घर पर आने का निमंत्रण दिया।

जैसे ही वे खाने के लिए घर पर आए तो नाई पहले से ही द्वार पर लठ लेकर बैठा था। यह संन्यासी भिक्षु नाई की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर और सब घरों को छोड़कर पहले इसके यहां आए।

बस फिर क्या था, जैसे ही साधु अन्दर आने लगे, नाई बारी-बारी उनके सिर पर लठ मारता रहा। उनमें से कोई मर गया, कोई गहरे घाव खाए धरती पर तड़पता रहा। यह सूचना राजा की पुलिस तक पहुंच गई। पुलिस ने नाई को बन्दी बना लिया और साथ ही साधुओं की लाशें और घायल साधुओं को लेकर राजा के पास पहुंचे।

राजा ने नाई से पूछा, तूने यह पाप क्यों किया ?

उत्तर में नाई ने सेठ वाली सारी कहानी राजा को सुना डाली, नाई की कहानी सुन राजा ने सेठ को बुलाया और सब

बात पूछी तो सेठ ने अपना सारा सपना राजा को बता दिया। सेठ की बात सुन राजा ने कहा, यह सारा दोष नाई का है, इसे फांसी दे दी जाये। इस प्रकार नाई को फांसी दे दी गई। इसी-लिए कहा है--

जो ठीक से देख जाना और सुना न हो, वह न करना चाहिए, जैसा कि नाई ने किया और मारा गया, ठीक ही कहा है—कोई काम अच्छी प्रकार से देख-भाल और सोच-विचार के बिना नहीं करना चाहिए नहीं तो बाद में पछताना पड़ता है। जैसे नेवले के लिए ब्राह्मणी को पछताना पड़ा।

सेठ ने कहा मुझे भी यह कहानी सुनाओ—

लोभी सदा मरता है

एक गांव में देव शंकर नाम का एक पंडित रहता था, उसके यहां एक बार एक पुत्र ने जन्म लिया, ठीक उसी औरत के साथ ही नेवले ने भी एक बच्चे का जन्म दिया लेकिन वह बेचारी बच्चे को जन्म देते ही मर गई। इस प्रकार वह नेवले का बच्चा भी उसी घर में रहने लगा, किन्तु ब्राह्मणी सदा उस नेवले के बच्चे से अपने को बचाकर रखती थी। उसे डर था कि कहीं यह नेवले का बच्चा मेरे बच्चे को डस न ले ?

एक बार पंडित जी को यह पता चला कि कोई साधू इस गांव में आया है जो निर्धनों को धन देता है, वह जैसे ही जाने के लिए तैयार हुआ तो उसकी पत्नी कुएं पर पानी लेने गई थी, उसने अपने बच्चे की रक्षा के लिए उस नेवले के बच्चे को बैठा दिया और धन लेने चला गया।

इसी बीच बिल में से एक काला सांप निकला, नेवले ने जैसे ही अपने शत्रु को देखा तो उसे यह डर पैदा हो गया कि यह पापी मेरे भाई को डस लेगा।

उस सांप को अपनी ओर आता देख नेवले ने उस पर हमला कर दिया।

बस दोनों में खूब खुलकर युद्ध होने लगा। अन्त में नेवले ने सांप को काट-काटकर उसे बुरी तरह घायल करके मार डाला।

जैसे ही ब्राह्मणी पानी का मटका लेकर आई तो उसने सबसे पहले नेवले के मुंह को देखा तो खून से लथपथ था। वह उसके मुंह पर खून लगा देख समझ बैठी कि इसने जरूर मेरे बेटे का खून पिया हैं।

बस फिर क्या था उस क्रोध से भरी औरत ने पानी मटका ही उस नेवले पर दे मारा। नेवला बेचारा उसी समय धरती पर तड़पने लगा, कुछ क्षणों में वह मर गया।

जैसे ही वह औरत अन्दर गई तो उसने देखा उसका बेटा तो आराम की नींद सो रहा है और काला सांप वहां पर मरा पड़ा है। अपनी भूल का पता चला तो वह जोर-जोर से रोने लगी और छाती पीटने लगी।

इसी बीच पंडित भी धन लेकर आ गया, उसे देखते ही वह औरत बोली, यह सारा पाप आपके कारण हुआ है। आप धन के लोभ में अंधे होकर न लड़के को छोड़कर जाते, न ही यह नेवला मरता।

ऐसे ही लोभी की कहानी सुनो।

सब्र का फल मीठा

किसी शहर में चार ब्राह्मण मित्र रहते थे। वे बेचारे बहुत गरीब थे। वह बेचारे हर रोज सोचते कि हम क्यों गरीब हैं, हमारे साथ के बहुत से लोग अमीर हैं, वे भी हमारे जैसे ही तो इंसान हैं।

धनी बनने के चक्कर में वे चारों के चारों अपने घर से निकल

कर उज्जैन नगरी में पहुंच गए। वहां पर उन्हें एक तपस्वी साधू मिला, उसके चरणों में प्रणाम कर वे चारों बैठ गए। साधू जी ने उनसे पूछा कि तुम लोग यहां क्या करने आए हो ? उन चारों ने साधू जी के चरणों में गिरकर कहा, महाराज हम ब्राह्मण पुत्र हैं किन्तु निर्धन होने के कारण बहुत दुःखी हैं, इसलिए जैसे भी हो हमें अमीर बनने का रास्ता बताओ।

उन चारों लड़कों पर साधू जी को दया आ गई, तभी उन्होंने इन्हें चार बत्तियां देकर कहा कि इन्हें ले जाकर तुम ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जाओ, फिर इन्हें एक-एक करके फेंकना, जहां पर भी बत्ती गिरेगी वहीं पर तुम्हें खजाना मिलेगा।

जैसे ही वे पहाड़ पर चढ़े उनमें से एक ने अपनी बत्ती फेंकी, जहां पर वह बत्ती गिरी तो उस स्थान को खोदने पर बहुत-सा तांबा निकला, उस तांबे को देखकर तीनों बोले—

यह तो बेकार है, इससे हम अमीर नहीं बन सकते, चलो और आगे चलते हैं, लेकिन चौथे मित्र ने उनकी बात न मानते हुए कहा, नहीं मेरे लिए तो यही काफी है अब मैं और आगे नहीं जाऊंगा। उसे वहीं पर छोड़कर वे तीनों आगे चले गए।

कुछ आगे गए तो दूसरे वाले ने अपनी बत्ती फेंकी, उस स्थान को खोदने से चांदी मिल गई, उसने खुशी से कहा, भाई लोगों अब हमें और आगे जाने की जरूरत नहीं, इससे हम अमीर बन जाएंगे। उसकी बात सुन उन दोनों ने कहा, भाई देख पहले तांबा मिला। फिर चांदी अब यदि आगे जाएंगे तो सोना मिलेगा। इसलिए हम दोनों आगे जाते हैं। यह कहकर वे दोनों और आगे बढ़ गए।

जैसे ही वे आगे गए तो तीसरे ने अपनी बत्ती फेंकी, उस स्थान को खोदने पर सोना मिल गया, वह सोने को पाकर अपने साथी से बोला, भाई अब और आगे जाने की जरूरत नहीं अब तो हमें सोना मिल गया है, लेकिन चौथा साथी बोला, भाई हो सकता है आगे हमें हीरे मिल जाएं, पहले तांबा फिर चांदी फिर

सोना, अब तो हीरे मिलेंगे···हीरे—मैं तो अब हीरे लेने जा रहा हूं। तुम बेशक यहीं पर रहो।

यह कहकर वह आगे बढ़ता गया। दूर पहाड़ी पर चढ़ उसने एक ऐसे प्राणी को देखा जिसके सिर पर एक चक्र घूम रहा था और वह बेचारा खून से लथपथ खड़ा था।

उसे देखकर वह उस व्यक्ति के पास जाकर बोला—

"भाई यह क्या है ? तुम्हें क्या हो गया ?"

अभी वह बोल ही रहा था कि एक चक्र उसके सिर पर से हटकर उस लड़के के सिर पर आ गया वह डर और पीड़ा के मारे तड़पते हुए कहने लगा—

यह क्या हो गया भाई। तब वह आदमी बोला, भाई इस खूनी पहाड़ी पर मैं भी धन के लोभ में ऐसी ही बत्ती लेकर आया था। मेरे आने से पहले यह किसी और व्यक्ति को जकड़े बैठा था मैंने उसके पास जाकर अपनी लोभ की कहानी सुनाई तो यह मुझे पकड़ कर बैठ गया अब तुम···

इसी बीच उसके तीनों साथी उसे ढूंढ़ते आएं तो उसे इस प्रकार जकड़े देखकर हैरान रह गए और उसे कहने लगे तू लोभ में आकर ही तो फंसा है, लोभ ही सब दुःखों की जड़ है। ठीक ही कहा है—बुद्धि उत्तम है, विद्या नहीं, क्योंकि बुद्धिहीन ऐसे नष्ट हो जाते हैं जैसे शेर बनाने वाले।

मैं तुम्हें उनकी कहानी सुनाता हूं।

पढ़ा-लिखा पागल

किसी गांव में चार ब्राह्मण पुत्र रहते थे। इनमें से तीन तो शास्त्रों के विद्वान थे, किन्तु उनके पास बुद्धि नहीं थी, चौथा शास्त्रों विद्या के बिना था, किन्तु उसके पास बुद्धि थी। एक बार उन्होंने सोचा कि हम राजा के पास चलकर क्यों न धन कमाएं।

यही सोच वे चारों घर से चल निकले, रास्ते में एक जंगल में पहुंच शास्त्र विद्या जानने वाले तीनों ने कहा कि हमारा साथी शास्त्र विद्या नहीं जानता, इसलिए इसे हम अपना कमाया धन नहीं देंगे, लेकिन उनके बड़े साथी ने कहा, यारों कोई बात नहीं आखिर यह हमारा बचपन का साथी है हम इसे अकेला नहीं समझते। बात समाप्त हुई—एक बार वे फिर चल पड़े—

चलते-चलते रास्ते में उन्हें शेर की हड्डियां मिलीं। इन हड्डियों को पाकर चारों ने सोचा हमें अपनी शास्त्र विद्या की शक्ति की परीक्षा लेनी चाहिए, यदि हमारे पास सच्ची विद्या है तो इन हड्डियों को इकट्ठा करके हमें शेर बना देना चाहिए।

बस फिर क्या था।

एक ने उन हड्डियों को इकट्ठा करके जोड़ दिया।

दूसरे ने उन पर चमड़ा लगाया।

तीसरा उसमें जान डालने ही लगा था, तभी जोर से चौथा बोला।

'ठहरो!' पागल मत बनो, क्या तुम्हें नहीं पता कि यह शेर बनने जा रहा है। यह जान पड़ते ही पहले हमें खाएगा।

तभी तीसरा बोला, तुम तो अज्ञानी हो, तुम्हें क्या पता शास्त्र विद्या में कितनी शक्ति है। हम तो अपनी शक्ति दिखा-कर ही रहेंगे।

चौथा बोला, ठीक है तुम अपनी शक्ति दिखाओ और मैं तो वृक्ष पर चढ़ रहा हूं।

बस जैसे ही उसने उस शेर में जान डाली, भूखा शेर दहाड़ा और देखते-ही-देखते इन तीनों को खा गया, बुद्धिमान वृक्ष पर चढ़ा होने के कारण बच गया। शेर के वहां से चले जाने के पश्चात् वह वृक्ष से उतरा और अपने घर वापस आ गया। तभी तो कहते हैं विद्या से बुद्धि बड़ी होती है।

ऐसे ही एक मूर्ख पंडित की कहानी सुनाता हूं मैं—

बुद्धि ही महान्

एक गांव में चार ब्राह्मण रहते थे, एक बार उन्होंने सोचा कि हमें कहीं पर जाकर शास्त्र विद्या पढ़नी चाहिए, जिससे हम भी ज्ञानी पंडित बन जाएं, यही सोचकर वे चारों कन्नौज शहर की ओर विद्या प्राप्ति के लिए चल पड़े।

काफी समय तक वे गुरु जी की सेवा करते हुए शास्त्र विद्या प्राप्त करते रहे, जब उन्होंने विद्या प्राप्त कर ली तो अपने घर की ओर जाने लगे। उस रास्ते में बड़ा भयंकर जंगल पड़ता था, वहां पर एक धनी मरा देखा। सभी लोग उसे श्मशान भूमि की ओर ले जा रहे थे। श्मशान भूमि के बाहर खड़े हुए गधे को देखकर एक ब्राह्मण ने अपनी पुस्तक खोलकर देखते हुए कहा—राजद्वार और श्मशान में जो खड़ा हो वह भाई है। तभी उसने कहा मित्रों यह गधा तो हमारा भाई है। तभी सब-के-सब उसके गले मिलने लगे, इतने में उन्होंने बड़ी तेजी से जाता एक ऊंट देखा, तो एक ने कहा—इसके बारे में पुस्तक देखकर बताओ।

उसमें लिखा था कि धर्म की गति तेज होती है।

जो हमारा गधा है उसे भी तैयार करना चाहिए।

तभी उन्होंने ने मिलकर गधे को ऊंट के गले में बांध दिया। यह बात किसीने जाकर धोबी से कह दी उस धोबी को गुस्सा आ गया और वह इन मूर्ख पंडितों को मारने के लिए आया।

उसे देखते ही मूर्ख पंडित भागने लगे, थोड़ी दूर जाने पर उन्हें एक नदी मिली। उसमें एक बड़ा पत्ता बहता आ रहा था, उसे देखकर एक बोला, देखो यह पत्ता हमें नदी पार कराने के लिए आ रहा है। उसे देखते ही एक पंडित ने उस पत्ते पर छलांग

लगा दी। दूसरे ने उसके बाल पकड़े, जैसे ही वे दोनों को डूबते देखा तो उन्होंने कहा, सारा धन जाता देखिए तो आधा दीजिए बांट, उन्होंने झट से चौथे पंडित का सिर बालों से काट उसने तीसरे को डूबने से बचा लिया, इस प्रकार वे तीन रह गए और साथ वाले गांव में जा पहुंचे। गांव वालों ने उन्हें अलग-अलग भोजन पर बुलाया, एक के घर में घी और खांड वाली सेंवियां परोसी गईं तो उसने श्लोक पढ़ा, लम्बे सूत वाला आलसी, नष्ट होता है, इसलिए उसने खाना नहीं खाया।

दूसरे पंडित के आगे मोटा रोट खाने को रखा गया, उसे श्लोक याद आया, मोटा और फैला हुआ खाना उम्र कम करता है। वह भी उसे छोड़कर आ गया।

तीसरे ने भी खाना नहीं खाया।

इस प्रकार यह तीनों पंडित श्लोकों के वहम में पड़कर भूखे चले आए, लोग उनकी मूर्खता पर हंस रहे थे।

यह सुनकर चक्रधर ने कहा—अजी यह कोई बात नहीं, दुष्टों द्वारा बुद्धिमान भी नष्ट कर दिए जाते हैं। देवता जिसकी रक्षा करते हैं उन्हें कोई नहीं मार सकता, यदि मौत आ ही जाए तो उसे कोई बचा नहीं सकता। मैं तुम्हें उन दो मच्छों की कहानी सुनाता हुं जो सतबुद्धि और सहस्त्रबुद्धि थे।

हां···हां···जरा जल्दी सुनाओ मित्र—

अहंकार बुरा

एक तालाब में दो मच्छ रहते थे एक मेंढ़क से उनकी दोस्ती हो गई। इस प्रकार वे तीनों तालाब में रहने लगे और अपना दुःख सुख कहकर मन बहलाते रहते। मेंढ़क को यह नहीं पता था कि इन दोनों मच्छों में से एक मन्द बुद्धि और दूसरा अहंकार बुद्धि का है।

एक दिन वे तीनों तालाब के किनारे बैठे बातचीत कर रहे थे कि एक शिकारी हाथ में जाल और सिर पर बहुत-सी मछलियां रखे आया और तालाब की ओर देखकर बोला, यहां तो काफी मछलियां लगती हैं, इन्हें कल आकर पकड़ूंगा।

शिकारी के जाने के पश्चात् तीनों मित्र सोच में पड़ गए। मेंढ़क और तेज बुद्धि मच्छ तो बोले कि हमें यहां से भाग जाना चाहिए, लेकिन अहंकार से भरा मन्द बुद्धि बोला, नहीं हम यहां से भागेंगे नहीं, प्रथम तो वह आएगा नहीं, यदि आ तो गया तो मैं अपनी ताकत और बुद्धि से तुम्हारी रक्षा करूंगा। मंद बुद्धि ने अपने मित्र की बात सुन झट से कहा।

हां...हां मेरा मित्र ठीक कहता है, यह शक्तिशाली भी है और बलवान भी तभी तो इसे अहंकार है, ठीक ही कहा जाता है कि बुद्धिमानों के लिए कोई ऐसा काम नहीं जिसे वह न कर सके। देखो सशस्त्र नन्दों का चाणक्य ने अपनी बुद्धि द्वारा नाश कर दिया। जहां पर रवि की किरणें और वायु नहीं पहुंच सकते वहां पर बुद्धि पहुंचती है। इसलिए हम यहां से भागकर कहीं भी नहीं जाएंगे।

मेंढ़क उन दोनों की बातें सुनकर बोला, मित्रों ! मैं आपकी इस बात से सहमत नहीं, इसलिए मैं आज ही अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर भाग रहा हूं । यह कहकर मेंढ़क वहां से चला गया।

दूसरे दिन सुबह ही शिकारी वहां आया, उसने अपना जाल लगाकर इन दोनों मच्छों को पकड़ लिया । उनका अहंकार और मंद बुद्धि ही इन्हें ले डूबे ।

इसलिए कहा भी गया है कि मित्र की सलाह को नहीं ठुकराना चाहिए । मेरे मना करने पर भी आप विद्या के अहंकार और लोभवश नहीं रुके। ठीक ही कहा है कि हे मामा, मेरे रोकने पर भी आप चुप न रहे । अब गीत के पुरस्कार स्वरूप यह अपूर्व मणी आपने बंधवाया है ।

ब्राह्मणी ने पूछा, यह कैसे ?"

लो सुनो —

बेंवक्त के गीत

एक बेचारा गधा भूखा-प्यासा इधर-उधर घूमा करता था । एक दिन उसकी मित्रता एक गीदड़ से हो गई । गीदड़ के साथ रहकर वह गधा खूब मजे मारता, इस प्रकार वह दिन-रात मोटा होने लगा ।

एक रात वह गीदड़ के साथ खरबूजे के खेतों में खूब माल खा रहा था, खाते-खाते गधे ने कहा, मामा क्या मैं तुम्हें राग सुनाऊं मुझे बहुत अच्छा राग आता है । गीदड़ बोला ओ भांजे हम यहां चोरी करने आए हैं, यह राग गाने का समय नहीं है । कहा भी है कि खांसी वाले आदमी को चोरी नहीं करनी चाहिए । रोगी के जबान का स्वाद छोड़ देना चाहिए, तुम्हारा गाना सुन-

कर खेत के रखवाले हमें पकड़ लेंगे या फिर आकर मारेंगे।

माम ! तुम जंगली होकर गीत का आनन्द नहीं जानते। विद्या तो वह कला है जिसपर देवी-देवता भी मोहित हो जाते हैं।

गीदड़ बोला, ओ भांजे तुम तो गाना नहीं जानते खाली रेंकते हो। बेताल बेस्वर।

गधा क्रोध से बोला, मामा क्या मैं गाना नहीं जानता, अरे सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूर्च्छन, उन्चास ताल, नव रस, छत्तीस राग, चालीस भाव यह कुल १६५ गाने के भेद प्राचीन-काल में भरत मुनि ने वेद के सार रूप कहे हैं। मैं अनजान हूं।

अच्छा भांजे ! अब मैं खेत से बाहर जाकर खेत के रखवाले को देखता हूं अब तुम खूब खुलकर गाना। इतना कह गीदड़ चला गया, गधा अपना राग अलापने लगा। गधे की आवाज सुन खेत का रक्षक भाग आया, उसने लाठियों से गधे की खूब पिटाई की, वह गिर गया…फिर संभलकर वहां से भाग खड़ा हुआ।

गधे को भागते देख गीदड़ बोला, क्यों भांजे ! आया मजा बेवक्त गाने का।

सो आप भी मेरे कहने पर नहीं माने मित्र!

उसकी बात सुन पंडित बोला, जो मित्र की बात नहीं मानता वह मंथर जुलाहे की भांति मृत्यु को प्राप्त होता है।

दूसरा मित्र बोला, वह कैसे ?

सुनो मेरे भाई—

अपनी बुद्धि को बड़ा मत समझो

एक जुलाहा अपने करघे को बनाने के लिए लकड़ियां लेने जंगल में गया तो उसने एक मोटा-सा वृक्ष देखकर उसने अपनी कुल्हाड़ी चलानी आरम्भ कर दी, तभी उस वृक्ष पर से एक प्रेत की आवाज आई।

ऐ मूर्ख, इसे मत काट, इस पर मेरा घर है।

"तेरा घर है तो मैं क्या करूं ?" आखिर मुझे भी तो जाकर अपना करघा नया बनवाना है।" जुलाहा बोला।

वाह...वाह...मैं तेरी बात से बहुत खुश हुआ। चल इसी खुशी में तू कोई वरदान मांग ले, प्रेत ने कहा।

यदि ऐसी बात है तो मैं घर जाकर अपने भाइयों एवं मित्रों से पूछ कर आता हूं।

यह कहकर जुलाहा अपने गांव वापस आ गया, उसे आते ही सबसे पहले एक नाई मिला। उसने उससे पूछा भाई मैं उस प्रेत से क्या माँगूं—तो नाई ने कहा, भैया यदि कुछ मांगना ही है तो उससे राजपाट मांग जिससे तू राजा बन जाए और मैं तेरा मंत्री, इस प्रकार हम दोनों मित्र आनन्द लेंगे।

जुलाहा अपने मित्र की बात सुन खुश हुआ, किन्तु उसनें सोचा जरा अपनी पत्नी से भी पूछ लूं। लेकिन उसके मित्र नाई नें कहा, भाई औरतों की बुद्धि मोटी है, यह बात याद रखना, जहां पर स्त्री सलाहकार होती हों, दंड रहित बालक रहते हों वह घर अवश्य ही नष्ट हो जाता है।

मगर जुलाहे ने अपने मित्र की बात न मानी वह सीधा घर

जाकर अपनी पत्नी से पूछने गला।

प्रिया ! मुझे उस प्रेत ने वरदान देने को कहा है, मेरा मित्र नाई कहता है कि तुम उससे राज्य मांगो अब तुम बताओ कि मैं क्या मांगू ?

मेरे सुहाग ! तुम्हें पता नहीं कि कभी भी छोटी जाति वाले से सलाह नहीं लेनी चाहिए फिर इस राज-पाठ का हमें क्या ज्ञान यदि हमें मिल भी गया तो हम उसे चलाएंगे कैसे ? इसलिए तुम उस प्रेत से कहो कि मुझे दो बाजू और एक सिर और दे दे, जिससे तुम दोनों ओर मुंह करके दुगुना कपड़ा बुन सकोगे इस प्रकार हमारी आमदनी भी दुगुनी हो जाएगी।

जुलाहा पत्नी की बात सुनकर बहुत खुश हुआ। नाई की बात को भूलकर प्रेत के पास जाकर बोला।

हे प्रेत तू मुझे दो बांहें और एक सिर और दे दे।

ठीक है—जाओ तुम्हारी इच्छा पूरी होगी, बस इस आवाज के साथ ही जुलाहे के दो सिर और चार बांहें हो गईं। जुलाहा खुशी-खुशी घर लौट रहा था, तो रास्ते में लोगों ने जैसे ही उसके दो सिर और चार बाजू देखे तो उसे राक्षस समझ ईंटों-पत्थरों से मारना शुरू कर दिया। इस प्रकार वह जुलाहा बेमौत मारा गया, तभी तो मैं कहता हूं कि यदि अपनी बुद्धि नहीं तो दूसरे किसी बुद्धिमान से जाकर सलाह लेने में हर्ज नहीं।

उस कहानी को सुन चक्रधर बोला, भाई यह तो ठीक है, किसी ने ठीक ही कहा है—जो मनुष्य पूरी न होने वाली असंभव चिन्ता करता है, वह सोम शर्मा के पिता की भांति पीला होकर सोता है। लो मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाता हूं—

ख्याली पुलाव

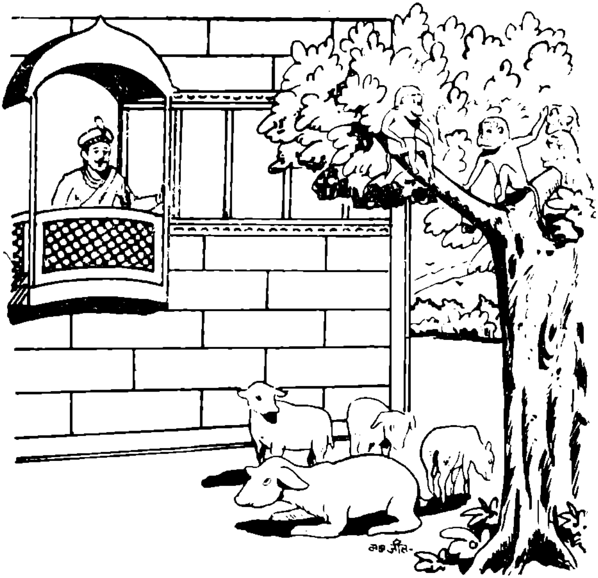
किसी गांव में एक पंडित रहता था। उसने दान का आटा लेकर धीरे-धीरे उसने एक बड़ा मटका भर कर अपने पास रख लिया। वह उस मटके की ओर हर सुबह उठकर सोचता और कहता यदि कभी अकाल पड़ जाए तो इससे थोड़ा धन तो कमाया जा सकता है।

इस आटे के पैसे से मैं दो बकरियां खरीदूंगा, जब बकरियों के बच्चे हो जाएंगे तो उन सबको बेचकर एक गाय खरीद लूंगा गाय के बच्चे होने पर मैं उसे बेचकर भैंस खरीदूंगा, भैंसे बेचकर घोड़ी। फिर घोड़ियों के कई बच्चे हो जाएंगे, उन घोड़े-घोड़ियों को बेचकर मैं एक बड़ा-सा मकान बनाऊँगा, तब मेरी शादी होगी, फिर मेरा एक बेटा होगा जिसका नाम मैं सोम शर्मा रखूंगा—

वह लड़का शरारतें करेगा, किसी दिन वह घुटनों के बल चलता हुआ घोड़ों के पास से मेरे पास आएगा, मैं अपनी पत्नी से कहूंगा कि बालक को पकड़ो, यह घोड़ों के पास जा रहा है, लेकिन पत्नी बेचारी तो उस समय खाना बना रही होगी। इतने में वह बालक बिल्कुल घोड़ों के पांव के पास पहुंच जाएगा, ऐसे में मुझे ही अपनी चारपाई से उठकर भागना होगा, मैं अपने पुत्र को बचाने के लिए उसे जोर से टांग मारूंगा।

बस फिर क्या था पंडित जी ने जोर से अपनी टांग जो घुमाई उस मटके पर दे मारी। बस देखते-देखते मटका टूट गया और सारा आटा धरती पर बिखर गया, कल्पना का संसार हवा में उड़ गया, इसलिए मैं कहता हूं, न आई हुई बात की चिन्ता और न होने वाली बात मत सोचो।

इसीलिए कहा है कि जो लोभ में फंसकर काम करता है और उसके फल को नहीं सोचता वह राजा चन्द्र के समान कष्ट पाता है। लो मैं तुम्हें राजा चन्द्र की कहानी सुनाता हूं—



लालच विनाश की जड़ है

किसी देश में चन्द्र नाम का एक राजा राज करता था। उसका एक रसोइया बुद्धू नाम का था। उसके महल में भेड़ों के बच्चे रहते थे और ऊपर बन्दर रहते थे। भेड़ के बच्चे जब रसोई में घुसकर भोजन को झूठा करते तो बुद्धू उन्हें खूब मारता था। बन्दरों की इस टुकड़ी के साथ राजा चन्द्र के बच्चे खूब खेलते थे।

बन्दरों के सरदार ने सोचा कि इस रसोइये और भेड़ों का झगड़ा एक दिन उनके विनाश का कारण बनेगा, क्योंकि बुद्धू उस भेड़के बच्चे को खूब मारता है। यदि किसी दिन रसोइए ने

जलती लकड़ी से इसको मारा तो यह तो जलेगा ही साथ में पड़ी घोड़ों की घास को भी आग लगेगी जिससे चारों ओर आग फैलेगी, इससे घोड़े भी जलेंगे क्योंकि राजवैद्य ने कहा है कि बंदर की चरबी से घोड़ों के घावअच्छे होते हैं। इसलिएहमारा विनाश होगा, इसलिए बड़ों ने कहा है कि ऐसे अवसर पर उस स्थान को ही छोड़ देना चाहिए जिसमें जान का खतरा हो।

बन्दर सरदार की बात सुनकर दूसरे बन्दरों ने हंसते हुए कहा कि आप बूढ़े हो गए हैं जिसके कारण आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है, तभी तो ऐसी बातें करते हैं, कहा भी है—बुढ़ापे में मुंह दांतों से खाली हो जाता है और राल टपकती रहती है। बालकों और बूढ़ों की बुद्धि काम नहीं देती। हम इस महल के मजेदार भोजन को छोड़कर जंगल में भूखे मरने नहीं जाएंगे।

तुम नहीं जाते तो न जाओ। मैं तो अपनी आंखों के सामने अपनी जाति का नाश नहीं देख सकता। यह कहकर बन्दर सरदार तो वहां से चला गया।

दूसरे ही दिन उस रसोइये ने जैसे ही अधजली लकड़ी से उस भेड़ के बच्चे को मारा तो उसके सारे शरीर में आग लगगई। वह रसोई से बाहर निकलकर घोड़ों के तबेले की ओर भागा, बस वहां पर पड़ी सूखी घास में आग पकड़ ली। यह आग देखते-ही-देखते चारों ओर फैल गई जिससे कुछ घोड़े बुरी तरहझुलसगए कुछ के शरीर जलकर छलनी हो गए। राजवैद्य ने राजा से कहा, देखो यह आग के घाव केवल बन्दरों की चरबी से ठीक हो सकते है।

राजा ने उसी समय सब बन्दरों को मारने के आदेश दे दिए, बस फिर क्या था, कुछ ही क्षणों में सारे के सारे बन्दर मारे जाने लगे।

बानर सरदार को जैसे ही अपने परिवार के सर्वनाश की खबर मिली तो उसे बहुत दुःख हुआ। वह इसका बदला लेने के लिए चल पड़ा, वह सोचरहा था किमैं अकेला हूं राजा सेना का

स्वामी और शक्तिशाली, आखिर मैं इससे बदला लूं भी तो कैसे ?

यही सोचता हुआ वह एक पुराने तालाब पर पहुंचा, वहां पर उसकी मित्रता तालाब के राक्षस से हो गई। उस राक्षस के पास मोतियों का बड़ा हार था, बन्दर ने राक्षस से कहा, मित्र मुझे एक राजा से बदला चुकाना है यदि तू मुझे यह हार दे दे तो मैं उसे लालच में फंसाकर इस तालाब तक ले आऊं उसके यहां आते ही तू उसे खा जाना।

राक्षस ने उसे वह हार दे दिया। उसे पहन कर वह राजा के महल में पहुंचा। राजा ने बन्दर के गले में मोतियों का हार देखा तो उसके मुंह में पानी भर आया। उसने बंदर को प्यार से पूछा कि यह हार कहां से लिया। तो बन्दर झट से बोला।

महाराज, यह हार तो एक पुराने तालाब में रविवार के दिन नहाने से सूर्य देवता की ओर से उपहार के रूप में मिलता है।

राजा खुश होकर बोला, हे बन्दर तुम मुझे और मेरे सारे परिवार को उस तालाब पर ले चल, ताकि हम बहुत से हार ले आएं।

चलिए···चलिए···महाराज···!

राजा ने बन्दर को अपनी गोद में लेकर अपने साथ बैठाया व प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरता रहा, लालच बुरी बला है।

जैसेही वे सब लोग उस तालाब पर पहुंचे, तो बन्दर ने कहा, महाराज ! आप इन सबको नहाने के लिए भेज दो, फिर यही लोग आपके लिए मोतियों के हार ले आएंगे।

राजा स्वयं बाहर बैठ गया। उसका सारा परिवार उस तालाब में नहाने के लिए उतरा, राक्षस पहले से ही उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। बस उन सबको पल-भर में चट कर गया।

राजा ने देखा कि अभी तक उसके सभी लोग तालाब में से नहीं निकले न ही मोतियों के हार मिले हैं। तब वह बन्दर से

पूछने लगा कि यह क्या बात है ?

बन्दर हंसकर ऊंचे वृक्ष पर चढ़ते हुए बोला—

महाराज ! आपके सभी लोगों को राक्षस ने खा लिया है। यदि मैं चाहता तो आपको भी मरवा सकता था, लेकिन मैंने केवल अपना राजा समझकर छोड़ दिया। आपने मेरे सारे परिवार को मारा था। मैंने आज उसका बदला चुका लिया है।

राजा बन्दर की बात सुनकर बहुत क्रोध में आ गया था किन्तु अब क्या कर सकता था। निराश और दुःखी होकर वह वहां से अपने घर की ओर चला गया।

× × ×

इसलिए मैं कहता हूं जो लालच में आकर काम करता है वह सदा नुकसात उठाता है।

इसलिए भाई अब मुझे जाने दो।

चक्रधर बोला, मुझे इस हालत में छोड़कर कहां जा रहे हो ?

स्वर्णसिंह ने कहा, अब इस चक्र से तुम्हें कोई नहीं छुड़वा सकता, मैं तो सोचता हूं यहां से जल्दी जाऊं, कहीं मुझे भी यह चक्र न अपने कब्जे में ले ले। लो मैं तुम्हें एक और कहानी सुनाता हूं—

बुजदिल राक्षस

कश्मीर के राजा रामनाथ की लड़की के महल में एक राक्षस रोजाना ही आकर उसे तंग किया करता था। लड़की उस राक्षस से बहुत दुःखी थी किन्तु उस राक्षस से पीछा छुड़ाने का कोई रास्ता उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

एक बार एक और राक्षस उस लड़की के कमरे में घुसआया और एक कोने में छुपकर खड़ा हो गया। उसी समय वह लड़की अपनी दासी से बातें कर रही थी कि किसी तरह मैं इस राक्षस

से पीछा छुड़वा सकती हूं।

उस राक्षस ने जैसे ही उनके मुंह से यह बात सुनी तो समझ गया कि यहां पर कोई अन्य राक्षस भी आता है। मैं क्यों न छुपकर उसे देखूं कि वह कौन राक्षस है।

यही सोचकर वह घोड़े का रूप धारण कर उन घोड़ों के बीच में छुपकर खड़ा हो उस राक्षस की प्रतीक्षा करने लगा। इसी बीच एक घोड़ा चोर उन घोड़ों के कमरे में आ घुसा। उसने इस राक्षस रूपी मोटे-ताजे घोड़े को देखा तो बहुत खुश हो उस पर सवारी करके ले उड़ा।

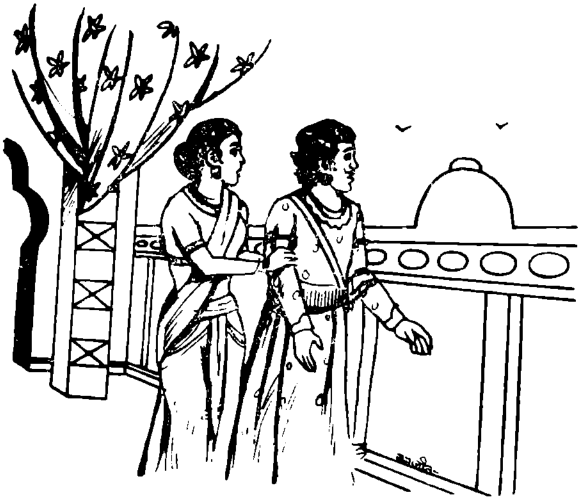
राक्षस ने समझा यह तो वही राक्षस होगा जो मेरी पीठ पर सवार हो गया है। यही सोचकर राक्षस तेज दौड़ने लगा। वह इतना तेज भागा कि चोर बेचारा डर गया कि कहीं मैं ही किसी राक्षस रूपी घोड़े पर तो नहीं बैठ गया। इस तरह वह चोर एक वृक्ष के नीचे से गुजरते हुए उस वृक्ष की टहनियों को पकड़कर उस पर चढ़ गया। तभी दोनों ने ही समझ लिया कि अब तो जान बची। वह राक्षस तेजी से दौड़ा जा रहा था तो उसका एक मित्र बन्दर मिला। जिसने उसे इस तरह डरा देखकर कहा—

"अरे भाई! तुम उस आदमी से डर गए जो तुम्हारा शिकार है। जाओ जाकर उसे खा लो। चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।"

जैसे ही बन्दर और राक्षस उस पेड़ पर पहुंचे तो चोर ने बन्दर की दुम को पकड़ इतने जोर से काटा कि बन्दर चीखें मारता हुआ कहने लगा—चलो भागो, वास्तव में ही यह कोई भयंकर राक्षस है। इस प्रकार वे दोनों वहां से भाग खड़े हुए।

इसलिए भाई मुझे जाने दो। अब तुम अपने लोभ की सजा पाओ। इसी लोभ और अहंकार से रावण भी मारा गया। अन्धा, कुबड़ा और तीन स्तनों वाली राजकन्या, ये तीनों अन्याय से पूर्वजन्म के कर्मानुसार ठीक हो गए।

वह कहानी सुनो—



भाग्य की शक्ति

एक राजा के घर में तीन स्तनों वाली कन्या पैदा हुई तो राजा ने उसे मुसीबत समझकर अपने नौकरों से कहा कि इसे जंगल में फेंक आओ।

मन्त्री ने राजा से कहा महाराज यह तो ठीक है कि तीन स्तनों वाली कन्या भारी होती है लेकिन इसे फेंकने से पहले पंडितों से तो पूछ लेना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में एक राक्षस द्वारा पकड़ा हुआ एक पंडित पूछने से ही बच गया था।

वह कैसे--राजा ने पूछा।

लो मैं आपको बताता हूं—

एक जंगल में पंडित अकेला जा रहा था। एक राक्षस ने उसे शिकर समझकर उसके कंधें पर चढ़ बैठा और कहने लगा कि चलो आगे चलो। पंडित ने घबराकर उसके कोमल चरणों को

देखकर कहा— अरे वाह ! आपके पांव कितने कोमल और सुन्दर हैं ।

हां, मैंने यह प्रण किया है कि मैं गीले पांव धरती पर नहीं रखता।

पंडित अपने बचाव की बात सोचते हुए एक तालाब पर पहुंच गया और बोला—लो महाराज मेरे भोजन करने से पूर्व आप नहा लें ।

राक्षस झट से तालाब में नहाने लगा । पंडित को तो पता था कि यह अपने गीले पांव धरती पर नहीं रखेगा । इसीलिए यहां से भागने का सबसे बढ़िया मौका देख, पंडित वहां से भाग निकला । पंडित पहले ही उस राक्षस का भेद ले चुका था कि वह गीले पांव धरती पर नहीं रखता ।

राजा ने ब्रह्मणों को बुलाकर पूछा—हे ब्राह्मणों मेरे यहां तीन स्तनों वाली कन्या हुई है इसका मैं क्या करूं ?

ब्राह्मणों ने एक मत होकर कहा—महाराज आप इस कन्या के दर्शन न करें । हां यदि कोई उससे शादी करले तो शादी करके उसे अपने देश से निकाल दें ।

ब्रह्मणों की बात सुन राजा ने सारे शहर में घोषणा करवा दी कि जो कोई इस कन्या से शादी करके देश से बाहर ले जाएगा उसे लाखों मोहरें दी जाएंगी ।

पर बहुत सालों तक भी कोई उससे शादी करने के लिए नहीं आया इस बीच लड़की जवान हो गई । उसी शहर में एक अन्धा रहता था । लाठी पकड़कर चलाने के लिए एक कुबड़ा उसका साथी था।

इन दोनों ने मिलकर सोचा कि क्यों न हम ही उस राजा की लड़की से शादी कर लें । इससे इतना धन प्राप्त हो जाएगा कि हमारा सारा जीवन सुखी हो जाएगा । यदि उससे शादी करके हमारी मृत्यु भी हो गई तो हमें इस दु:खी जीवन से छुटकारा मिल जाएगा ।

यही सोच वह अन्धा अपने साथी को लेकर राजा के पास पहुंचा और उसने लड़की से शादी करने को कहा ।

इस प्रकार उस अंधे से उस कन्या की शादी करके उसे दिल भर कर धन दे राजा ने अपने देश से निकाल दिया ।

इस तरह यह अन्धा उसका साथी कुबड़ा उस कन्या को ले किसी दूसरे देश में चले गए । वहां जाकर उन्होंने अपने लिए बढ़िया मकान खरीदा । अन्धा और उसकी स्त्री दोनों घर में पड़े रहते । कुबड़ा बेचारा सारा काम करता ।

कुछ ही समय के पश्चात् उस राजकन्या का कुबड़े से मेल हो गया । तभी कहा है कि यदि आग ठंडी हो जाए, चांद जलाने लगे, सागर का जल मीठा हो जाए, तभी स्त्रियां सती रह सकती हैं ।

एक दिन कुबड़े से राजकन्या ने कहा कि क्यों न इस अन्धे को जहर देकर मार डालें जिससे हम दोनों मजे मारेंगे ।

यह सुन कुबड़ा कहीं से एक मरा हुआ काला सांप उठा लाया और राजकन्या से बोला इसे भूनकर अन्धे को यह कहकर दे देना कि यह मछली का मांस है । क्योंकि यह अंधा मछली का मांस खुश होकर खाता है ।

राजकन्या ने सांप का मांस एक बड़ी पतीले में रखा स्वयं घर के काम करने लगी । उसने अंधे से कहा कि आप थोड़ी देर के लिए उस पतीले के पास बैठकर उसे हिलाते रहें ताकि यह मांस जल न जाए ।

अन्धा उस पतीले के पास जाकर चम्मच से उसे हिलाने लगा जिसकी तेज भाप उस अन्धे की आंखों में लगने लगी । अन्धे ने महसूस किया कि इस भाप से उसकी आंखें ठीक हो रही हैं ।

वह धीरे-धीरे ठीक हो गया ।

जैसे ही उसकी आंखें देखने लगी तो उसने देखा कि इस पतीले में तो मछली के मांस की बजाए सांप का मांस है । वह

समझ गया। इस कुबड़े और राजकन्या ने मिलकर उसे मारने का षड़यन्त्र किया है। अब मैं भी उसे जीवित नहीं छोडूंगा।

यही सोचकर अंधा जो अब देख सकता था, एक कोने में छुपकर खड़ा हो उस कुबड़े का इन्तजार करने लगा।

बस जैसे ही कुबड़ा घर के अन्दर आया तो अन्धे ने उसे दोनों हाथों पर उठा इतनी जोर से उस राजकन्या की छाती पर दे मारा।

कुबड़ा जैसे ही राजकन्या की छाती से जाकर टकराया तो उसका तीसरा स्तन शरीर के अन्दर घुस गया।

कुबड़ा जैसे धड़ाम से फर्श पर गिरा तो उसकी कमर सीधी हो गई।

तभी कहा है कि बड़ों की बात माननी चाहिए। इस विषय में तुम्हें एक पक्षी की कहानी सुनाता हूं।

विनाश क्यों ?

चक्रधर ने कहा ठीक है भाई, यह सब समय की बातें हैं। उस पक्षी के दो मुंह थे उसे एक बार एक बहुत बढ़िया फल मिला जिसे खाकर वह अमर हो सकता है। जैसे ही उसने उस फल को एक मुंह में डाला तो दूसरे मुंह ने कहा कि भाई आधा मेरे मुंह में भी डालो। हम दोनों मिलकर इसे खाएंगे।

पहले मुंह ने कहा कि हम दोनों का पेट तो एक है फिर दो जगह खाने का क्या लाभ है। क्यों न हम इसे अपनी पत्नी को आधा खिला दें।

पहले मुंह ने जाकर उस फल का आधा भाग अपनी पत्नी को दिया जिसे खाकर वह उस मुंह से बहुत प्यार करने लगी। इसे देख दूसरा मुंह अन्दर-ही-अन्दर जलने लगा और

उससे बदला चुकाने की बात सोचने लगा।

एक दिन दूसरे मुंह को एक जहरीला फल मिल गया। उसने पहले मुंह से कहा—देख आज मैं तुम्हारे से बदला चुकाने के लिए इसे खाकर मरता हूं।

ऐसा मत करो, इससे तो हम दोनों ही मारे जाएंगे।

"मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं।"

यह कहकर दूसरे मुंह ने वह जहरीला फल खा लिया जिससे वे दोनों मर गये। तभी तो मैं कहता हूं समय को देखकर ही चले।

× × ×

चक्रधर ने कहा कि यह ठीक है भाई मैं लालच में आकर इस पहाड़ की चोटी पर चढ़ आया और तुम तीनों भाईयों को भी भूल गया। मुझे इस पाप का फल भी मिल रहा है।

अब तुम जाओ मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।

यह सुनकर वह उसे उसी हालत में छोड़कर अपने घर को लौट आया।

ब्राह्मणी ने इस प्रकार उस लोभी लड़के को कथा सुनकर कहा कि लोभ में आकर तुमने मेरी बात नहीं मानी, इसीलिए यह हालत हो गई। इसीलिए मैं कहती हूं कि अधिक लालच नहीं करना चाहिए।

यह सुनकर देव शर्मा ने कहा, जिसके घर खाने को न हो उसका भिक्षा के लिए जाना लोभ नहीं कहा जा सकता। तूने अपने पुत्रवत पाले हुए अपने पुत्र के रक्षक को नकुल की विशेषता को जाने बिना बहुत बुरा काम किया है।

मन्त्रियों ने कहा कि आप अपने घर जाएं। कहा भी है—

स्वादिष्ट भोजन अकेले न करे।

सोये हुए लोगों में अकेले न जागे।

अकेला रास्ता न चले, अकेला विचार न करे।

यात्रा में यदि दूसरा साथी बुजदिल भी है तो भी सहायक

होता है ।

देखो दूसरे साथी करटक ने अपने साथी की जान बचाई ।

वह कैसे—?

वह बोला—मार्ग में एक से दो भले ।

एक से दो भलें

किसी स्थान पर ब्रह्मदत्त नाम का एक पंडित रहता था। एक दिन वह किसी जरूरी काम से जाने लगा तो उसकी मां ने कहा—देखो बेटा ! सफर में अकेले नहीं जाते । यदि तुम्हारे साथ और कोई नहीं तो मैं तुम्हें एक केकड़ा लाकर देती हूं उसे अपने साथ ले जाओ ।

बेटे ने मां की बात मानी और एक बर्तन में डालकर उस केकड़े को अपने साथ ले चल पड़ा ।

देर तक चलते-चलते जब वह थक गया तो एक वृक्ष के नीचे आराम करने के लिए लेट गया । लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई ।

इस बीच उस पेड़ की जड़ से एक काला सांप निकला तो केकड़े ने उस सांप को देखकर सोचा यह सांप मेरे मालिक को ही खाएगा ।

अपने मालिक की जान बचाने के लिए उस केकड़े ने अपना विशेष दांत्र मारा और देखते-ही-देखते उस सांप के टुकड़े-टुकड़े कर दिये ।

ब्रह्मदत्त जैसे ही सोकर उठा तो उसने काले सांप के टुकड़ों को देखकर समझ लिया कि इस केकड़े ने मारा होगा । आज यदि यह केकड़ा मेरे साथ न होता तो मैं अवश्य ही मर जाता । मेरी माँ ने ठीक ही कहा था कि सफर में एक साथी जरूर होना चाहिए ।